श्री महालक्ष्मी पूजा पद्धति

संपादक —डॉ. योगेश चंद्र मिश्रा, जयपुर

प्रकाशक :

श्री पीताम्बरा ज्ञानपीठम् संस्थान

जयपुर

श्री महालक्ष्मी पूजा पद्धति

卐

संपादक
डॉ. योगेश चंद्र मिश्रा
जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक
श्री पीताम्बरा ज्ञानपीठम् संस्थान
जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक :

श्री पीताम्बरा ज्ञानपीठम् संस्थान
४. भ. २६, जवाहरनगर
जयपुर-३०२ ००४

मूल्य : ७५ रुपये

प्रथमावृत्ती : २८ मार्च १९९८
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
२००० प्रतियाँ

मुद्रक :

शिवशक्ति प्रेस प्रा. लि.,
ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९

'भूमिका'

भारत वर्ष में दैविक शक्तियों का पूजा अर्चन विविध कामनाओं की पूर्ति के हेतु अनादि काल से अनवरत चला आ रहा है । विद्या और ज्ञान की प्राप्ति के हेतु जहाँ सरस्वती अपना मूर्धन्य स्थान बनाए हुये है वहीं धन ऐश्वर्य एवं सम्पन्नता को अक्षुण्य रूप से बनाए रखने के लिए भगवती श्री महालक्ष्मी जन समुदाय के प्रत्येक स्तर पर पूर्ण रूप से आच्छादित है । शक्ति उपासना का कलित कलेवर, मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत सप्तशती ग्रन्थ में पूर्णता से विकसित हुआ है । आर्य वाङ्मय के इस शक्ति स्तवन ग्रन्थान्तर्गत तीन चरित्रों को प्रथम, मध्यम, एवम् उत्तर रूप से निम्बन्धित किया है जिनकी अधिष्ठात्री शक्तियां, महाकाली महालक्ष्मी एवं महासरस्वती स्वरूप से वर्णित हैं । महा महिमा शालिनी भगवती महालक्ष्मी के महत्व को हृदयङ्गम् करने के लिए वैकृतिक रहस्य का बत्तीसवाँ एवम तैत्तीसवाँ श्लोक पर्याप्त है ।

"ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥
चरितार्घ तुन जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात् ।
प्रदक्षिणा नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥"

महिषासुर वध के हेतु समस्त देवताओं के अतुल तेज ने नारी रूप में प्रकट होकर विश्व कल्याणार्थ देवताओं की रक्षा की । यह रक्षा करने वाला स्वरूप महालक्ष्मी नाम से संबोधित हुआ जो "अक्षस्त्रकपरशुंगदेषु कुलिशं ..... से ध्यानीय है । वही तीनों लोक में व्याप्त हो रही है उन्होंने ही हजारों भुजाओं से दिशाओं को आच्छादित कर रखा है । यही स्वरूप चतुर्भुजा महालक्ष्मी मूल प्रकृति है जो क्रमशः तमो गुण एव सत्व गुण रूप उपाधि के द्वारा दो रूप और प्रकट करती है जो महाकाली एवं महा सरस्वती नाम से वर्णित है ।

भगवान नारायण के श्वास एवं निःश्वास रूप वेदों मे इसी महाशक्ति को

श्री सूक्त की षोडश ऋचाओं के अन्तर्गत अत्यन्त मार्मिक रूप से ऋषियों ने वर्णन किया है। आगम एवं निगम विविध आध्यात्मिक विचार धाराओं में ऐश्वर्य एवं सम्पन्नता को समान रूप से स्वीकार किया गया है। पूज्य श्री गुरुवर ने लेख-संग्रह नामक ग्रंथ मे "रमापारायण" लेख लिखकर शाक्त समुदाय का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण साधक जगत का कल्याण किया है। दश महाविद्यान्तर्गत भगवान नारायण की शक्ति कमला, ऐश्वर्य का प्रतीक भूत, जगत् प्रसूता रूप में सर्व मान्य है।...

श्री लक्ष्मी भगवान नारायण की अनपायनी शक्ति है, भगवान नारायण का ध्यान यदि श्री और लक्ष्मी के साथ अभीष्ट हो तो भगवती श्री - चिच्छक्ति है एवं लक्ष्मीजी आनन्द शक्ति है जैसा कि (यजुर्वेद में ३१ ।२३)

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ ॥

इन्द्र पुरोक्त 'महालक्ष्मी अष्टक में –

"आद्यन्तरहिते देवि आद्याशक्ति महेश्वरि।
योगजे योग सम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥"

से मालूम होता है भगवान विष्णु आदि पुरुष है श्री लक्ष्मी आद्या शक्ति है।

शक्ति और शक्तिमान का परस्पर अभेद हैं अतएव श्री और विष्णु एक ही है, विष्णु सर्व व्यापक है और उनकी शक्ति जगन्माता श्री भी सर्व व्यापिका है। विष्णु पुराण में कहा गया है – **नित्यैव सा जगन्माता विष्णोः श्री रनपायिनी। यथा सर्वगतो विष्णुस्तथैवेयं द्विजोत्तम ॥**

अवतार रूप में लक्ष्मी जी भगवान की सहायिका होती है श्री राम रूप में वही सीता हैं। भगवती श्री लक्ष्मी स्वर्ण वर्णा परम कान्तिमती स्मितवदना कमलानना कमलदलनयनयुगला एवं अतिशय सुन्दरी है। यह चतुर्भुजा हैं प्रथम कर युगल में युगल कमल लिए हुये है, द्वितीय दाहिने हाथ में अभय और वाम हाथ से वर दे रही है, कमलासन पर विराजमान है किरीट, कुण्डल, केयूर, कंङ्कण, वैजयन्ती, काञ्ची एवं नुपूर आदि आभुषणों से विभूषित है।

स्यन्दन उनका प्रिययान हैं, चार गजराज अपनी सूण्डों से मंत्रों के माध्यम से उनका अभिषेक किया करते है। यह समग्र विश्व प्रपञ्च यथा स्थान उनकी

शक्ति से अवस्थित एवं पोषण प्राप्त करता है, श्री विष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्र में यह तथ्य इस रूप से प्रस्तुत हुआ है ।

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्राः खं दिशो भूर्महोदधिः
वासुदेवस्यं वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥

परम पूज्य श्री पीताम्बरा पीठ पीठाधीश्वर दतिया श्री स्वामीप्रवर ने विश्व कल्याण हेतु यह डिमडिम घोष किया है ।

"जो पराशक्ति समस्त जगत को चैतन्य प्रदान कर के स्वरूप प्रदर्शित करने के योग्य बनाती है, सत् चित् आनन्द, जिसका स्वरूप है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी जिसकी आशा करते है, जो दयामयी है अपनी सभी संतानों पर जिसकी अपार असीम कृपा हो रही है, जिसकी सहायता बिना ब्रह्म भी शव के तुल्य है, उसकी भक्ति मातृऋण से मुक्त होने के लिये सभी संसार को करना चाहिये । ऐसी जगन्माता की भक्ति जो नहीं करता वास्तव में उसका बड़ा भारी दुर्भाग्य है, क्योंकि ऐश्वर्य भुक्ति, मुक्ति ज्ञान निःश्रेयस आदि फलों की दाता वही हैं ।"

विविध प्रकार की पूजा पद्धतियों का अवलोकन कर यत्र-तत्र उपलब्ध शाक्त साहित्य से इस बृहद् लक्ष्मी पूजा पद्धति का संकलन किया गया है, इसकी विशेषता इसके न्यास मण्डल पूजन एवं भगवती महालक्ष्मी के षोडशोपचारों एवं विभिन्न प्रकार के पुष्प पत्रों के अर्चन एवं आवरण पूजन में समन्वित मन्त्रों में प्रस्फुट है, इस अनुष्ठान का विधिवत् यजन एवं पालन साधक को ऐच्छिक ऐश्वर्य प्रदान करता है यह अनुभूत है एवम आशु फलप्रद है । यह विषय अत्यन्त बृहत् एवं कलिमल ग्रस्त जनता जनार्दन के लिये दुरुह है । आधुनिक युग धर्म का ध्यान रखते हुए श्री गुरु वर के पावन चरणों में विनय पूर्वक करुणामयी पुकार है कि इस पद्धति द्वारा यजन कर्त्ताओं को अभीष्ट सिद्धि लाभ प्रदान करे ।

अनुक्रमणिका

ब्रह्मलीन

श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया (म०प्र०)

॥ श्री महालक्ष्मी पूजा पद्धति ॥

एक समय धर्मपुत्र युधिष्ठिर जी ने हाथ जोड़कर भगवान् श्रीकृष्ण से विनय की, हे भगवन् कृपा कर आप हमें कोई ऐसा उपाय बतावें, जिससे हमारा नष्ट हुआ राज्य हमें पुनः प्राप्त हो तथा राज्य लक्ष्मी भी प्राप्त हो जावे ।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले – 'हे राजन् ! जब दैत्यराज बलि राज्य किया करते थे, तब उनके राज्य में सारी प्रजा सुखी थी और मेरा भी वह प्रिय भक्त था । एक बार उसने सौ अश्वमेघ यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की ! उनमें से जब निनाणवे यज्ञ हो चुके एक ही शेष था, तब इन्द्र को अपना सिंहासन छिन जाने का भय हुआ क्योंकि सौ अश्वमेघ यज्ञ करने वाला इन्द्रासन का अधिकारी होता है । इस भय के कारण वह रुद्र आदि देवताओं के पास पहुँचा किन्तु उसका कुछ भी उपाय वे न कर सके । तब सब देवता इन्द्र को साथ लेकर क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान के यहां गये । पुरुषसूक्त आदि वेद मन्त्रों से भगवान की स्तुति की और इन्द्र ने अपना दुःख सुनाया । भगवान बोले – इन्द्र तुम घबराओ नहीं, मैं तुम्हारे इस भय का अन्त कर दूंगा । यह कह कर उन्हें इन्द्रलोक भेजा' ।

स्वयं भगवान् वामन का अवतार धारण करके सौ वां यज्ञ कर रहे राजा बलि के यहां पहुंचे । राजा से उन्होंने तीन पैर पृथ्वी दान में मांगी । दान का संकल्प हाथ में लेकर भगवान् ने एक पैर से सारी पृथ्वी नाप ली । दूसरे पैर से अन्तरिक्ष और तीसरा चरण उसके सिर पर धारण किया । इतना होने पर भी वामनदेव जी ने राजा से वर मांगने को कहा । वर में बलि ने कहा – कार्तिक के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी, चतुर्दशी एवम् अमावस्या तीन दिन इस पृथ्वी पर मेरा राज्य रहे । इन दिनों में सारी जनता दीपोदान, दीपावली दीपपूजा आदि करके उत्सव मनावे । लक्ष्मी का पूजन हो लक्ष्मी का निवास हो ।

इस प्रकार वर मांगने पर विष्णु भगवान ने कहा कि राजन् ! यह वर हमने तुमको दे दिया । इस दिन लक्ष्मी पूजन दीपावली पूजन करने वाले के घर लक्ष्मी का निवास होगा और अन्त में मेरे धाम को प्राप्त होगा । यह कहकर भगवान ने राजा बलि को पाताल लोक का राज्य देकर पाताल में भेजा और इन्द्र का भय दूर

किया। तभी से दीपावली का उत्सव मनाया जाता है, जिसके फलस्वरूप मनाने वाले के घर पर कभी लक्ष्मी का अभाव नहीं होता।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले – हे राजन् ! एक कथा और सुनिये। मणिपुर नामक नगर में एक राजा था। उसकी धर्म पत्नी पतिव्रता एवं धर्म परायण थी। एक दिन उसकी पत्नी अपनी छत पर स्नान के निमित्त अपने गले के सुन्दर वेश कीमती नौलखा हार को उतार वहां रखकर स्नान करने लगी। उसी समय आकाश में मंडराती हुई चील की दृष्टि उस हार पर पड़ी और उसे लेकर उड़ गई। किसी स्थान पर एक गरीब बुढिया की झोपडी पर मरा हुआ सर्प पडा था सो चील की दृष्टि सर्प पर पड़ते ही हार को छप्पर पर छोड़ सर्प को लेकर चम्पत हुई। उधर रानी यह देखकर उदास हो महल में चली गई। थोडी देर के बाद राजा के आने पर उसने हार का वृत्तान्त राजा से कहा। राजा ने उसे विश्वास दिलाया कि तुम्हारा हार अवश्य मिल जायेगा। यह कहकर राजा अपनी सभा में पहुंचा। ढिंढोरा वालों को बुलवा कर उनके द्वारा सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो रानी का हार लाकर देगा वह मन चाहा इनाम पावेगा।

दूसरे दिन वृद्धा हार लेकर राजा के पास पहुंची और राजा को हार दे दिया। राजा ने इनाम मांगने के लिये कहा। उसने इनाम में यह वर मांगा कि आज से आठवें दिन महालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली है। उस दिन नगर भर में कोई दीपावली में महालक्ष्मी पूजन न करे। केवल वह सब मैं ही करूंगी। उसके लिये तेल, बत्ती, दीपक आदि सब मेरे घर पर भिजवा दें।

राजा आश्चर्य से पूछने लगा – इस इनाम से तुम्हें क्या लाभ हुआ ? वृद्धा बोली – राजन् इस दिन लक्ष्मी पूजन एवं दीपावली करने से महालक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। सदा उसके घर में लक्ष्मी स्थिर रहती है। राजा बोला – मुझे भी लक्ष्मीपूजन करना है। वृद्धा ने कहा कि प्रथम मैं करूंगी बाद में आप करना। ऐसा करने पर राजा एवं वृद्धा के घर अतुल धन–सम्पत्ति का निवास हो गया।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले – हे धर्मपुत्र ! श्री महालक्ष्मी के पूजन तथा दीपावली उत्सव से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसलिये हे राजन् ! तुम भी महालक्ष्मी का पूजन करो इससे तुम्हारा खोया हुआ राज्य तुम्हें फिर प्राप्त हो जायेगा।

• • •

दारिद्र्यार्णव-शोषिणी-गजवाहिनी
श्री लक्ष्मी

सर्वजगतमयी देवी सर्वदेवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्॥

श्री गुरु स्मरणम् एवं पूजनम्

अथ ध्यानम् –

गुरुर्ब्रह्मा: गुरु विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:
गुरुरेकं पर ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नम:

अथ पूजनम् – (मानसोपचार)

ॐ गुं गुरुभ्यो नम: लँ पृथिव्यात्मकं गंधं परिकल्पयामि
ॐ गुं गुरुभ्यो नम: हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि
ॐ गुं गुरुभ्यो नम: यं वाय्वात्मकं धूपं आघ्रापयामि
ॐ गुं गुरुभ्यो नम: रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि
ॐ गुं गुरुभ्यो नम: वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि
ॐ गुं गुरुभ्यो नम: सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि

आसन स्थापनम् एवं शोधनम् –

आसन के नीचे जल से अधोमुखी त्रिकोण (ह्रीं) बनाकर मध्य में ह्रीं बीज लिखें तथा नीचे लिखे मंत्रों का उच्चारण करते हुए गन्ध अक्षत एवं पुष्पों से त्रिकोण का पूजन करें –

ॐ कूर्माय नम:
ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नम:
ॐ पृथिव्यै नम:

तत्पश्चात् निम्न लिखित तीन मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुशा के तीन तन्तुओं को आसन के ऊपर छोडें।

ॐ अनन्तासनाय नम:
ॐ विमलासनाय नम:
ॐ पद्मासनाय नम:

तत्पश्चात् आसन का निम्न प्रकार से शोधन करें।

आसन पवित्र करने विनियोगः – जल छोड़े –

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं
छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल के छींटे दे।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः

नीचे लिखे मन्त्र से आसन को प्रणाम करे।

ॐ अनन्तासनाय नमः।
ॐ विमलासनाय नमः।
ॐ पद्मासनाय नमः।
ॐ कूर्मासनाय नमः।
ॐ योगासनाय नमः।
ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै कमलासनाय नमः।
ॐ दुष्टविद्रावण नृसिंहासनाय नमः ॥

हृदिपवित्र करने विनियोग :–

ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। जल छोडे ॥

पवित्र–करण–मन्त्र –

नीचे लिखे मन्त्र से शरीर पर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

शिखा बन्धन –

शिखा बांधकर सभी कर्म करने चाहिये। इसलिये नीचे लिखे मन्त्र से या गायत्री मन्त्र से शिखा बांधे। यदि शिखा न हो तो शिखा के स्थान का स्पर्श करे।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवी शिखामध्ये तेजो वृद्धि कुरुष्व मे ॥

भूतापसारणम् – (सरसों के दाने चारों तरफ बिखेरे)

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभेत् ॥

ये मन्त्र बोलकर बाएं पैर की एडी से तीन बार ताड़न करे ।

दिग्बन्धनम् –

ॐ सर्वभूत – निवारकाय शार्ङ्गाय सशराय
सुदर्शनाय अस्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

मन्त्र बोलते हुए अस्त्रमुद्रा से अर्थात् अपने चारों ओर चुटकी बजाकर अन्त में तर्जनी और मध्यमा-अंगुली से बांये हाथ की हथेली से ताली बजाये तथा अपने चारों ओर अग्नि का परकोटा बना है ऐसी भावना करे । तत्पश्चात् गुं गुरुभ्यो नमः (दाहिनी ओर) गं गणपतये नमः(बाईं ओर) तथा श्री लक्ष्मी देव्यै नमः(अपने सामने) बोलते हुए प्रणाम करे ।

भैरव नमस्कार एवं पूजा के लिये आज्ञा प्राप्ति –

ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय, कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥
श्री भैरवाय नमः ।

उक्त लिखित मंत्र बोलकर श्री बटुकभैरव को प्रणाम करे तथा पूजा कर्म की आज्ञा प्राप्त करे ।

आचमनम् –

ॐ श्रीं आत्मतत्वं शोधयामि नमः ।
ॐ श्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः ।
ॐ श्रीं शिवतत्वं शोधयामि नमः ।
ॐ श्रीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः ।

स्वस्तिवाचन – देव स्मरणम् –

ॐ श्री मन्महा गणाधिपते नमः। ॐ श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। ॐ श्री उमा महेश्वराभ्यां नमः। ॐ श्री वाणी हिरण्यागर्भाभ्यां नमः ॐ श्री शची पुरन्दराभ्यां नमः। ॐ श्री मातापितृ चरण कमलेभ्यो नमः। ॐ श्री इष्ट देवताभ्यो नमः। ॐ श्री कुल देवताभ्यो नमः। ॐ श्री ग्राम देवताभ्यो नमः। ॐ श्री स्थान देवताभ्यो नमः। ॐ श्री सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ श्री एतत्कर्म प्रधान श्री महालक्ष्मी देव्यै नमः। ॐ श्री सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ श्री गुरुवे नमः। ॐ श्री परम गुरुवे नमः ।ॐ श्री परमेष्ठी गुरुवे नमः। ॐ श्री परात्पर गुरुवे नमः। ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। पयः पृथिव्यां। पय औषधीषु पयो। दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्। विष्णोरराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोद् ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। ॐ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठ. शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रौषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्ति-ब्रह्म शान्तिः सर्व ठ. शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधिः।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुवः यद् भद्रँ तन्न आसुव इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः। यथा शमस द्विपदे चतुष्पदे विश्वम् पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरं एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्प्राहु बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञ पति तेन मामव॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिं ठ. हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठ. हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ठ. हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिंभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।

मंगल पाठ –

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः
लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहेच प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्न स्तस्य न जायते॥
विघ्नबल्लि कुठाराय श्री मन्महागणाधिपतये नमः
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।
ॐ यं ब्रह्मवेदान्त विदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गते कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये।
सर्व मंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्या बलं दैव बलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रि युगं स्मरामि।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषे मिन्दीवरश्यामो हृद्यस्थो जनार्दनः।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वरः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये।

ऐं गुरु गणेशाम्बिका पीताम्बरायै चरण कमलेभ्यो नमः

संकल्पं–कुर्यात – जल, अक्षत, पुष्प, दक्षिणा दाहिने हाथ में ले ।

ॐ विष्णु विष्णु र्विष्णुः श्री मद्भगवते । महापुरुषस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टा-विंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम् चरणे जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते अमुक पुण्य क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक स्थाने अमुक मन्दिरे . . . शालिवाहन कृते शके . . . विक्रम सम्वत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा/गुप्ता/दासोऽहं श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं सर्वारिष्ट निवृति पूर्वक सर्वाभीष्ट फल प्राप्त्यर्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभि-वृद्ध्यर्थं । दीर्घायुर्विपुल धन पुत्र पौत्राद्यविच्छिन्न सन्तति वृद्धि स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ–व्यापारे लाभार्थञ्च – शत्रु पराजय प्रमुख चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं तत्र निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं स्वस्ति वाचन, गणपति पूजन, **कलश स्थापन, नवग्रह पंचलोक पाल, दशदिग्पाल**, त्रिदेव, सप्तचिरञ्जीवी, सप्त ऋषिः, वास्तुदेवता, षोडशमातृका, सप्तघृत मातृका, चतुःषष्टि योगिनी, पंचाशत क्षेत्रपाल पूजनम् करिष्ये ।

यह कह कर जल छोड़ दे ।

नोट– यजमान के लिये करे तो यजमान का षठ्यन्त गोत्र तथा नाम उच्चारण करे और अन्त में "करिष्ये" की जगह "करिष्यामि" कहे ।

ब्राह्मण तिलक मन्त्र –

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गो ब्राह्मण हिताय च ॥
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
आचार्य यजमान को निम्न मन्त्र से तिलक करे ।
ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो । वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजमान द्वारा रक्षाबन्धन – अर्थात् मौली बांधे, ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा देकर रक्षा बांधे ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजमान रक्षाबन्धन–मन्त्र – (आचार्य द्वारा रक्षा बन्धन)

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ँ् शतानी काय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आ बध्नामि शत शारदायायुष्मांजर दष्टिर्यथासम् ॥
येन बद्धो बली राजा दान वेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

दीपक स्थापन व पूजन –

घृत का दीपक अपनी बायीं तथा तैल का दाहिनी ओर पूर्व या उत्तर मुख करके चावल आदि पर स्थापित कर प्रज्वलित करके हाथ धोकर निम्न मन्त्रों से पूजन करे ।

स्थापन :–

ॐ पृष्ठो दिवि पृष्ठोऽग्निः पृथिव्यां पृष्ठो विश्वा ओषधीराविवेश ॥
वैश्वानरः सहसा पृष्ठोऽग्निः स नो दिवा सरिषस्पातु नक्तम् ॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्र पादाक्षि शिरोरुवाहवे ॥
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटि युगधारिणे नमः ॥

दीपक पूजन :– निम्न मंत्र बोलते हुये अक्षत छोडे ।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।
सूर्योज्योति ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।
सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दीपक देवतायै नमः आवाहयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं रक्त द्वादश शक्ति युक्ताय दीपनाथाय नमः

दीपस्थ देवताभ्यो नमः (सर्वोपचारार्थे गंधाऽक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

हाथ जोड़कर निम्न प्रार्थना करे ।

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत ।
यावत कर्म समाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ॥
अनेन पूजनेन दीपदेवता प्रीयताम् ॥

घंटा पूजन – आवाहन के लिये घंटा बजाकर घंटा पूजन करे – अक्षत पुष्प छोड़े चन्दन फूल से अलंकृत कर निम्न मंत्र से प्रार्थना करे ।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् ।
घण्टा–नादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत् ॥
घण्टास्थिताय गरूडाय नमः ।

इस मन्त्र से घण्टे में स्थित गरुडदेवता का पूजन करे ।

शंख पूजन – शङ्ख में दो दर्भ या दूब, तुलसी और फूल डालकर "ओम्" कहकर उसे सुवासित जल से भर दे । इस जल को गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दे । निम्न मन्त्र पढ कर शंख में तीर्थों का आवाहन करे । शंख मुद्रा दिखा पूजा करे ।

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च ।
तानि तीर्थानि शङ्खेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्म शासनात् ॥
शंखाय नमः, चन्दनं समर्पयामि ॥

कहकर चन्दन लगाये और शंखाय नमः पुष्पं समर्पयामि कहकर पुष्प चढ़ाये । निम्न मंत्र से शंख को प्रणाम करे । त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे । निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्यः नमोस्तुते ॥

गणपति पूजनम्–ध्यान – सुपारी पर अथवा लाल चिकनी मिट्टी के ढ़ेले पर मौली लपेटकर चावलों से, अष्टदल बनाकर स्थापित कर नीचे लिखा ध्यान करके आवाहन मन्त्रों से अक्षत छोड़े । मूर्ति हो तो पुष्प छोड़े ।

लम्बोदरं परम सुन्दरमेकदन्तं,
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकर निभोज्वलकान्तिकान्तं
विघ्नेश्वरं सकल विघ्नहरं नमामि ॥
गजाननं भूत गणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजम् ॥

आवाहनम् :- अक्षत गणेशजी पर चढावे।

ॐ गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे
प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे
निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥
एह्येहिहेरम्ब महेश पुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजा प्रथमं प्रधानं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धिबुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं आवाहयामि।

प्राण प्रतिष्ठा :-

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः
गणपतिं प्राणा इह प्राणाः।
ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः
गणपतिं जीव इह स्थितः।
ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः
गणपतिं सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक
चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिव्हापाणि पाद
पायूपस्थानि इहा गत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

मनो जूतिर्ज्जुष तामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्य –
ज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञे समिमन्दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामोम् ओम् प्रतिष्ठ ॥
एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन
यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥ सुप्रतिष्ठिताः भवत् ॥
गणपतिं स्थापयामि
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥
आगच्छ वरदे देव दैत्यदर्पनिषूदनः ॥
पूजां गृहाण सुमुख ! नमस्ते शङ्कर प्रियः ॥ प्रतिष्ठापयामि

(आसन के नीचे अक्षत समर्पण करें)

सन्निधापनं – अक्षत छोडें।

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निद्धो भव ॥
"ॐ ऐं ह्लीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय
गणपतये नमः गणपतिं सन्निधापितो भव ॥

आसनं – (अक्षत छोड़े) या आसन देवें।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतिं आसनं समर्पयामि ॥

पाद्यं – (जल से चरण धोवें)

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये
नमः गणपतिं पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यं – (अर्घ्य दें)

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह ।
करुणां कुरु मे देवं गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनं – (आचमन करावे) तीन बार जल छोडे ।

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं आचमनं समर्पयामि ॥

मधुपर्कं – (घृत, दधि, मधु - मधु पर्क)

ॐ यन्मधुनो मधाव्यं परम रूपमन्नाद्यम् ।
तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि
आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्र युग्म समन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भव गणपतिः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं मधुपर्कं समर्पयामि

स्नानं –

गङ्गा–सरस्वती–रेवा पयोष्णी–नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शांति कुरुश्व मे ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं स्नानम् समर्पयामि ॥

दुग्ध स्नानं –

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावकं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं पयः स्नानम् समर्पयामि ॥

दधिस्नानं –

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूँ षि तारिषत् ।
पयस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं दधि स्नानम् समर्पयामि ॥

घृत स्नानं –

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य यो निर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम ।
अनुष्वाधमा वहमादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षिहव्यम् ॥
नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं समर्पयामि ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं घृत स्नानम् समर्पयामि ॥

मधु स्नानं –

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥
मधु नक्तमुतोषसोमधुपत्पार्थिव ँ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥
मधुयान्नो हवनस्पतिर्म्मधुमाँर ऽ अस्तु सूर्यः । माद्ध्वीग्‌र्गावो भवन्तु नः ।
पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं मधु स्नानम् समर्पयामि ॥

शर्करास्नानं –

ॐ अपा ँ् रसमुद्वयस ँ् सूर्ये सन्त ँ् समाहितम् ।
अपा ँ् रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं शर्करा स्नानम् समर्पयमि ॥

पञ्चामृत स्नानं – (दूध, दही, मधु, घृत, शर्करा पञ्चामृत.)

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥
पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु ।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं पञ्चामृत स्नानम् समर्पयामि ॥

गन्धोदकस्नानं – (गंधोदकसे स्नान कराये.)

ॐ अ ँ् शुनाते अ ँ् शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ।
मलयाचलसम्भूत चन्दनेन विनिःसृतम् ।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं गन्धोदक स्नानम् समर्पयामि ॥

शुद्धोदक स्नानं – (शुद्ध जल से स्नान कराये)

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥
गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि ॥

आचमनं – शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि
(आचमन के लिये जल दे त्रि वार)

वस्त्रं – (वस्त्र समर्पित करे)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।
तं धीरा सः कवय उन्नयन्ति स्वाध्य ओ३मनस देवयन्तः
शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं वस्त्रं समर्पयामि ॥
आचमनं – वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिं
आचमनं समर्पयामि – (आचमन के लिये जल दे त्रि वार)
उपवस्त्रं – उपवस्त्र समर्पित करे – (उपवस्त्र उपलब्ध न होने पर मोली तथा अलंकरण के लिये अक्षत अर्पण करे ।)
ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूप संव्ययस्व विभावसो ॥
यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति ।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिं
उपवस्त्रम् (उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रम्) समर्पयामि ॥

यज्ञोपवीतं – (यज्ञोपवीत समर्पित करे)

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवींत मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलम् समर्पयामि त्रि वारं ॥

चन्दनं –

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥
श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं गंधम् समर्पयामि ॥

रक्तचन्दन – (रक्त चन्दन विलेपन के लिये अर्पित करे ।)

ॐ रक्तचन्दन संमिश्रं पारिजात समुद्भवम् ।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध संयुतम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं रक्तचन्दनम् समर्पयामि ॥

कुङ्कुमं (रोली) कुङ्कुम अर्पित करे ।

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामना काम सम्भवम् ॥
कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं कुंकुम् समर्पयामि ॥

सिन्दूरं – (सौभाग्य सूचक, सुखवर्धक, कामपूरक सिन्दूर अर्पित करे ।)

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वनेशूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रति गृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं सिन्दूरम् समर्पयामि ॥

अक्षत – (कुंकुम से रंगे हुये सुन्दर अक्षत चढाये.)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं अक्षतान् समर्पयामि ॥

पुष्पं – पुष्प चढाये ।

पुष्पैर्नानाविधै र्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं पुष्पान् समर्पयामि ॥

पुष्पमाला – मालती इत्यादि पुष्पों की मालाएं समर्पित करे ।

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरूधः पारयिष्णवः ॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रति गृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं पुष्पमालां समर्पयामि ॥

मन्दार पुष्प अर्पणं – कल्पवृक्ष के समान् कामना पूरक प्रिय मन्दार तथा श्वेत अर्क आदि के पुष्प चढाये ।

वन्दारूजनमन्दार मन्दार प्रिय धीयते ।
मन्दारजानि पुष्पाणि श्वेतार्कादिन्मुपेहि भोः ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं मन्दार पुष्प समर्पयामि ॥

शमीपत्रं – कोमल शुभ शमीपत्र चढाये ।

ॐ य इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरि ॥
शमीमिर्यज्ञमाशत ।
त्वत्प्रियाणि सुपुष्पाणि कोमलानि सुमानि वै ।
शमीदलानिहेरम्ब गृहाण गणनायक ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं शमीपत्रं समर्पयामि ॥

बिल्वपत्रं – बिल्वपत्र चढाये ।

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
वृन्तहीनं गणपतिं बिल्व पत्रम् समर्पयामि ॥

दूर्वाङ्कुर – दूर्वाङ्कुर चढायें (अत्यन्त हरे, अमृतमय तथा मंगलप्रद दूर्वांकुर अर्पण करे ।)

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एव नो दूर्वे प्र तनु सहस्त्रेण शतेन च ॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गल प्रदान ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं दूर्वाङ्कुरान समर्पयामि ॥

अबीर– गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य –

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान पुमान् पुमा ँ् सं परि पातु विश्वतः ॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् ।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्री श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं अबीरं नाना परिमल द्रव्याणि समर्पयामि ॥

सुगन्धित द्रव्य – सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित इत्र चढाये ।

दिव्यगन्ध समायुक्तं महापरिमलाद्भुतम् ।
गन्ध द्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परि गृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं सुगन्धित द्रव्यम् समर्पयामि ॥

दशांग धूप अर्पण – वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्धित उत्तम धूप करे ।

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितम सहस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति गृह्यताम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं धूपं आघ्रापयामि ॥

दीप – घृत में डुबोई हुई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्वलित करके दीप अर्पित करे।

ॐ अग्नि ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा
साज्यं च वर्तिसयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं दीपं दर्शयामि ॥ दीप दिखाये और दीप पर अक्षत छोडे।

हस्त प्रक्षालन – ॐ हृषीकेशाय नमः ॥ कहकर हाथ धो लेवे।

नैवेद्य – नैवेद्य में मोदक, गुड एवं खाद्य से बनी सामग्री पर जल से पवित्र कर धेनु मुद्रा दिखाकर देवता के सामने रखे।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रा तथा लोका ँ अकल्पयन् ।।
ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा।
ॐ अपानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥
शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं नैवेद्यं निवेदयामि ॥ (नैवेद्य निवेदित करे)

ऋतुफल – (ऋतुफल अर्पित करे)

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ्हसः॥
इदं फलं मया दैव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भ वेज्जन्मनि जन्मनि॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं ऋतु फलानि समर्पयामि॥
फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि (आचमनीय जल अर्पित करें)

उत्तरापोऽशनं –

उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं जलं समर्पयामि॥

करोद्वर्तन–चन्दन – मलय पर्वत से उत्पन्न चन्दन में कस्तूरी आदि मिलाकर करोद्वर्तन तैयार कर अर्पित करे।

करोद्वर्तन–चन्दन अर्पित करे।

ॐ अ ँ्सुनाते ॐ ँ्शुः पृच्यतां परुषा परूः।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
चंदनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
करोद्वर्तन चन्दनं समर्पयामि॥

ताम्बूलं – (इलायची लौंग–सुपारी के साथ पान का बीड़ा अर्पित करे।)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं मुखवा सार्थम् एला, लवंग पूंगीफल सहितं ताम्बूलं समर्पयामि ॥

नारिकेल–अर्पण – नारियल फल आपके समक्ष रखा है जन्मजन्मान्तर मुझे सफलता प्राप्त हो। (अखण ऋतुफल)

ॐ याः फलिनिर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वठं हसः ॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं नारिकेलफलं समर्पयामि ॥

दक्षिणा – (सुवर्ण हिरण्यगर्भ ब्रह्मा के गर्भ में स्थित अग्नि का बीज है। वह अनन्त पुण्य फलदायक हैं। प्रभु यह आपकी सेवा में अर्पित है इसे ग्रहण कर मुझे शान्ति प्रदान करे।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थ द्रव्यं गणपतिं दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजन–आरती – (कपूर जलाकर आरती करें – आरती के बाद जल दोनों तरफ गिरा दे।)

ॐ इद ँ् हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ् सर्वगण ँ् स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां में करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्त ॥
ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ् रजः पितुरप्रायि धामभिः।

दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आत्वेषं वर्तते नमः ॥
कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वेपश्य मे वरदो भव ॥
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं आरार्तिकं समर्पयामि ॥ (कर्पूरनीराजनं समर्पयामि)
पुष्पाञ्जलि – तरह तरह के पुष्प पुष्पाञ्जली में अर्पित करें)
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रिय पति ँ हवामहे
निधीनां त्वा निधि पति ँ हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं
वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामान् काम
कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं
पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं
समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्ता–
–दापरार्धात् पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एकराडिति
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे।
आवीक्षितस्य काम प्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति।
ॐ विश्वतश्च क्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वोतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।

सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैद्यावाभूमी जनयन देव एकः ॥
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ पुष्पाञ्जली अर्पित करें ।

प्रदक्षिणा – जाने अनजाने में जो पाप हो जाते हैं वे परिक्रमा करते समय पद-पद पर नष्ट होते हैं ।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
तेषा ँ् सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ प्रदक्षिणा करे ॥

विशेष अर्घ्य अर्पण – (जल, गंध, अक्षत, फल–फूल दूर्वा और दक्षिणा ताम्रपात्र में रख, दोनों घुटनों को भूमी पर टिकाकर अर्घ्यपात्र (ताम्र पात्र) को हाथों की अंजलि में लेकर माथे से लगाकर निम्न श्लोक पढकर श्री गणेश जी को अर्घ्य दें ।)

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥
अनेन सफलार्ध्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः
गणपतिं विशेषार्घ्यं समर्पयामि ॥

प्रार्थना –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्ति प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णु रूपायते नमः
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे
भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥
त्वां विघ्न शत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फल प्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिं प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि (साष्टाङ्ग नमस्कार करे)

गणेशपूजने कर्मण्यन्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदामम॥
अनया पूजया सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतिः प्रीयताम् न मम।

ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान् गणेशजी को समर्पित कर दे तथा पुनः नमस्कार करे।

• • •

कलश-स्थापन

कलश पर रोली से स्वस्तिक चिह्न बनाकर कण्ठ में मौली लपेटे और कलश को एक ओर रख ले। कलश स्थापित किये जानेवाली भूमि अथवा पाटे पर कुङ्कुम या रोली से अष्टदलकमल बनाकर निम्न मन्त्र से भूमि का स्पर्श करे –

भूमि स्पर्श –

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धत्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ्ह पृथिवीं मा हि ँ्सीः॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पूजित भूमि पर सप्तधान्य[1] अथवा गेहूँ चावल या जौ[2] रख दे –

धान्यप्रक्षेप –

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवा वः सविता हिरण्यपाणिः
प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुणे त्वा महीनां पयोऽसि॥

इस धान्यपर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर कलश की स्थापना करे –

कलश–स्थापन –

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।

---

१. जौ, धान, तिल, कँगनी, मूंग, चना, साँवा – ये सप्तधान्य कहलाते हैं –

यवधान्यतिलाः कंगुः मुद्गचणकश्यामकाः।
एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

२. नवरात्र आदि में स्थापित कलश को कई दिनों तक सुरक्षित रखना पड़ता है, ऐसे अवसरों पर शुद्ध मिट्टी बिछा दी जाती है और उसपर जौ बो दिया जाता है। नवरात्र में इस उगे हुए जौ को देवताओं पर चढ़ाया जाता है। ब्राह्मण लोग उसे आशीर्वाद के रूप में बाँटा करते हैं।

पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा
पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥

कलश में जल –

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद ॥

(इस मन्त्र से जल भरें ।)

कलश में चन्दन –

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥ (चन्दन छोड़े ।)

कलश में सर्वौषधि[१] –

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनै नु बभ्रूणामह ँ् शतं धामानि सप्त च ॥ (सर्वौषधि छोड़ दे ।)

कलश में दूर्वा –

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ॥ (दूब छोड़े ।)

कलशपर पञ्चपल्लव[२] –

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृताः ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ (पञ्चपल्लव रख दे ।)

कलश में पवित्री –

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण

---

१. मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् ।
सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः ॥
मुरा, जटामाँसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दारू हल्दी, सठी, चम्पक मुस्ता ।

२. न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थः चूतप्लक्षस्तथैव च ।
बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ – ये पञ्चपल्लव है ।

सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ (कुश छोड़ दे ।)

कलश में सप्तमृत्तिका [१] –

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः। (सप्तमृत्तिका छोड़े ।)

कलश में सुपारी –

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ् हसः ॥ (सुपारी छोड़े ।)

कलश में पञ्चरत्न [२] –

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।
(पञ्चरत्न छोड़े ।)

कलश में द्रव्य –

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ (द्रव्य छोड़े ।)

कलशपर वस्त्र –

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ् सं व्ययस्व विभावसो ॥

कलशपर पूर्णपात्र –

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ् शतक्रतोः ॥

---

१. अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमादधदात्।
राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥
घुड़साल, हाथीसाल, बॉबी, नदियों के संगम, तालाब, राजा के द्वार और गोशाला – इन सात स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका कहते है ।

२. कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम्। एतानि पञ्चरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥
सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम – ये पञ्चरत्न कहे जाते हैं ।

चावल से भरे पूर्ण पात्र को कलशपर स्थापित करे और उसपर लाल कपड़ा लपेटे हुए नारियल को निम्न मन्त्र पढ़कर रखे –

कलशपर नारियल –

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ्हसः॥

अब कलश में देवी–देवताओं का आवाहन करना चाहिये। सबसे पहले हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से वरुण का आवाहन करे –

कलश में वरुण का ध्यान और आवाहन –

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे बोध्युरुश ँ्स मान आयुः प्र मोषीः॥
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि, मम पूजां गृहाण। 'ॐ अपां पतये वरुणाय नमः' कहकर अक्षत–पुष्प कलशपर छोड़ दे।

फिर हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी–देवताओं का आवाहन करे –

कलश में देवी–देवताओं का आवाहन –

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

इस तरह जलाधिपति वरुणदेव तथा वेदों, तीर्थों, नदों, नदियों, सागरों, देवियों एवं देवताओं के आवाहन के बाद हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से कलश की प्रतिष्ठा करे ।

प्रतिष्ठा –

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥
कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।
ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ।
– यह कहकर अक्षत–पुष्प कलश के पास छोड़ दे ।

ध्यान – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ।
(पुष्प समर्पित करे ।)

आसन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ।
(अक्षत रखे ।)

पाद्य – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, पादयो पाद्यं समर्पयामि ।
(जल चढ़ाये ।)

अर्घ्य – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।
(जल चढ़ाये ।)

स्नानीय जल – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि ।
(स्नानीय जल चढ़ाये ।)

स्नानाङ्ग आचमन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । (आचमनीय जल छोड़े ।)

पञ्चामृतस्नान – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।
(पञ्चामृत से स्नान कराये।)

गन्धोदकस्नान – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (जल में मलयचन्दन मिलाकर स्नान कराये।)

शुद्धोदक–स्नान – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान कराये।)

आचमन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल छोड़े।)

वस्त्र – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये।)

आचमन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल छोड़े)

यज्ञोपवीत – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
(यज्ञोपवीत चढ़ाये।)

आचमन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल छोड़े।)

उपवस्त्र – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रम् समर्पयामि) (उपवस्त्र चढ़ाये।)

आचमन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल छोड़े।)

चन्दन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, चन्दनं समर्पयामि।
(चन्दन लगाये।)

अक्षत – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
(अक्षत समर्पित करे।)

पुष्प (पुष्पमाला) – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, पुष्पं (पुष्पमालाम्) समर्पयामि। (पुष्प और पुष्पमाला चढ़ाये।)

नानापरिमल द्रव्य – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (विविध परिमल द्रव्य समर्पित करे।)

सुगन्धित द्रव्य – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य, इत्र आदि चढ़ाये।)

धूप – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि।
(धूप आघ्रापित कराये।)

दीप – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये।)

हस्तप्रक्षालन – दीप दिखाकर हाथ धो ले।

नैवेद्य – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, सर्वविधं नैवेद्यं निवेदयामि।
(नैवेद्य निवेदित करे।)

आचमन आदि – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आचमनीयं जलम्, मध्ये पानीयं जलम्, उत्तरापोऽशने, मुखप्रक्षालनार्थे, हस्तप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि।
(आचमनीय एवं पानीय तथा मुख और हस्त प्रक्षालन के लिये जल चढ़ाये।)

करोद्वर्तन – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, करोद्वर्तनं समर्पयामि।
(करोद्वर्तन के लिये गन्ध समर्पित करे।)

ताम्बूल – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।
(सुपारी, इलायची, लौंगसहित पान चढ़ाये।)

दक्षिणा – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य–दक्षिणा चढ़ाये।)

आरती – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आरार्तिकं समर्पयामि।
(आरती करे।)

पुष्पाञ्जलि – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
(पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।)

प्रदक्षिणा – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(प्रदक्षिणा करे।)

हाथ में पुष्प लेकर इस प्रकार प्रार्थना करे –

प्रार्थना – देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥
'ॐ अपां पतये वरुणाय नमः।'

नमस्कार – ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। (इस नाम-मन्त्र से नमस्कारपूर्वक पुष्प समर्पित करे।)

अब हाथ में जल लेकर निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण कर जल कलश के पास छोड़ते हुए समस्त पूजन–कर्म भगवान् वरुणदेव को निवेदित करे –

समर्पण – कृतेन अनेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पुण्याहवाचन

पुण्याहवाचन के दिन आरम्भ में वरुण—कलश के पास जल से भरा एक पात्र (कलश) और भी रख दे । वरुण—कलश के पूजन के साथ—साथ इसका भी पूजन कर लेना चाहिये । पुण्याहवाचन का कर्म इसीसे किया जाता है । सबसे पहले वरुण की प्रार्थना करें ।

वरुण—प्रार्थना – ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥

यजमान अपनी दाहिनी ओर पुण्याहवाचन—कर्म के लिये वरण किये हुए युग्म ब्राह्मणों को, जिनका मुख उत्तर की ओर हो, बैठा ले । इसके बाद यजमान घुटने टेककर कमल की कोंढी की तरह अञ्जलि बनाकर सिर से लगातार तीन बार प्रणाम करे, तब आचार्य अपने दाहिने हाथ से स्वर्णयुक्त उस जलपात्र (लोटे) को यजमान की अञ्जलि में रख दे । यजमान उसे सिरसे लगाकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणों से अपनी दीर्घ आयु का आशीर्वाद माँगे –

यजमान – ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यम् पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥

यजमान की इस प्रार्थनापर ब्राह्मण निम्नलिखित आशीर्वचन बोलें –

ब्राह्मण – अस्तु दीर्घमायुः ।

अब यजमान ब्राह्मणों से फिर आशीर्वाद माँगे –

यजमान – ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।
अतो धर्माणि धारयन् ॥
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

यजमान और ब्राह्मणों का यह संवाद इसी आनुपूर्वी से दो बार और होना चाहिये । अर्थात आशीर्वाद मिलने के बाद यजमान कलश को सिरसे हटाकर कलश के स्थानपर रख दे । फिर इस कलश को सिरसे लगाकर – '**ॐ दीर्घा**

नागा नद्यो . . . रस्तु' बोले इसके बाद ब्राह्मण **'दीर्घमायुरस्तु'** बोलें । इसके बाद यजमान पहले की तरह कलश को कलश—स्थानपर रखकर फिर सिर से लगाकर **'ॐ दीर्घा नागा . . . रस्तु'** कहकर आशीर्वाद माँगे और ब्राह्मण **'दीर्घमायुरस्तु'** यह कहकर आशीर्वाद दें ।

यजमान — ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः ॥

ॐ शिवा आपः सन्तु । ऐसा कहकर यजमान ब्राह्मणों के हाथों में जल दे ।

ब्राह्मण — सन्तु शिवा आपः ।

अब यजमान निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणों के हाथों में पुष्प दे —

यजमान — लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे ॥ सौमनस्यमस्तु ।

ब्राह्मण — 'अस्तु सौमनस्यम्' ऐसा कहकर ब्राह्मण पुष्प को स्वीकार करें ।

अब यजमान निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणों के हाथ में अक्षत दे —

यजमान — अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।

ब्राह्मण – 'अस्त्वक्षतमारिष्टं च' । — ऐसा बोलकर ब्राह्मण अक्षत को स्वीकार करें । इसी प्रकार आगे यजमान ब्राह्मणों के हाथों में चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि देता जाय और ब्राह्मण इन्हें स्वीकार करते हुए यजमान की मङ्गल कामना करें ।

यजमान – (चन्दन) गन्धाः पान्तु ।
ब्राह्मण – सौमङ्गल्यं चास्तु ।
यजमान – (अक्षत) अक्षताः पान्तु ।
ब्राह्मण – आयुष्यमस्तु ।
यजमान – (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु ।
ब्राह्मण – सौश्रियमस्तु ।
यजमान – (सुपारी–पान) सफलताम्बूलानि पान्तु ।
ब्राह्मण – ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमान – (दक्षिणा) दक्षिणाः पान्तु।

ब्राह्मण – बहुदेयं चास्तु।

यजमान – (जल) आपः पान्तु।

ब्राह्मण – स्वर्चितमस्तु।

यजमान – (हाथ जोड़कर दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।)

ब्राह्मण – 'तथास्तु' – ऐसा कहकर ब्राह्मण यजमान के सिरपर कलश का जल छिड़ककर निम्नलिखित वचन बोलकर आशीर्वाद दें –

ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु।

यजमान – (अक्षत लेकर) यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा यजराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण – 'वाच्यताम्' – ऐसा कहकर निम्न मन्त्रों का पाठ करें –

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥

सविता त्वा सवाना ँ्ं सुवतामग्निर्गृहपतीना ँ्ं सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्येष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।

न तद्रक्षा ँ्ंसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ँ्ं ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायण ँ्ं हिरण्य ँ्ं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुःस। मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उप ँ्ं शर्म महि श्रवः॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ इयक्षते।

यजमान – व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुशमदमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मण – समाहितमनसः स्मः।

कहीं पर जल डाला जाता है और कहीं चावल डाला जाता है।

यजमान — प्रसीदन्तु भवन्तः ।

ब्राह्मण — प्रसन्नाः स्मः ।

इसके बाद यजमान पहले से रखे गये दो सकोरों में पहले सकोरे में आम के पल्लव या दूब से थोड़ा—थोड़ा जल कलश से डाले और ब्राह्मण बोलते जायँ ।—

पहले पात्र (सकोरे) में — ॐ शान्तिरस्तु । ॐ पुष्टिरस्तु । ॐ तुष्टिरस्तु । ॐ वृद्धिरस्तु । ॐ अविघ्नमस्तु । ॐ आयुष्यमस्तु । ॐ आरोग्यमस्तु । ॐ शिवमस्तु । ॐ शिवं कर्मास्तु । ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु । ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु । ॐ वेदसमृद्धिरस्तु । ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु । ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु । ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु । ॐ इष्टसम्पदस्तु ।

दूसरे पात्र (सकोरे) में - ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु । ॐ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु ।

पुनः पहले पात्र में – ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु । ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु । ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ।ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु । ॐ तिथिकरणमुहूर्त - नक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम् । ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमावातरः प्रीयन्ताम् । ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्यः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ॐ ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम । ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयताम् । ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा वामदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् ।

दूसरे पात्र में – ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः । ॐ हताश्च परिपन्थिनः । ॐ हताश्च कर्मणो विघ्नकर्तारः । ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु । ॐ शाम्यन्तु घोराणि । ॐ शाम्यन्तु पापानि । ॐ शाम्यन्त्वीतयः । ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ॥

पहले पात्र में – ॐ शुभानि वर्धन्ताम् । ॐ शिवा आपः सन्तु । ॐ शिवा ऋतवः सन्तु । ॐ शिवा ओषधयः सन्तु । ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु । ॐ शिवा अतिथयः सन्तु । ॐ शिवा अग्नयः सन्तु । ॐ शिवा आहुतयः सन्तु । ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम् ।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहा प्रीयन्ताम् । ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम् । ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् । ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् । ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु । ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ।

इसके बाद यजमान कलश को कलश के स्थानपर रखकर पहले पात्र में गिराये गये जल से मार्जन करे । परिवार के लोग भी मार्जन करें । इसके बाद इस जल को घर में चारों तरफ छिड़क दे । द्वितीय पात्र में जो जल गिराया गया है, उसको घर से बाहर एकान्त स्थान में गिरा दे ।

अब यजमान हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे –

यजमान – ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।

ब्राह्मण – वाच्यताम् ।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

यजमान – ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् ।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ पुण्याहम् ।

यजमान – भो ब्राह्मणाः ! मम . . . करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ पुण्याहम् ।

यजमान – भो ब्राह्मणः ! मम . . . करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ पुण्याहम् ।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥

यजमान – पृथिव्यामुद्धतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् ।
(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ।
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ कल्याणम् ।

यजमान – भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे (दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ कल्याणम् ।

यजमान – भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे (तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ कल्याणम् ।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्या ँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं म कामः समृद्ध्यतामुप भादो नमतु ।

यजमान – ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ।
(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ ऋद्ध्यताम् ।

यजमान – भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे (दूसरी बार)
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ ऋद्ध्यताम् ।

यजमान – भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुक कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ ऋद्ध्यताम् ।
ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिर्मृता अभूम ।
दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वजर्यतिः ॥

यजमान – ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ।
(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः ॥
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मण स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

यजमान – भो ब्राह्मणः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे (दूसरी बार)
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

यजमान – भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण – ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजमान – ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका ।
(पहली बार) हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण — ॐ अस्तु श्रीः ।

यजमान — भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति
भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण — ॐ अस्तु श्रीः ।

यजमान — भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति
भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण — ॐ अस्तु श्रीः ।
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥

यजमान — ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेत शरदः शतम् ॥

ब्राह्मण — ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः ।
ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

यजमान — ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥

ब्राह्मण — ॐ अस्तु श्रीः ।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ।
पशूना ँ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

यजमान — प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः ॥

ब्राह्मण — ॐ भगवान् प्रजापतिः ताम् ।
ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ् स्याम पतयो रयीणाम् ॥

यजमान — आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विरिभर्वेद् पारगैः ॥
देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे ।
एकलिङ्गे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥

ब्राह्मण — ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।
ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥
ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु ॥

यजमान — अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तेः यो विधिरूपविष्ट–
ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु ।

दक्षिणा का संकल्प — कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं
पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां दक्षिणां
विभज्य अहं दास्ये ।

ब्राह्मण — ॐ स्वस्ति ।

अभिषेक

पुण्याहवाचनोपरान्त कलश के जल को पहले पात्र में गिरा ले । अब अविधुर (जिनकी धर्मपत्नी जीवित हो) ब्राह्मण उत्तर या पश्चिम मुख होकर दूब और पल्लव के द्वारा इस जल से यजमान का अभिषेक करे । अभिषेक के समय यजमान अपनी पत्नी को बायीं[१] तरफ कर ले । परिवार भी वहाँ बैठ जाय । अभिषेक के मन्त्र निम्नलिखित हैं —

---

* १. आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा । शयने भोजने चैव पत्नी तुत्तरतो भवेत ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥
ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ।
ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद ॥
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा
साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ (शु.य. ९ ।३०)
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा
साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ (शु.य. ९ ।३०)
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यत्तुर्थन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॥ (शु.य. १८ ।३७)
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै
भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै
यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ (शु.य. २० ।३)
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रंतन्न आ सुव ॥
ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ (शु.य. १८ । ७६)
ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिरः ।
रक्षा तोकमुत त्मना ॥ (शु.य. १८ । ७७)
ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवि शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥

सुशान्तिर्भवतु ।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामाभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥
शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । अमृताभिषेकोऽस्तु ॥

दक्षिणादान – ॐ अद्य . . . कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां भज्य दातुमहमुत्सृजे ।

• • •

षोडशमातृका-पूजन

षोडशमातृकाओं की स्थापना के लिये पूजक दाहिनी ओर पाँच खड़ी पाइयों और पाँच पड़ी पाइयों का चौकोर मण्डल बनाये। इस प्रकार सोलह कोष्ठक बन जायेंगे। पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करे। कोष्ठकों में रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे। पहले कोष्ठक में गौरी का आवाहन होता है, गौरी के आवाहन के पूर्व गणेश का भी आवाहन पुष्पाक्षतों द्वारा इसी कोष्ठक में करे। इसी प्रकार अन्य कोष्ठकों में भी निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करे।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मनः कुलदेवता १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

आवाहन एवं स्थापन –

१ – ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि।

षोडशमातृका–पूजनम्

१. गौरी–गणेश –

गजवक्र गणाध्यक्ष सर्व विघ्नविनाशन ।
लम्बोदर त्रिनेत्राढ्य आगच्छ गणनायक ॥१ ॥
ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां
त्वा प्रियपति ँ हवामहे नीधीनांत्वानिधि ।
पति ँ हवामहे वसो मम । आहमजानि
गर्भधमात्मजासि गर्भधम् ॥१ ॥
श्री गणपतये नमः ॥ गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥
हिमाद्रितनयां देविं वरदां शङ्करप्रियाम् ॥
लंबोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥१ ॥
आयंगौः पृश्निरक्रमीद सदम्नातरं पुरः ।
पितरंच प्रयन्त्स्वः ॥१ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२. पद्मा –

सुवर्णाढ्यां पद्म हस्तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम् ।
त्रैलोक्य पूजितां देवी पद्मामावाह्याम्यहम ॥२ ॥
ॐ हिरण्यरूपाऽउषा सोविरोकउभाविंद्राऽउदिथः सूर्यश्च ॥
आरोहतं–वरुणामित्रगर्तर्न्ततश्चक्षाथामदितिंदितिंच
मित्रोसिवरुणोसि ॥२ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥

३. शची –

उत्पलाक्षीं सुवदनां शशि कुंडलधारिणीम् ।
देवराजप्रियां भद्रांशचीमावाह्याम्यहम् ॥३ ॥

ॐ कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्चासि दाशुषे ।
उपोपेन्नुमघवन्मूयऽइन्नुतेदानं देवस्य पृच्यते ॥३ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीं आवाहयामि स्थापयामि ॥

४. मेधा –

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रमश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥४ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधां आवाहयामि स्थापयामि ॥
जगत्स्त्रष्ट्रीं जगद्धात्रीं पत्नीं रूपेण संस्थितां ।

५. सावित्री –

ॐ काराक्षीं भगवतीं सावित्रीमाह्वयाम्यहम् ॥५ ॥
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥५ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीं आवाहयामि स्थापयामि ॥

६. विजया –

दैत्यक्षयकरीं देवीं देवानां चाभयप्रदाम् ।
गीर्वाणवंदितां देवीं विजयामाह्वयाम्यहम् ॥
ॐ विज्यंधनुः कपर्दिनोव्विशल्योबाणवा ँ् उत ॥
अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआमुभरस्य निषंगधिः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयां आवाहयामि स्थापयामि ॥

७. जया –

विष्णुरुद्रार्कशक्रादि गीर्वाणेषु व्यवस्थितां ।
त्रैलोक्य वंदितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ यातेरूद्रशि वातनूर घोरा पापकाशिनी ।
तयानस्तन्वाशंत मया गिरि शंताभिचाकशीहि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयां आवाहयामि स्थापयामि ॥

८. देवसेना –

कोष्ठे बाह्यो मयूर वाहनारूढां शक्ति खड्ग धनुर्द्धराम् ।

आवाहयेरद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥
ॐ देवानां भद्रासुमति ऋजूयतां देवाना राति
रभिनोनिवर्तताम् ॥ देवानां सख्यमुपरोदिमां
व्ययन्देवान आयुः प्रतिरंतु जीव से ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनां आवाहयामि स्थापयामि ॥

९. स्वधा –

कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या । प्रयच्छति पितृलोकार्चितां
देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यस्वधाः नमः पितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्पितरोऽमीमदंत
पितरोऽतीतृ पंत पितरः पितरः शून्धध्वम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधां आवाहयामि स्थापयामि ॥
स्वधे इहागच्छेह तिष्ठ ॥

१०. स्वाहा –

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रपच्छति ।
वह्निप्रिया तु स्वाहा समगच्छतु मेऽध्वरे ॥
ॐ स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरंत रिक्षात्स्वाहा ।
द्यावा पृथिवी भ्या स्वाहाव्वाता दारभे स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहां आवाहयामि स्थापयामि ॥

११. मातर –

भूतग्राममिमं कृत्स्नं भया प्रीत्यादितं पुरा ।
त्रैलोक्य पूजितां देवीं मातरं चाह्वयाम्यहम् ॥
ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुंधयंतु घृतेननोघृतप्वः,
पुनंतु । विश्व ँ हिरिप्रम्प्रवहंति देवीरूदिदाभ्यः
शुचिरापूतऽएमिदिक्षांत पसोस्तनूर सितान्त्वा

शिवा शग्माम्परि दधे भद्रं वर्णेपुष्यन् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि ॥

१२. लोकमातर –

आवाहयेल्लोकमातृ जगत्पालन संस्थिता ।
शक्राद्यैर्वेदिता देवी स्तोत्र पाठाभिचारकैः ॥
ॐ स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षमो भेषजं करत् ।
अतिच्छंदा ऽ इन्द्रियं बृह, दृष भोगौर्नव्वयोदधुः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोक मातृः आवाहयामि स्थापयामि ॥

१३. धृतिः –

मनस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकारिणीम् ।
सर्वकाम समृद्धयर्थ धृतिमावाहयाम्यहम् ॥
यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्चयज्ज्योति रंतरमृत प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किंचन कर्मक्रियतेतन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

१४. पुष्टि –

प्रणतानां हि लोकेऽस्मिन्पुत्र पुष्टि सुखप्रदाम् ।
भक्तेभ्यश्चापि वरदां पुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टं च मे पुष्टिश्चमेव्विभुच
मे प्रभुच मे । पूर्णं च मे पूर्णतरंच मे कुयवंच-
मेऽक्षितंचमेऽन्नंचमेऽक्षुच्चमेयज्ञेन कल्पन्ताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिं आवाहयामि स्थापयामि ॥

१५. तुष्टि –

आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वलोक सुखप्रदाम् ।
संतोषभावनां देवीं रक्षणीयेऽध्वरे मम ॥
त्वष्टातुरीपो ऽ अद्भुत ऽ इन्द्राग्नी पुष्टि वर्द्धना ।
द्विपदाच्छंद ऽ इन्द्रियमुक्षागौर्नव्वयोदधुः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिं आवाहयामि स्थापयामि ॥

१६. आत्मनः कुलदेवता –

त्वमात्मा देहिनां देवि सर्वकामफलप्रदा ।
वंशरक्षणकर्त्री च आगच्छागच्छ मेऽध्वरे ॥
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मकुल देवतायै नमः
आत्मकुलदेवतां आवाहयामि स्थापयामि ॥
एवं प्रत्येकमावाहन स्थापने कुर्यात् ॥

प्रतिष्ठा –

ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं
तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ् समिमं दधातु ।
विश्वे देवास इहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति कश्चन ॥
गणेश गौर्यादि ! सु प्रतिष्ठिते वरदे भवेताम् ।
प्रतिष्ठा पूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥
ॐ गणेश गौर्यादिकाभ्यां नमः (आसन के लिये अक्षत समर्पित करे ।)
ॐ गणेश सहित गौर्यादिषोडश मातृकाभ्यो नमः ।

विशेष – १. मातृकाओं को यज्ञोपवीत न चढ़ाये ।
२. नैवेद्य के साथ–साथ घृत और गुड भी नैवेद्य लगाये ।
३. विशेष अर्घ्य न दे ।

फल का अर्पण – नारियल आदिफल अञ्जलि में लेकर प्रार्थना करे –

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्य ददध्वं मातरो मम ।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वंस गणाधिपाः ॥

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद नारियल आदि फल चढाकर हाथ जोडकर बोले –

"गेहेवृद्धिशतानि भवन्तु, उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ।"

इसके बाद –

अनया पूजया गणेशसहित गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम ।
इस वाक्य का उच्चारण कर मण्डलपर अक्षत छोड़कर नमस्कार करे ।
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धो पूज्याश्च षोडश ॥
ततः श्री फलोपरि पुष्पाक्षतं निधाय श्री फलं देवताभिमुखं कृत्वा –
पत्रं पुष्पं फलंतोयंरत्नानि विविधानि च ।
गृहाणाघर्य मयादत्तं देहि में वांछितं फलम् ॥
रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे ।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥
फलेन फलितं सर्वे त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
फलस्यार्घ प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥
श्री फलेन एषवोऽर्घः इति संप्रार्थ्य श्रीफलं स्वाभिमुखं
कृत्वा समर्पयेत् । ततः पुष्पाक्षतादीन्गृहीत्वा–
ॐ आयंङ्गो पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः पीतरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥१ ॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥२ ॥
इति स गणेश गौर्यादिस्थापित मातृभ्यो नमः

मंत्र पुष्पांजलि समर्पयामि ॥

• • •

सप्तघृतमातृका–पूजनम्

आग्नेय कोण में किसी वेदी अथवा काष्ठ पीठ (पाटा) पर प्रादेश मात्र स्थान में पहले रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर "श्री" लिखे इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु दक्षिण से करके उत्तर की ओर दे। इसी प्रकार सात बिन्दु क्रम से चित्रानुसार बनाना चाहिये।

पूर्व

॥ श्रीः ॥

o

o o

o o o

o o o o

o o o o o

o o o o o o

o o o o o o o
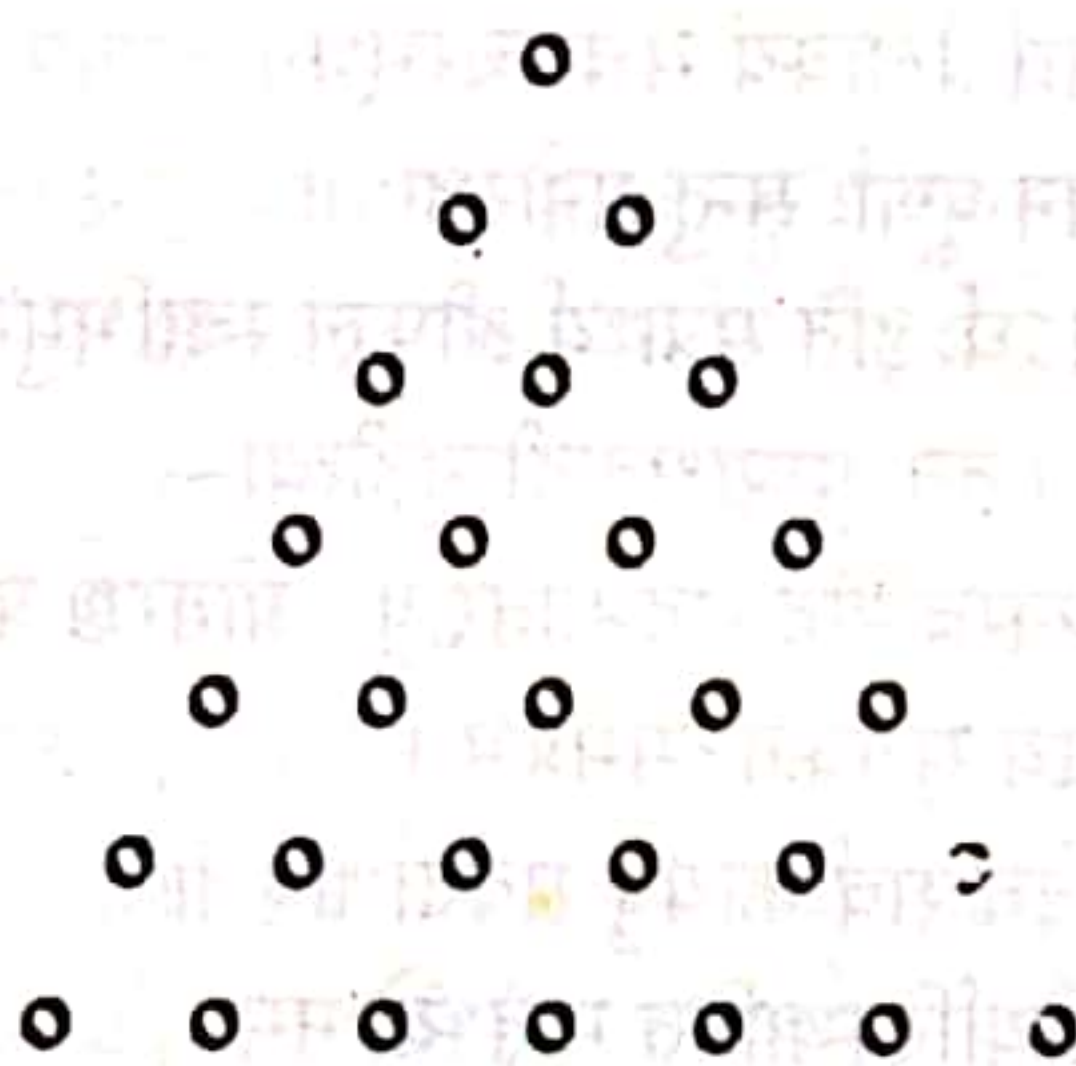
(वसोर्धारा)

इसके बाद नीचे वाले सात बिन्दुओं पर घी या दूध से प्रादेशमात्र सात धाराएँ निम्न मन्त्र से दे।

घृत–धारा करण –

ॐ वसोः पवित्र मसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

इसके बाद गुड के द्वारा बिन्दुओं की रेखाओं को उपर्युक्त मन्त्र पढते हुए मिलाये। तद्नन्तर निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करे।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घृत्यै नमः घृतिमावाहयामि स्थापयामि।
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।
६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रद्धायै नमः श्रद्धामावाहयामि स्थापयामि।
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा – इस प्रकार आवाहन स्थापन के बाद इस मन्त्र से प्रतिष्ठा करे –

मन्त्र – एतं ते देव सवितु यज्ञं प्राहुर्व्रहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिंतेन मामव। मनोजुर्तिजुष तामाज्यस्य वृहस्पर्ति यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमंदधातु॥ विश्वे देवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ एष वै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजंते – सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः॥

इस मन्त्र से यथा लब्धोपचार–पूजन करे।

प्रार्थना – तदनन्तर हाथ जोडकर निम्नमन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे।

ॐ यदङ्गत्वेन भो देव्याः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन कृतद्भवम्॥
अनया पूजया वसोर्धारादेवताः प्रीयन्ताम् न मम॥

ऐसा उच्चारण कर मण्डल पर अक्षत छोड़े॥

पूजक अञ्जलि में पुष्प ग्रहण करे तथा ब्राह्मण आंयुष्य मन्त्र पाठ करे।

• • •

नवग्रह मण्डल–पूजन

ग्रहों की स्थापना के लिये ईशान कोण में निम्न चित्रानुसार चौकोर मण्डल बनाये। इसप्रकार नौ कोष्ठक बन जायेंगे। बीचवाले कोष्ठ में मसूर से सूर्य, अग्निकोण में चन्द्र चावल से, दक्षिण में मंगल मसूर से, ईशानकोण में बुध मूंग से, उत्तर में बृहस्पति चने की दाल से, पूर्व में शुक्र चावल से, पश्चिम में शनि उड़द से, नैऋत्य कोण में राहु काले तिल से, और वायव्य कोण में केतु काले तिल से इस प्रकार मण्डल बनाकर स्थापना करे।

नवग्रह मण्डल

पूर्व

उत्तर (बायें) — दक्षिण (दायें)

बुध	शुक्र	चन्द्र
गुरु	सूर्य	भौम
केतु	शनि	राहु

पश्चिम

१. सूर्य (मध्य में गोलाकार लाल)

सूर्य आवाहन (लाल अक्षत पुष्प लेकर)

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य !
इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ सूर्याय नमः श्री सूर्यमावाहयामि,
स्थापयामि पूजयामि ॥ *(पुष्प अक्षत मण्डल पर चढाये ।)*

२. चन्द्र (अग्निकोण में अर्ध चन्द्र श्वेत)

चन्द्रमा आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)

ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय
महते ज्येष्ठयाय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इमममुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्रमस्यै विशएषवोऽमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ।
दधिशङ्खतुषारावं क्षीरोदार्णव सम्भवम् ।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्ल वर्ण
भो सोम ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सोमाय नमः
सोममावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि ॥ *(अक्षत पुष्प चढाये)*

३. मंगल – (दक्षिण में त्रिकोण लाल मसूर से बने मण्डल)

मङ्गल आवाहन – (लाल फूल और अक्षत लेकर ।)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति ॥
धरणी गर्भ संभूतं विद्युत्तेजस्सम प्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम ॥
ऐं ह्रीं श्रीं अवन्ति देशोद्भव भारद्वाज गोत्र रक्तवर्ण

भो भौम ! इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ भौमाय नमः,
भौममावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि ॥

४. बुध – (ईशान कोण में हराधनुष मूंग से बना मण्डल)

बुध आवाहन – (पीले हरे अक्षत पुष्प लेकर।)

ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते ँ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥
प्रियङ्गुकलिका भासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं मगध देशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण
भोबुध ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ बुधाय नमः,
बुधमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

(मूंग हरा धनुष बना मण्डल पर अक्षत पुष्प चढाये।)

५. बृहस्पति – (उत्तर में पीला अष्टदल)

बृहस्पति आवाहन् (पीले अक्षत-पुष्प से)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्वि भाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतयेत्वा ॥
देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्।
वन्द्य भूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं सिन्धु देशोद्भव अङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण
भो गुरो ! इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः
बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ॥

६. शुक्र – (पूर्व में श्वेत – चतुष्कोण)

शुक्र आवाहन – (श्वेत अक्षत पुष्प से)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्ध स

इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं भोजकट देशोद्भव भार्गव गोत्र शुक्लवर्ण
भो शुक्र ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शुक्रमावाहयामि
स्थापयामि पूजयामि ॥ *(श्वेत अक्षत मण्डल पर छोड़े ।)*

७. शनि – (पश्चिम में काला मनुष्य)

शनि आवाहन (काले अक्षत-पुष्प से)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥
नीलाम्बुजसमाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप गोत्र कृष्णवर्ण
भो शनैश्चर ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः
शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि ॥ *(मण्डल पर अक्षत छोड़े ।)*

८. राहु – (नैऋत्य कोणे, काला मकर)

राहु आवाहन – (काले अक्षत-पुष्प से)

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिका गर्भ सम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं राठिन पुरोद्भव पैठीन सगोत्र कृष्णवर्ण
भो राहो ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ राहवे नमः
राहुमावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि ॥ *(अक्षत छोड़े)*

९. **केतु – (वायव्य कोण में, कष्ण खड्ग)**

केतु आवाहन – (धूमिल अक्षत पुष्प लेकर)

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेश से ।
समुषद्भिरजायथाः ॥
पलाशधूम्रसङ्काशं तारका ग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ॥
ऐं ह्रीं श्रीं अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण
भो केतो ! इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ केतवे नमः
केतुमावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि ॥ *(अक्षत छोड़े)*

नवग्रह–मण्डल की प्रतिष्ठा – आवाहन और स्थापन के बाद हाथ में अक्षत् लेकर – निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षत छोड़े । नवग्रह मण्डलों पर ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं
तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु ॥ विश्वे देवास
इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ ॥
ॐ आवाहित सूर्यादि नवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

पूजन करने के पश्चात् हाथ जोडकर निम्न प्रार्थना करे ।

प्रार्थना

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः ।
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनि ॥
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं ।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥

निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए नवग्रह मण्डल पर अक्षत छोड़ दे और नमस्कार करे ॥

अनया पूजया सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्तां न मम ॥

अधिदेवतास्थापनम्

ईश्वर सूर्यदक्षिणपार्श्वे – मण्डल पर अक्षत पुष्प छोड़े ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मा मृतात ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छेहतिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः
ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

उमा सोमदक्षिणपार्श्वे – मण्डल पर अक्षत पुष्प छोड़े

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छेहतिष्ठ उमायै नमः
उमामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

स्कन्द भौमदक्षिणपार्श्वे – मंगल ग्रह के दक्षिण स्थित मण्डल अधिदेव स्कन्द पर अक्षत पुष्प छोड़े ।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यम्महि जातन्तेऽर्वन् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छेहतिष्ठ स्कन्दाय नमः
स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

विष्णु बुध दक्षिणपार्श्वे – बुध के अधिदेव विष्णु मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे ।

ॐ विष्णोररराटमसि विष्णोः श्नपत्रेस्थो विष्णोः
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णोइहागच्छेहतिष्ठ विष्णवे नमः
विष्णुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

ब्रह्मा गुरुर्दक्षिणपार्श्वे – गुरु के दक्षिण ब्रह्मण अधिदेव मण्डल पर अक्षत पुष्प छोड़े।

ॐ आब्रह्मणब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा
राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योति व्याधी महारथो।
जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः।
सभेयो युवास्याः यजमानस्य वीरो जायतान्नि
काम॒े निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न
ऽ ओषधयः पच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः
ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥

इन्द्र शुक्रदक्षिणपार्श्वे – (शुक्र के दक्षिण स्थित इन्द्र अधिदेव मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे।)

ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब वृत्रहा शूरविद्वान।
जहि शत्रूंरपमृधोनुदस्वाथा भयङ्कृणुहि। विश्वतो नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः इहागच्छेहतिष्ठ इन्द्राय नमः
इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥

यम शनिर्दक्षिणपार्श्वे – (शनि के दक्षिण स्थित अधिदेव यम मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे)

यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेहतिष्ठ यमाय नमः
यममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥

काल राहुर्दक्षिणपार्श्वे – (राहु के दक्षिण स्थित अधिदेव काल मण्डलपर अक्षत पुष्प छोड़े)

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि।
समापोऽअद्भिरग्मत समोषधी। भिरोष धीः॥

ॐ भूभुर्वः स्वः काल इहागच्छेहतिष्ठ कालाय नमः
कालमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

चित्रगुप्त केतु दक्षिण पार्श्वे – (केतु के दक्षिण स्थित अधिदेव चित्र गुप्त मंडल पर अक्षत अर्पण करे ।)

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥
ॐ भूर्भुव स्वः चित्र गुप्त इहागच्छेहतिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः
चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

प्रत्यधि देवता स्थापनम्

सूर्यस्य वामपार्श्वे – (सूर्य के वाम स्थित प्रत्यधि देव स्थित अग्नि मण्डल पर पुष्प अक्षत अर्पण करे ।)

ॐ अग्निं दूतम्पुरोदधे हव्य वाहमुपब्रुवे ।
देवां२ऽ आसादयादिह ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अग्निदेव इहागच्छेहतिष्ठि ॐ अग्नेय नमः
अग्नि-मावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

सोमवामपार्श्वे – चन्द्र के वाम स्थित प्रत्यधिदेव आप मण्डल पर पुष्प अक्षत अर्पण करे ।)

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जेदधातन महेरणाय चक्षसे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः आपः इहागच्छेह तिष्ठ
आप मावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

भौम वाम पार्श्वे – मंगल के वामस्थित प्रत्यधि देव स्थित पृथिवी मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे ।

ॐ स्योना पृथिविनो भवा नृक्षरानिवेशनी यच्छानः शर्म्मस प्रथा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवि इहागच्छेह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः
पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

बुध वामपार्श्वे – बुध वामभाग स्थित प्रत्यधि देव विष्णु मंडलपर अक्षत पुष्प अर्पण करे।

ॐ इदंम्बिष्णुर्विचक्र में त्रेधानिदधे पदम् समूढमस्ययपाद सुरे स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः
विष्णुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

गुरुवामपार्श्वे – गुरु वामभाग स्थित प्रत्यधिदेव इन्द्र मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवे हवे सुवह शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छेह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः
इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

शुक्रवामपार्श्वे – शुक्र वाम भागस्थित प्रत्यधिदेव इन्द्राणी मण्डल पंर अक्षत पुष्प अर्पण करे।

ॐ आदित्यैरास्नासीन्द्राण्या ऽ उष्णीषः पूषासि धर्म्माय दीष्व ॥
ॐ भुर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः
इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

शनिवाम पार्श्वे – शनि वाम भाग स्थित प्रत्यधिदेव प्रजापति मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करें।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव।
यत्कामास्तै जुहुमस्तन्नोऽअस्तुवय ँ स्याम पतयो र यीणाम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः
प्रजापतिम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

राहुवाम पार्श्वे – राहु के वाम भाग स्थित प्रत्यधिदेव सर्प मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छेहतिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः
ॐ सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

केतुवाम पार्श्वे — केतु वाम भाग स्थित प्रत्यधिदेव ब्रह्मा के मण्डल पर अक्षत पुष्प अर्पण करे ।

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेनऽआवः ।
सबुन्ध्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ।
ॐ भूर्भुव स्वः ब्रह्मन् इहगच्छेहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः ।
ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥

दशदिक्पाल पूजनम्

बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से प्रत्येक मंत्र से अक्षत छोड़े ॥

१. **इन्द्र** *(पूर्व में)* —

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम ।
ह्वयामि शक्रन्पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥
इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ॥

२. **अग्नि** — *(अग्नि कोण में)*

ॐ अग्नि दूतं पुरोऽदधे हव्यवाहमुपब्रु वे देवां देवां आसादयादिह ॥
अग्नये नमः अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ॥

३. **यम** — *(दक्षिण में)*

ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्य ने व्रतेन ।
असि सोमेन समय विपृक् आहुस्ते त्रीणि द्वि बन्धनानि ॥
यमाय नमः यमाय आवाहयामि स्थापयामि ॥

४. **नैर्ऋति** — (नैर्ऋत्य कोण में)

ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेन स्येत्या मन्वि हितस्करस्य,
अन्यमस्मदिच्छ सात इत्या नमो देबिनिर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
निर्ऋतये नमः नैर्ऋत्यं आवाहयामि स्थापयामि ॥

५. **वरुण** – *(पश्चिम में)*

ॐ इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय । त्वामस्युराचके ॥
वरुणाय नमः ॥ वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ॥

६. **वायु** – *(उत्तर कोण में)*

ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं मन्मनसा यज्ञम् ।
शिवोनियुद्भिः शिवाभिः वायवे नमः
वायुं आवाहयामि स्थापयामि ॥

७. **कुबेर** – *(उत्तर में)*

ॐ कुविदङ्ग यवमन्ते । यवं चिद्यथा दान्त्यनु पूर्वंवियूय ।
इहे हैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषौ नम उक्तिं यजन्ति ॥
कुबेराय नमः । कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि ॥

८. **ईशान** – *(ईशान कोण में)*

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थु पस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तयै ॥
ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि ॥

९. **ब्रह्मा** – *(ईशान पूर्व के मध्य में)*

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः
ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।

१०. **अनन्त** – *(नैर्ऋत्य पश्चिम के मध्य में)*

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥
अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि
"ॐ इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यो नमः" पूजन के पश्चात् अनया पूजया दशदिक्पाल देवताः प्रीयन्ताम् ॥ *(अक्षत छोड़े ।)*

पञ्चलोकपाल पूजनः

गणपति – ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे
प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे
निधीनां त्वां निधि पति ँ हवामहे वसो मम ।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये इहागच्छ इहतिष्ठ । गणपतये नमः ॥

देवी – ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातो यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धु दुरिता त्यग्निः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ । दुर्गायै नमः ॥

वायु – ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणी भिरूपयाहि यज्ञं ।
वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः ॥

आकाश – ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां ।
वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इहतिष्ठ । आकाशाय नमः ॥

अश्विनी – ॐ या वाङ्कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती ।
तया यज्ञम्मिभिक्षताम् ॥
उपयाम गृहीतोऽस्यस्विभ्यान्त्वैषते योनिर्माध्वीभ्यांत्वा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वरश्विना इहागच्छतम् इह तिष्ठतम्
अश्विनीभ्यां नमः *(इत्यावाह्य)*
ॐ गणपत्यादिपञ्च लोकपालेभ्यो नमः ॥
अनया पूजया पञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम ॥ *(अक्षत छोड़े)*

अथ [१] वास्तुमण्डलदेवतानां पूजनम् एवं होमः ॥

१. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
२. ॐ अर्यम्णे नमः स्वाहा ।
३. ॐ विवस्वते नमः स्वाहा ।
४. ॐ मित्राय नमः स्वाहा ।
५. ॐ पृथ्वीधराय नमः स्वाहा ।
६. ॐ सावित्राय नमः स्वाहा ।
७. ॐ सवित्रे नमः स्वाहा ।
८. ॐ विबुधाधिपाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ जयाय नमः स्वाहा ।
१०. ॐ राजयक्ष्मणे नमः स्वाहा ।
११. ॐ रुद्राय नमः स्वाहा ।
१२. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा ।
१३. ॐ आपवत्साय नमः स्वाहा ।
१४. ॐ शिखिने नमः स्वाहा ।
१५. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा ।
१६. ॐ जयन्ताय नमः स्वाहा ।
१७. ॐ कुलिशाय नमः स्वाहा ।
१८. ॐ सूर्याय नमः स्वाहा ।
१९. ॐ सत्याय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ भृशाय नमः स्वाहा ।
२१. ॐ आकाशाय नमः स्वाहा ।
२२. ॐ वायवे नमः स्वाहा ।
२३. ॐ पूष्णे नमः स्वाहा ।
२४. ॐ वितथाय नमः स्वाहा ।
२५. ॐ गृहक्षताय नमः स्वाहा ।
२६. ॐ यमाय नमः स्वाहा ।
२७. ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा ।
२८. ॐ भृङ्गराजाय नमः स्वाहा ।
२९. ॐ मृगाय नमः स्वाहा ।
३०. ॐ पितृभ्यो नमः स्वाहा ।
३१. ॐ दौवारिकाय नमः स्वाहा ।
३२. ॐ सुग्रीवाय नमः स्वाहा ।
३३. ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा ।
३४. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
३५. ॐ असुराय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ शोषाय नमः स्वाहा ।
३७. ॐ पापाय नमः स्वाहा ।
३८. ॐ रोगाय नमः स्वाहा ।
३९. ॐ अहये नमः स्वाहा ।
४०. ॐ मुख्याय नमः स्वाहा ।
४१. ॐ भल्लाटाय नमः स्वाहा ।
४२. ॐ सोमाय नमः स्वाहा ।
४३. ॐ सर्पाय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ अदित्यै नमः स्वाहा ।

---

१. नाममन्त्राणां मंत्रत्वे गारुडोक्तवचनं प्रमाणम् – यथा प्रणवादिनमोन्तं च चतुर्थ्यन्तं च सत्तम । देवतायाः स्वकं नाम नाममन्त्रः प्रकीर्तितः ।

४५. ॐ दित्यै नमः स्वाहा ।
४६. ॐ चरक्यै नमः स्वाहा ।
४७. ॐ विदार्यै नमः स्वाहा ।
४८. ॐ पूतनायै नमः स्वाहा ।
४९. ॐ पापराक्षस्यै नमः स्वाहा ।
५०. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा ।
५१ ॐ अर्यम्णे नमः स्वाहा ।
५२. ॐ जृम्भकाय नमः स्वाहा ।
५३. ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा ।
५४. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ।
५५. ॐ अग्नेय नमः स्वाहा ।
५६. ॐ यमाय नमः स्वाहा ।
५७. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा ।
५८. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
५९. ॐ वायवे नमः स्वाहा ।
६०. ॐ कुबेराय नमः स्वाहा ।
६१. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा ।
६२. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
६३. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा ।

इति वास्तुमण्डलदेवतानां पूजनम् एवं होमः ॥

अथ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसमन्वित-गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीनां पूजनम् एवं होमः ॥

१. ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा ।
२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।
३. ॐ महासरस्वत्यै नमः स्वाहा ।
४. ॐ गजाननायै नमः स्वाहा ।
५. ॐ सिंहमुख्यै नमः स्वाहा ।
६. ॐ गृध्रास्यांयै नमः स्वाहा ।
७. ॐ काकतुण्डिकायै नमः स्वाहा ।
८. ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः स्वाहा ।
९. ॐ हयग्रीवायै नमः स्वाहा ।
१०. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा ।
११. ॐ शरभाननायै नमः स्वाहा ।
१२. ॐ उलूकिकायै नमः स्वाहा ।
१३. ॐ शिवारावायै नमः स्वाहा ।
१४. ॐ मयूर्यै नमः स्वाहा ।
१५. ॐ विकटाननायै नमः स्वाहा ।
१६. ॐ अष्टवक्रायै नमः स्वाहा ।
१७. ॐ कोटराक्ष्यै नमः स्वाहा ।
१८. ॐ कुब्जायै नमः स्वाहा ।
१९. ॐ विकटलोचनायै नमः स्वाहा ।
२०. ॐ शुष्कोदर्यै नमः स्वाहा ।
२१. ॐ ललज्जिह्वायै नमः स्वाहा ।
२२. ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः स्वाहा ।
२३. ॐ वानराननायै नमः स्वाहा ।
२४. ॐ रुक्षाक्ष्यै नमः स्वाहा ।

२५. ॐ केकराक्ष्यै नमः स्वाहा ।
२६. ॐ बृहत्तुण्डायै नमः स्वाहा ।
२७. ॐ सुराप्रियायै नमः स्वाहा ।
२८. ॐ कपालहस्तायै नमः स्वाहा ।
२९. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा ।
३०. ॐ शुक्यै नमः स्वाहा ।
३१. ॐ श्येन्यै नमः स्वाहा ।
३२. ॐ कपोतिकायै नमः स्वाहा ।
३३. ॐ पाशहस्तायै नमः स्वाहा ।
३४. ॐ दण्डहस्तायै नमः स्वाहा ।
३५. ॐ प्रचण्डायै नमः स्वाहा ।
३६. ॐ चण्डविक्रमायै नमः स्वाहा ।
३७. ॐ शिशुघ्न्यै नमः स्वाहा ।
३८. ॐ पापहन्त्र्यै नमः स्वाहा ।
३९. ॐ काल्यै नमः स्वाहा ।
४०. ॐ रुधिरपायिन्यै नमः स्वाहा ।
४१. ॐ वसाधयायै नमः स्वाहा ।
४२. ॐ गर्भभक्षायै नमः स्वाहा ।
४३. ॐ शवहस्तायै नमः स्वाहा ।
४४. ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः स्वाहा ।
४५. ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्वाहा ।
४६. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः स्वाहा ।
४७. ॐ सर्पास्यायै नमः स्वाहा ।
४८. ॐ प्रेतवाहनायै नमः स्वाहा ।
४९. ॐ दन्दशूककरायै नमः स्वाहा ।
५०. ॐ क्रौंच्यै नमः स्वाहा ।
५१. ॐ मृगशीर्षायै नमः स्वाहा ।
५२. ॐ वृषाननायै नमः स्वाहा ।
५३. ॐ व्यात्तास्यायै नमः स्वाहा ।
५४. ॐ धूमनिः श्वासायै नमः स्वाहा ।
५५. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः स्वाहा ।
५६. ॐ तापिन्यै नमः स्वाहा ।
५७. ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः स्वाहा ।
५८. ॐ कोटर्यै नमः स्वाहा ।
५९. ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्वाहा ।
६०. ॐ विद्युत्प्रभायै नमः स्वाहा ।
६१. ॐ बलाकास्यायै नमः स्वाहा ।
६२. ॐ मार्जार्यै नमः स्वाहा ।
६३. ॐ कटपूतनायै नमः स्वाहा ।
६४. ॐ अट्टाट्टहासायै नमः स्वाहा ।
६५. ॐ कामाक्ष्यै नमः स्वाहा ।
६६. ॐ मृगाक्ष्यै नमः स्वाहा ।
६७. ॐ मृगलोचनायै नमः स्वाहा ।

इति गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीनां पूजनम् एवं होमः ॥

अथैकपञ्चाशत्क्षेत्रपालदेवतानां पूजनम् एवं होमः ॥

१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा ।
२. ॐ अजराय नमः स्वाहा ।
३. ॐ व्यापकाय नमः स्वाहा ।
४. ॐ इन्द्रचौराय नमः स्वाहा ।
५. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः स्वाहा ।
६. ॐ उक्षाय नमः स्वाहा ।
७. ॐ कूष्माण्डाय नमः स्वाहा ।
८. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ बटुकाय नमः स्वाहा ।
१०. ॐ विमुक्ताय नमः स्वाहा ।
११. ॐ लिप्तकाय नमः स्वाहा ।
१२. ॐ लिलाकाय नमः स्वाहा ।
१३. ॐ एकदंष्ट्राय नमः स्वाहा ।
१४. ॐ ऐरावताय नमः स्वाहा ।
१५. ॐ ओषधिघ्नाय नमः स्वाहा ।
१६. ॐ बन्धनाय नमः स्वाहा ।
१७. ॐ दिव्यकाय नमः स्वाहा ।
१८. ॐ कम्बलाय नमः स्वाहा ।
१९. ॐ भीषणाय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ गवयाय नमः स्वाहा ।
२१. ॐ घण्टाय नमः स्वाहा ।
२२. ॐ व्यालाय नमः स्वाहा ।
२३. ॐ अणवे नमः स्वाहा ।
२४. ॐ चन्द्रवारुणाय नमः स्वाहा ।
२५. ॐ पटाटोपाय नमः स्वाहा ।
२६. ॐ जटालाय नमः स्वाहा ।
२७. ॐ क्रतवे नमः स्वाहा ।
२८. ॐ घण्टेश्वराय नमः स्वाहा ।
२९. ॐ विटङ्काय नमः स्वाहा ।
३०. ॐ मणिमानाय नमः स्वाहा ।
३१. ॐ गणबन्धवे नमः स्वाहा ।
३२. ॐ डामराय नमः स्वाहा ।
३३. ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः स्वाहा ।
३४. ॐ स्थविराय नमः स्वाहा ।
३५. ॐ दन्तुराय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ धनदाय नमः स्वाहा ।
३७. ॐ नागकर्णाय नमः स्वाहा ।
३८. ॐ महाबलाय नमः स्वाहा ।
३९. ॐ फेत्काराय नमः स्वाहा ।
४०. ॐ चीकराय नमः स्वाहा ।
४१. ॐ सिंहाय नमः स्वाहा ।
४२. ॐ मृगाय नमः स्वाहा ।
४३. ॐ यक्षाय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ मेघवाहनाय नमः स्वाहा ।
४५. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः स्वाहा ।
४६. ॐ अनलाय नमः स्वाहा ।
४७. ॐ शुक्लतुण्डाय नमः स्वाहा ।
४८. ॐ सुधालापाय नमः स्वाहा ।

४९. ॐ बर्बरकाय नमः स्वाहा । ५०. ॐ पवनाय नमः स्वाहा ।
५१. ॐ पावनाय नमः स्वाहा ।

इति क्षेत्रपालदेवतानां पूजनम् एवं होमः ॥

अथ सर्वतोभद्रमण्डलदेवतानां पूजनम् एवं होमः ॥

१. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
२. ॐ सोमाय नमः स्वाहा ।
३. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा ।
४. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ।
५. ॐ अग्नये नमः स्वाहा ।
६. ॐ यमाय नमः स्वाहा ।
७. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा ।
८. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ वायवे नमः स्वाहा ।
१०. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा ।
११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहा ।
१२. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः स्वाहा ।
१३. ॐ अश्विभ्यां नमः स्वाहा ।
१४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा ।
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहा ।
१६. ॐ भूतनागेभ्यो नमः स्वाहा ।
१७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः स्वाहा ।
१८. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा ।
१९. ॐ नन्दीश्वराय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ शूलमहाकालाभ्यां नमः स्वाहा ।
२१. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः स्वाहा ।
२२. ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा ।
२३. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा ।
२४. ॐ स्वधासहित पितृभ्यो नमः स्वाहा ।
२५. ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः स्वाहा ।
२६. ॐ गणपतये नमः स्वाहा ।
२७. ॐ अभ्द्यो नमः स्वाहा ।
२८. ॐ मरुभ्द्यो नमः स्वाहा ।
२९. ॐ पृशि[illegible] नमः स्वाहा ।
३०. ॐ गङ्गादिन[illegible]भ्यो नमः स्वाहा ।
३१. ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः स्वाहा ।
३२. ॐ भेरवे नमः स्वाहा ।
३३. ॐ गदायै नमः स्वाहा ।
३४. ॐ त्रिशूलाय नमः स्वाहा ।
३५. ॐ वज्राय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ शक्तये नमः स्वाहा ।
३७. ॐ दण्डाय नमः स्वाहा ।
३८. ॐ खड्गाय नमः स्वाहा ।
३९. ॐ पाशाय नमः स्वाहा ।

४०. ॐ अङ्कुशाय नमः स्वाहा ।
४१. ॐ गौतमाय नमः स्वाहा ।
४२. ॐ भरद्वाजाय नमः स्वाहा ।
४३. ॐ विश्वामित्राय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा ।
४५. ॐ जमदग्नये नमः स्वाहा ।
४६. ॐ वसिष्ठाय नमः स्वाहा ।
४७. ॐ अत्रये नमः स्वाहा ।
४८. ॐ अरुन्धत्यै नमः स्वाहा ।
४९. ॐ ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा ।
५०. ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा ।
५१. ॐ ब्राह्यै नमः स्वाहा ।
५२. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा ।
५३. ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा ।
५४. ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा ।
५५. ॐ माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ।
५६. ॐ वैनायक्यै नमः स्वाहा ।

इति सर्वतोभद्रमण्डलदेवतानां पूजनम् एवं होमः ॥

मण्ड़प पूजनम्

ॐ [१] अमृतम्भोनिधये नमः

१. ॐ रत्नद्वीपाय नमः
२. ॐ नानावृक्षमहोद्यानाय नमः
३. ॐ कल्पवाटिकायै नमः
४. ॐ सन्तानवाटिकायै नमः
५. ॐ हरिश्चन्दनवाटिकायै नमः
६. ॐ मन्दारवाटिकायै नमः
७. ॐ पारिजातवाािटकायै नमः.
८. ॐ कदम्बवाटिकायै नमः
९. ॐ पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः
१०. ॐ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
११. ॐ गोमेधक रत्नप्राकाराय नमः
१२. ॐ वज्ररत्नप्राकाराय नमः
१३. ॐ वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
१४. ॐ इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
१५. ॐ मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
१६. ॐ मरकतरत्नप्राकाराय नमः
१७. ॐ विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
१८. ॐ माणिक्यमण्डपाय नमः
१९. ॐ सहस्रस्तंभमण्डपाय नमः
२०. ॐ अमृतवापिकायै नमः
२१. ॐ आनन्दवापिकायै नमः
२२. ॐ विमर्शवापिकायै नमः
२३. ॐ बालातपोद्गाराय नमः
२४. ॐ चन्द्रिकोद्गाराय नमः

---

१. – प्रणवेन विहीनं यत्तत्मन्त्रं प्राणहीनकम् । सर्वमन्त्रेषु मन्त्राणां प्राणः प्रणव उच्यते ॥

२५. ॐ महाश्रृङ्गारपरिखायै नमः
२६. ॐ महापद्माटव्यै नमः
२७. ॐ चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः
२८. ॐ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः
२९. ॐ दक्षिणाम्नायमयदक्षिणद्वाराय नमः
३०. ॐ पश्चिमाम्नायमयपश्चिमद्वाराय नमः
३१. ॐ उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
३२. ॐ रत्नप्रदीपवलयाय नमः
३३. ॐ मणिमयसिंहासनाय नमः
३४. ॐ ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः
३५. ॐ विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः
३६. ॐ रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः
३७. ॐ ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः
३८. ॐ सदाशिवमयैकमञ्चफलकाय नमः
३९. ॐ हंसतूलिकातल्पाय नमः
४०. ॐ हंसतूलिकामहोपधानाय नमः
४१. ॐ कौसुम्भास्तरणाय नमः
४२. ॐ महावितानकाय नमः
४३. ॐ महामायायवनिकायै नमः
४४. तत्र नानारत्नखचितं मुक्ताद्यलंकृतं सिंहासनं स्मरेत् ।

ततः पूर्वद्वारे – ॐ गं गणपतये नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । दक्षिणद्वारे – ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः । ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः । पश्चिमद्वारे – ॐ वं वटुकाय नमः । ॐ यं यमुनायै नमः । उत्तरद्वारे – ॐ अस्त्राय फट् – इति पूर्वादिदिक्षु द्वारेषु देवान् आवाह्य गन्धाक्षतपुष्पैः पूजयेत् । अशक्तौ तु – ॐ द्वारदेवताभ्यो नमः – इति मन्त्रेण पूजयेत् ।

अथ विनियोग :–

'ॐ श्रीम्' इति बीजाभ्यां तीर्थजलेन त्रिवारं करशुद्धिं कुर्यात् ।

ततः – हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य, श्रीआनन्द-कर्दमचिल्कीदेन्दिरा सुता महर्षयः, श्रीदेवता आद्यास्त्रिस्त्रोनुष्टुभः, पञ्चमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ ततोऽष्टानुष्टुभः, द्वादशी निचृदनुष्टुप् त्रयोदशीचतुर्दश्यावनुष्टुभौ, अन्त्या आस्तारपङ्क्तिः, न्यासे विनियोगः[1] ।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरा सुत ऋषिभ्यो नमः शिरसि ।

---

१. प्रातःकालेऽथवा पूजासमये होमकर्मणि । जपकाले समस्ते वा विनियोगः पृथक् पृथक् ॥

ॐ अनुवादिछन्दोभ्यो नमः — मुखे। ॐ श्रीदेवतायै नमः — हृदये। ॐ हिरण्यवर्णामिति बीजाय नमः — गुह्ये। ॐ कांसोस्मितामिति शक्तये नमः — पादयोः। ॐ बिन्दुः कीलकाय नमः — नाभौ। ॐ ममाभीष्टलक्ष्मीप्राप्त्यर्थे न्यासे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

अथ षडङ्गकरन्यासः –

ॐ हिरण्यवर्णाम् — अङ्गुष्ठयोः। ॐ हरिणीम् — तर्जन्योः। ॐ सुवर्णरजतस्रजाम्-मध्यमयोः। ॐ चन्द्रां हिरण्मयीम् — अनामिकयोः। ॐ लक्ष्मीम्-कनिष्ठिकयोः। ॐ जातवेदो म आवाह — करतलकरपृष्ठयोः।

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः –

ॐ हिरण्यवर्णाम्-हृदयाय नमः। ॐ हरिणीम्-शिरसे स्वाहा। ॐ सुवर्णरजतस्रजाम् — शिखायै वषट्। ॐ चन्द्रां हिरण्मयीम् — कवचाय हुम्। ॐ लक्ष्मीम् — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जातवेदो म आवाह — अस्त्राय फट्।

अथ षडङ्गकरन्यासः –

ॐ हिरण्यवर्णायै नमः — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सुवर्णायै नमः — तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रजतस्रजायै नमः — मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै नमः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हिरण्मय्यै नमः — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः — करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः –

ॐ हिरण[१]मय्यै नमः — हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः — शिरसे स्वाहा। ॐ रजतस्रजायै नमः — शिखायै वषट्। ॐ हिरण्यस्रजायै नमः — कवचाय हुम्। ॐ हिरण्याक्षायै नमः — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः — अस्त्राय फट्।

---

१. विद्यार्णवतन्त्रे–हिरण्मयी च चन्द्रा च तृतीया रजतस्रजा। हिरण्याद्या स्रजा त्वन्या हिरण्या च तथापरा। हिरण्यवर्णा चैताभिः कुर्यादङ्गानि षट् क्रमात् ॥

ॐ श्रियै नमः — शिरसि। ॐ लक्ष्म्यै नमः — नेत्रयोः। ॐ वरदायै नमः — कर्णयोः। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः — नासिकयोः। ॐ वसुदायै नमः — मुखे। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः - गण्डयोः। ॐ स्वर्णमालिन्यै नमः — कण्ठे। ॐ स्रजायै नमः — ओष्ठयोः। ॐ सुवर्णगृहायै नमः — दक्षिणबाहौ। ॐ स्वर्णप्राकारायै नमः — वामबाहौ। ॐ पद्मवासिन्यै नमः — स्तनयोः। ॐ पद्महस्तायै नमः — दक्षिणहस्ते ! ॐ पद्मप्रियायै नमः — वामहस्ते। ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः — हृदये। ॐ सूर्यायै नमः — उदरे। ॐ चन्द्रायै नमः — नाभौ। ॐ बिल्वप्रियायै नमः — दक्षिणकरे। ॐ ईश्वर्यै नमः — वामकरे। ॐ भुक्त्यै मुक्त्यै नमः — कुक्षिद्वये। ॐ विभूत्यै वृद्ध्यै नमः कटिद्वये। ॐ समृध्यै नमः गुह्ये। ॐ तुष्ट्यै पुष्ट्यै नमः — उरुद्वये। ॐ गङ्गायै धनेश्वर्यै नमः — जानुद्वये। ॐ शुद्धायै भोगिन्यै नमः — गुल्फद्वये। ॐ भोगदायै धात्र्यै नमः — पादद्वये। ॐ विधात्र्यै नमः - सर्वाङ्गे। उपरिभागे — ॐ साम्राज्यलक्ष्म्यै नमः। पुरतः ॐ सागरजायै नमः। पृष्ठे - ॐ कमलायै नमः। दक्षिणभागे — ॐ द्विजराजसहोदर्यै नमः। वामभागे — ॐ जयप्रदायै नमः। पाताले — ॐ विजयप्रदायै नमः। मध्ये — ॐ सर्वसौभाग्यदायै नमः। 'ॐ भूर्भुवः स्वरोम्' इति दिग्बन्धनम्।

श्री सूक्तन्यासः विनियोग —

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्री सूक्तस्य आनन्दकर्दम चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः आद्यानां तिसृणामनुष्टुपच्छन्द, चतुर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पंचमी — षष्ठ्योस्त्रिष्टुप्छन्द, ततोऽष्टानामनुष्टुपछन्द, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः न्यासे पठे (हवने) च विनियोगः।

१. ॐ हिरण्यवर्णाम्० इस मन्त्र से दाहिने हाथ से बाएं हाथ का स्पर्श करे।
२. ॐ तां मऽआवह० इस मन्त्र से बाएं हाथ से दाहिने हाथ का स्पर्श करे।
३. ॐ अश्व पूर्वाम्० इस मन्त्र से बाएं पैर का स्पर्श करे।
४. ॐ कां सोस्मिताम० इस मन्त्र से दाहिने पैर का स्पर्श करे।
५. ॐ चन्द्रां प्रभासाम्० इस मन्त्र से बाएं जंघा का स्पर्श करे।

६. ॐ आदित्य वर्णे॰ इस मन्त्र से दाहिने जंघा का स्पर्श करे।

७. ॐ उपैतु माम्॰ इस मन्त्र से बाएं कटिभाग (कमर) का स्पर्श करे।

८. ॐ क्षुप्तिपासामलाम्॰ इस मन्त्र से दाहिने कटि-प्रदेश का स्पर्श करे।

९. ॐ गंधद्वाराम्॰ इस मन्त्र से नाभि का स्पर्श करे।

१०. ॐ मनसः काममाकूतिम॰ इस मन्त्र से हृदय का स्पर्श करे।

११. ॐ कर्दमेन प्रजाभूता॰ इस मन्त्र से वाम भुजा का स्पर्श करे।

१२. ॐ आपः सृजन्तु॰ इस मन्त्र से दक्षिण भुजा का स्पर्श करे।

१३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्॰ इस मन्त्र से कण्ठ का स्पर्श करे।

१४. ॐ आर्द्रां यः करिणीम्॰ इस मन्त्र से मुख का स्पर्श करे।

१५. ॐ तां मऽआवह॰ इस मन्त्र से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे।

१६. ॐ यः शुचि प्रयतोभूत्वा॰ इस मन्त्र से सिर का स्पर्श करे।

अथ षडङ्गन्यासः –

१. ॐ कर्दमेन प्रजाभूता॰ इस मन्त्र से हृदय को स्पर्श करे।

२. ॐ आपः सृजन्तु॰ इस मन्त्र से सिर को स्पर्श करे।

३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्॰ इस मन्त्र से शिखा को स्पर्श करे।

४. ॐ आर्द्रां यष्करिणीम्॰ इस मन्त्र से दोनों भुजाओं को स्पर्श करे।

५. ॐ तामऽआवह॰ इस मन्त्र से दोनों नेत्रों को स्पर्श करे।

६. ॐ यः शुचि प्रयतो भूत्वा॰ इस मन्त्र से सिर के उपर से हाथ घुमाकर "अस्त्राय फट् कहे। (बायें हाथ की हथेली पर मध्यमा तथा तर्जनी से ताली बजाये। इस प्रकार कर पश्चात् अपने चारों ओर चुटकी बजावे)।

ॐ श्राम् – हृदयाय नमः। ॐ श्रीम् – शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूम् – शिखायै वषट्। ॐ श्रैम् – कवचाय हुम्। ॐ श्रौम् – नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

ॐ ह्राम् – अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीम् – तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूम् – मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैम् – अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौम् – कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

(१) ॐ हिरण्यवर्णाम	भगवत्यै	म[१]हालक्ष्म्यै नमः	शिर[२]सि
(२) ॐ तां म ऽ आवह	"	"	नेत्रयोः
(३) ॐ अश्वपूर्णाम्	"	"	कर्णयोः
(४) ॐ कांसोस्मिताम्	"	"	नासिकयोः
(५) ॐ चन्द्रां प्रभासाम्	"	"	मुखे
(६) ॐ आदित्यवर्णे	"	"	कण्ठे
(७) ॐ उपैतु माम्	"	"	बाह्वोः
(८) ॐ क्षुत्पिपासा	"	"	हृदये
(९) ॐ गन्धद्वाराम्	"	"	नाभौ
(१०) ॐ मनसः कामम्	"	"	गुह्ये
(११) ॐ कर्दमेन प्रजा	"	"	पादयोः
(१२) ॐ आपः सृजन्तु	"	"	ऊर्वोः
(१३) ॐ आर्द्रां पुष्करणीम्	"	"	जान्वोः
(१४) ॐ आर्द्रां यष्करणीम्	"	"	जङ्घयोः
(१५) ॐ तां म आवह.	"	"	पादयोः
(१६) ॐ यः शुचिः प्रयतो	"	"	सर्वाङ्गेषु

(१) ॐ कर्दमेन प्रजा	भगवत्यै	महालक्ष्म्यै नमः	हृदयाय नमः
(२) ॐ आपः सृजन्तु	"	"	शिरसे स्वाहा
(३) ॐ आर्द्रां पुष्करणीम्	"	"	शिखायै वषट्
(४) ॐ आर्द्रां यष्करणीम्	"	"	कवचाय हुम्
(५) ॐ तां म आवह.	"	"	नेत्रत्रयाय वौषट
(६) ॐ यः शुचिः प्रयतो	"	"	अस्त्राय फट्

---

(१) भगवत्यै महालक्ष्म्यै नमः इतिप्रतिमन्त्रान्ते योजयेदिति पृथ्वीधराचार्यभाष्यकारमतम् ।

(२) मस्तकलोचनश्रुतिघ्राणवदनकण्ठबाहुद्वयहृदयनाभिगुह्यपायूरुजानुजङ्घेषु । श्रीसूक्तैकैकर्च 'क्रमशो न्यसेत्' इति सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषदि ।

ततः कुशैः श्रीसूक्तप्रतिमन्त्रेण 'मार्जयामि' इत्यध्यारेण सह मार्जनं करणीयम्। एवं समग्रं श्रीसूक्तं पठित्वा अघमर्षणं कृत्वा तज्जलं स्ववामतः प्रक्षिप्योत्थाय ऊर्ध्वबाहुः श्रीसूक्ततेनोपस्थानं कुर्यात्। ततः स्वात्मनि श्रीसूक्तेन महालक्ष्मी संपूजयेदिति संप्रदायः।

ध्यानम् –

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी, गम्भीरावर्तनाभि-स्तनभरनमिताशुभ्रवस्त्रोत्तरीया। लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुंभैर्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥

अथ पाद्यादिपात्रस्थापनपूजनम्

पूर्व नवकोष्ठात्मिकां भूमिं संपाद्य पूर्वादितो मध्ये च पाद्यादिपात्राणामुत्तरक्रमेण संस्थाप्य एवं पञ्चपञ्चामृतपात्राणां स्थापनं कृत्वा विदिक्षु सुगन्धिततैलादिसुगन्धितद्रव्याणि निधाय स्थापनक्रमेण नवसु पात्रेषु सद्रव्येषु नवदेवताः पूजयेत् – ॐ विद्यायै नमः। ॐ अविद्यायै नमः। ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ मायायै नमः। ॐ तेजस्विन्यै नमः। ॐ प्रबोधिन्यै नमः। ॐ सत्याय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। इति संपूज्य गायत्र्याऽभिमृशेत्।

अथ पूजाकलशार्चनम्[1]

स्ववामभागे पूजाकलशं संस्थाप्य तत्र 'ॐ इमं मे वरुणेति' मन्त्रेण वरुणं संपूज्य गायत्र्या दशवारमभिमन्त्र्य 'ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ इति तीर्थान्यावाह्य 'ॐ कलशस्य मुखे विष्णु' इति विष्णवादीनामावाहयेत्। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः।

---

(१) पञ्चरात्रे – सौवर्णं कलशं रम्यं रौप्यं ताम्रमथापि वा। निर्दोषं मृण्मयं वापि चन्दनेन विलेपितम्॥ गन्धपुष्पाक्षताकीर्णं कुशदूर्वाङ्कुरार्चितम्। सितसूत्रावृतं कण्ठे नववस्त्रयुगावृतम्। कन्याकर्तितसूत्रेण त्रिगुणेन च कर्मणा। गुणतत्त्रयात्मकेनैव वेष्टयेदभितः स्वयम्॥

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ मातृगणेभ्यो नमः। ॐ सागरेभ्यो नमः। ॐ सप्तद्वीपवसुन्धरायै नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ वेदांगेभ्यो नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। इत्यावाह्य संपूजयेत्।

अथ पीठपूजा

ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्त्यै नमः॥ ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधासमुद्राय नमः। ॐ श्वेतद्वीपाय नमः। ॐ स्वर्णपर्वताय नमः। ॐ नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ कल्पवृक्षवनाय नमः। ॐ स्वर्णप्राकाराय नमः। ॐ करुणातोयपरिखायै नमः। ॐ स्वर्णमंडपाय नमः।

पूर्वद्वारे — ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ कालतत्वाय नमः। ॐ अम्बिकायै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ वेदमात्रे नमः। ॐ शैलपुत्र्यै नमः। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ॐ चण्डघण्टायै नमः। ॐ स्कन्दमात्रे नमः। ॐ कात्यायिन्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः।

दक्षिणद्वारे — ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ सिद्धायै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ विद्यातत्वाय नमः। ॐ जगन्मात्रे नमः। ॐ मायायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ ह्रीं कारायै नमः। ॐ क्लीं कारायै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः। ॐ वीरायै नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ दण्डधराय नमः।

पश्चिमद्वारे — ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ शंखायुधायै नमः। ॐ हंसवाहिन्यै नमः। ॐ जगज्जीवायै नमः। ॐ जगद्बीजायै नमः। ॐ षोडशकलायै नमः। ॐ पूर्णकलशाय नमः।

ॐ चित्रिण्यै नमः। ॐ चित्रमालायै नमः। ॐ चित्रायै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः।

उत्तरद्वारे – ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ कपालधारिण्यै नमः। ॐ भक्तवत्सज्योत्स्नायै नमः। ॐ कल्याण्यै नमः। ॐ शर्वाण्यै नमः। ॐ चन्द्रकलायै नमः। ॐ चन्द्रवदनायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। ॐ परमविभूत्यै नमः। ॐ भस्मधारिण्यै नमः। ॐ पावनायै नमः। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ भागीरथ्यै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ प्रवरायै नमः। ॐ प्रणतायै नमः। ॐ क्रां कारायै नमः। ॐ क्रीं कारायै नमः। ॐ क्रौं कारायै नमः। ॐ सर्वबीजात्मने नमः। ॐ बीजप्रवाहिन्यै नमः।

मध्ये – ॐ रत्नवेदिकायै नमः। ॐ रत्नसिंहासनाय नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वराय नमः। ॐ श्वेतच्छत्राय नमः। ॐ चिच्छक्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वेभ्यो नमः। ॐ तत्वरूपायै कर्णिकायै नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सं सोममण्डलाय नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं राजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ आत्मतत्वाय नमः। ॐ मायातत्वाय नमः। ॐ विद्यातत्वाय नमः। ॐ कालतत्वाय नमः। ॐ परतत्वाय नमः।

केसरेषु पूर्वादिक्रमेण –

ॐ विभूत्यै नमः। ॐ उन्नत्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ हृष्ट्यै नमः। ॐ कीर्त्यै नमः। ॐ सन्नत्यै नमः। ॐ व्युष्ट्यै नमः। ॐ उत्कृष्ट्यै नमः। ॐ मत्यै नमः। ॐ ऋध्यै नमः।

ततः – ॐ श्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। ॐ महालक्ष्मीयोगपीठाय नमः। इति समस्तपीठं सम्पूज्य कर्णिकायां पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

अथाग्न्युत्तारणम् –

देविप्र[१]तिमां सुवर्णादिपात्रे निधाय मधुघृताभ्यामभ्यज्य 'ॐ अश्मन्नूर्जम्' इत्यनुवाकेन श्रीसूक्तेन च दुग्धमिश्रितजलेन केवलदुग्धेन वा अभिषेकं कृत्वा प्रतिमां बहिर्निष्काश्य स्वच्छनवीनपट्टवस्त्रादिना सम्प्रोञ्च्छ् य यन्त्रोपरि विन्यस्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् –

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं श्रीमहालक्ष्म्यादिदेवताप्रीत्यर्थं प्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुःसामछन्दोभ्यो नमो मुखे। ॐ प्राणशक्तिदेवतायै नमः – हृदये। ॐ आं बीजाय नमः – गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः – पादयोः। ॐ क्रों कीलकाय नमः—नाभौ। ॐ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः – सर्वाङ्गे।

ॐ ह्रांम् – अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीम् – तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैंम्-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ततः – ध्यायेत् – ध्यायेल्लक्षमीं प्रहसितमुखीं राज्यसिंहासनस्थां मुद्राशक्तिं सकलविनुतां सर्वसंसेव्यमानाम्। अग्नौ पूज्यामखिल जननीं हेमवर्णां हिरण्यां भाग्योपेतां भुवनसुखदां भार्गवीं भूतिधात्रीम्॥ इति ध्यात्वा प्रतिमाया उपरि हस्तं निधाय प्राणप्रतिष्ठाबीजानि पठेत् – ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं

---

(१) तत्रादौ ब्राह्मणद्वारा श्रीसूक्तस्य अष्टौ चत्वारः द्वौ एको वा पाठं कारयित्वा कुलालगृहे गत्त्वा कुलालं वस्त्रादिना संपूज्य निमन्त्रयेत् – ॐ कुलालभाण्डसृष्टिज्ञ चक्रभ्रमणनैपुण। निमन्त्रितोसीन्दराय मूर्तिनिर्माणहेतवे॥ सृष्टिकर्ता यथा ब्रह्मा सावित्री सहितः स्वयम्। तथा त्वं भाण्डकर्तासि पूजितः शुभदो भव॥ ततः कुलालचक्रं संपूज्य प्रार्थयेत् – सुदर्शनं यथा चक्रं विष्णोर्लोकहिताय च। तद्वत्कुलालचक्रस्त्वं पूजितं मे शुभं कुरु॥

सं हं क्षं सः जीव इह स्थितः । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः । श्रोत्रत्वकचक्षुर्जिह्वाघ्राणपादपायूपस्था इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेतीति कश्च न ॥ ततः प्रणवं षोडशवारं जपेत् ।

ततः – एकाग्रचित्तो भूत्वा दक्षिणहस्ते कमलादिनानापुष्पसमन्वितः पुष्पाहारं गृहीत्वोत्थाय प्रार्थयेत् –

समस्तसंपतत्सुखदां महाश्रियं समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्तकल्याणकरी महाश्रियं भजाम्यहं ज्ञानकरी महाश्रियम् ॥१ ॥
समस्तभूतान्तरसंस्थिता त्वं समस्तभूतेश्वरि विश्वरूपे ।
तन्नास्ति यत्वद्व्यतिरिक्तवस्तु त्वतपपादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥२ ॥
दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः ॥३ ॥
अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या मां त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमं कुरुष्व ।
आलोकनप्रणयिहृद्गतशोकहन्त्री त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणयाम्यहं श्रीः ॥४ ॥
शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।
शान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥५ ॥
विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यसिद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
दयासुपुष्टिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे करे श्रीः ॥६ ॥
न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लिसद्भक्तिचिन्तामणिकामधेनो ।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥७ ॥
माता पिता त्वं गुरुसद्गतिः श्रीस्त्वमेवसञ्जीवनहेतुभूता ।
अन्यं न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्व मम देवि सत्यम् ॥८ ॥
अशेषवाग्जाड्यमलापहारिणीं नवं नवं स्पष्टसुवाकप्रदायिनि ।
ममैहि जिह्वाग्रसुरङ्गनर्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ॥९ ॥
वागर्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं वयः स्थिरत्वं ललनासुभोगम् ।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि जन्मजन्मनि ॥१० ॥

समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी समस्तविघ्नोद्धरणे विचक्षणा ।
अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी हिरण्मये मे वदने प्रसन्ना ॥११ ॥
ततः — यथाद्यु पचारैरर्चयेत् —

अथार्चन प्रकारः

आयाहि वरदे देवि मण्डलोपरि सर्वदा। पूजां गृहाण देवेशि शत्रूणां क्षयकारिणी ॥ पाद्यादिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते लोकहेतवे। स्वीकृत्य सुभगे देवि श्रियं देहि रिपून् दह ॥ कृताञ्जलिः सन् प्रार्थयेत — देवेशि भक्तिसुलभे परिवार समन्विते, यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ध्यानम् ।

आवाहनम् :—

इन्द्रादिदेवगणमौलिकिरीटिकोटिरत्नाङ्कुरैः सततरञ्जितपादपीठम् ।
दुःखाभिभूतजनदुर्गतिनाशिनीं त्वामावाहयामि कृपया भव सम्मुखीना ॥
ॐ दुर्गेकात्यायनि देवि शाम्भवि शंकर प्रिये ।
मया भक्त्या कृतां पूजां गृहाण त्वं महेश्वरि ॥
हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोमआवह० ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि इति दद्यात् ॥

आसनम् :—

मुक्ताप्रवालमणिलोहितपद्मरागकान्त्युल्लसद्रुचिररत्नमयं सुरम्यम् ।
राजीवपत्रनयने दयया सुपीठमेनं गृहाण कमले विनिवेदितं मे ॥
ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणि विराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रति गृह्यताम् ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निंदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
श्री महा सरस्वत्यै नमः श्री रेतते आसनं नमः ॥

स्वागतं एवं पाद्यं :-

स्वागतं कुशलं प्रच्छे महादेव्यै महेश्वरि ।
सुस्वागतेत्वया भद्रे कृपया भक्त वत्सले ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
महासरस्वत्यै नमः श्री रेतते स्वागतं नमः ।
सन्तापनोदनपरं बहुभक्तिभावचित्तेन हेमकलशे विहितं पवित्रे ।
त्वत्पादपद्मयुगले विनिवेदितं मे पाद्यं गृहाण जगदीश्वरि लोकवन्द्ये ॥
ॐ गङ्गादितीर्थ सम्भूतं गंध पुष्पाक्षतैर्युतम ॥
पाद्यं ददाम्यहं तुभ्यं नमस्ते कमलालये ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥श्री रेतते पाद्यं नमः ।

अर्घ्यं :-

भ्राजिष्णुहाटकविनिर्मितपात्रमध्ये संस्थापितं कुसुमगन्धसुवासितं च।
भक्त्योपनीतमचिरेण सुरभ्यमेवमर्घ्यं गृहाण कृपया पतितस्य देवि॥
अष्टगंध समायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपूरितम्।
अर्घ्यं ददाम्यहं तुभ्यं प्रसीदत्वं सुरेश्वरि॥
कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामि होप ह्वये श्रियम्॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥
लोकमात्रे नमः श्री रेषतेऽर्घ्यः स्वाहा॥

आचमनं :-

आनन्दमन्थरपुरन्दरदेववृन्दैरभ्यर्चिताङ्घ्रियुगले करुणार्द्रचित्ते।
भव्यं सुगन्धमाचमनं गृहाण भक्तयार्पितं कमलभूषितहस्तयुक्ते॥
ॐ सर्वलोकस्य या माता या माता लोक[illegible]विनी।
ददाम्याचमनंतस्यै महालक्ष्म्यै प्रयत्नतः॥
चन्द्रा प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽअलक्ष्मी में नश्यतां त्वां वृणे॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः।
स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥
वरदायै नमः श्री रेतत आचमनीयं सुधा॥

मधुपर्क :-

दधिमधुसमायुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ॥
कपिलादधि कुन्देन्दुधवलं मधु संयुतम् ।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्याअलक्ष्मीः ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
भक्त प्रियायै नमः श्री रेष ते मधुपर्कः सुधा ॥

आचमनं :-

ॐ कर्पूरवासितं वारि निर्मलं शुद्धिहेतुकम् ।
गृहाण परमेशानि पुनराचमनीयकम् ॥
आदित्य वर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्याअलक्ष्मीः ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
भक्त प्रियायै नमः श्री रेतत आचमनीयं नमः ॥

स्नानं :-

काश्मीरचूर्णमृगनाभिविमिश्रितेन पूतेन हेमकलशस्थसुशीतलेन ।
तीर्थोदकेन शिशुना विनिवेदितेन स्नानं विधेहि सफलं कुरु मे श्रमत्वम् ॥
ॐ एहि पादुकया देवि स्नानार्थं स्नान मण्डपम् ।
स्नानशाटीं गृहीत्वा तु स्नानासनसमागता ॥

सुगन्धितैल गव्यादि पञ्चामृत जलादिकम् ।
सुगन्धिश्लक्ष्ण चूर्णं च तथोद्वर्तनकादिकम् ॥
नानातीर्थोद्भवं तोयं स्नानीयं च गृहाण मे ।
प्रत्यग्रसूर्यकिरणोपमतुल्यकान्तिं प्रौढोल्लसल्ललितगन्धयुतं सुरम्यम् ॥
आखण्डलप्रमुखदेवगणैः सुपूज्ये भक्त्या गृहाण मम कुङ्कुमदिव्यचूर्णम् ।
आदित्यवर्णेतपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ॥
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्याअलक्ष्मीः ।
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ॥
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ।
भक्त प्रियायै नमः श्री रेतते स्नानीयं नमः । आपोहिष्ठेति मलापकर्ष्णम् ॥

(१) ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः । (२) ॐ ता न ऊर्जे दधातन । (३) ॐ महे रणाय चक्ष से । (४) ॐ योवः शिवतमो रसः । (५) ॐ तस्य भाजयतेह नः । (६) ॐ उशतीरिव मातरः । (७) ॐ तस्मा अरं गमामवः (८) ॐ यस्यक्षयायजिन्वथ ।

पञ्चामृत स्नानं :–

मार्गश्रमापहमतीवसुगन्धयुक्तं पञ्चामृतस्नपनमम्ब रमे सुरम्यम् ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि मामकीनमङ्गीकुरुष्व कुरुणां कुरु मे सुपूज्ये ॥
ॐ पयोदधि घृतं चैव शर्करा मधु संयुतम् ।
पञ्चामृतं मयानातं गृहाण परमेश्वरि ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्याअलक्ष्मीः ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरिता त्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सतत नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
भद्रायै नमः श्री रेतते पञ्चामृतस्नानं नमः।
शुद्धोदकेन स्नानम्। जातवेदसे, इति पुनराचमनीयम् ॥
पञ्चोपचारै सम्पूज्य निर्माल्यंविश्रिज्य पुनः सम्पूज्य।
अभिषेकं कुर्यात श्री सूक्तम पुरूष स्मताम् ॥

शुद्धोदक स्नानं – (शुद्ध जल से स्नान कराये)

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा ॥
यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।
गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ॥
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।
अभिषेक शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि ॥

पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ् सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥
पुरुष एवेद ँ् सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ १० ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत ॥ ११ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ १३ ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

॥ पुरुषसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १ ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥ १७ ॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ १८ ॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ १९ ॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥ २० ॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥ २१ ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ २२ ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥ २३ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ २४ ॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ २५ ॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ २६ ॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥ २७ ॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ २८ ॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ २९ ॥

॥ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

वस्त्रं :-

सूक्ष्मतन्तुभवं वस्त्रं निर्मितं विश्वकर्मणा ।
लोकलज्जाहरं देवि गृहाण सुरसत्तमे ॥
ॐ दिव्याम्बरं नवं श्वेत क्षौमं चातिमनोहरम् ।
त्रैलोक्यजननि देवि दीयमानं गृहाण मे ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेवसिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमोदेव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः एतते वस्त्र युग्मं नमः ॥
आचमनीयम् यज्ञोपवीतमन्य आचमनीयम्
ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते यव सहजं पुरस्तात्
आयुष्यमग्रंथ प्रतिमुश्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः

अलंङ्कार :-

रत्नस्वर्ण विकारं च देहसौभाग्यविवर्धनम् ।
शोभाधारं श्रीकरं च भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥
चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारके ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः कज्जलं समर्पयामि ॥
मुक्ताफलयुतां मालां रत्नवैडूर्यसुप्रभाम् ।
माणिक्यस्वर्णग्रथितां गृह्यतां वरदे नमः ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः सुवर्णा दमालां समर्पयामि ।
सौभाग्यसूत्र व्ररदे सुवर्णमणिसंयुते ॥
कण्ठे बघ्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि ॥
ताडपत्रं मया देवि हेमनिर्मितमुत्तमम् ।
कर्णाभ्यां भूषणं देवि गृहाण जगदम्बिके ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः कर्णभूषणं समर्पयामि ।
हारकं कण्ठकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः विशिष्टालङ्कारान् समर्पयामि ।
एहि देवि विभूषार्थं नेपथ्यागार मुत्तमम् ।
विभूषासनमास्थाय तथा दर्श विलोक्यच ॥
केश प्रसाधनं कृत्वा भूषणान्यङ्ग सात् कुरु ।
रत्न कङ्कण वैडूर्य मुक्ताहारादिकानि च ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीं यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वे व सिन्धु दुरितात्यग्निः ॥
नमोदेव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्मताम् ॥
हिरण्यायै नमः श्री रेतानि ते भूषणानि नमः ॥

गंध :– (केशरमिश्रित चन्दन, रक्तचन्दन)

रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥
एहि देवि निजंस्थानिं सिंहासन मनुत्तमम् ।
पूजा चक्रं समास्थाय गन्धं देव्यङ्गसातकुरु ॥

चन्दना गुरु कर्पूर कुंकुमाद्यैः समन्वितम् ।
कस्तूरीरोचनायुतं गन्धं देवि गृहाण मे ॥
गंध द्वारां दुराघर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेवसिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
श्री रेष ते गंधो नमः ॥

हरिद्रां :–

हरिद्रां च मायानीतां देवि कल्याणदायिनि ।
सौभाग्यवर्धना नित्यं गृहाण हरिवल्लभे ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ।
हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि ।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यतत्र दुःखशान्ति प्रयच्छ मे ॥
हरिप्रियायै नमः श्री रेतत्ते हारिद्रं नमः ॥

कुंकुम :–

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम् ।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥
कुंकुमं शोभनं दिव्यं सर्वदा मङ्गलप्रदम् ।
मयानीतं महादेवि तुभ्यं दास्यामि सुन्दरि ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम ॥
मङ्गलायै नमः श्री रेतत्ते कुंकुमं नमः ॥

सिन्दूरम् :-

सिन्दूरं शुभदं नित्यं महाशक्ति प्रियं सदा ।
प्रयच्छामि महादेवि सर्व सौभाग्यदायिनि ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
महादेव्यै नमः श्रीरेतत्ते सिन्दूरं नमः ॥

अक्षते :-

गङ्गाजलेन परिधौतमलं सुदीप्तं नानासुगन्धयुतकुङ्कुमरञ्जितं च ।
श्रीसोमरश्मिधवले कृपया गृहाण पूज्ये सुरैः सततमक्षतमालिकां मे ॥
शुद्धमुक्ताफलाभैस्तैरक्षतैः शशिसन्निभैः ।
सर्वाधिपे महालक्ष्मी द्योंतयामि सुभक्तितः ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेवसिन्धुं दुरितात्यग्नि ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
देव्यै नमः श्री रेतते अक्षताः नमः ॥

पुष्पाणि :-

उद्यानराजिषु विराजितपादपेभ्यो बीजाक्षरं तवमुहुर्जपतासुरम्यम् ।
सन्त्रोटितं विविधगन्धयुतं प्रफुल्लं पुष्पं गृहाण जगदीश्वरि बालकस्य ॥

अनेकपुष्पसंयुक्तं संख्याषोडशसंयुतम् ।
आनन्दिनन्दिनोत्पन्नं पद्मायै कुसुमं नमः ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः चित्रविचित्रषोडशपुष्पाणि समर्पयामि ।
मालती मल्लिकादीनि नवानि कुसमाणि च ।
एकनाथे प्रयच्छामि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
एक नाथायै नमः श्री रेतानि पुष्पाणि वौषट् ॥

पुष्पमाला :–

रक्तैः श्वेताम्बुजैः पुष्पैर्मल्लिकादिविचित्रितैः ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि प्रसीदत्वं सुरेश्वरि ॥
पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ।
पूजार्थं ग्रथिता तुभ्यं मालेयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
श्रीरेषा ते पुष्पमाला नमः ॥

अथ पुष्पपूजा :–

ॐ लक्ष्म्यै नमः सुवर्णपुष्पं समर्पयामि । ॐ ऐरावतस्थितायै नमः पद्मपुष्पं स० । ॐ लोकवन्दितायै नमः सेवन्तिका पुष्पं स० । ॐ वैष्णव्यै नमः गोकर्णपुष्प स० । ॐ विद्युल्लतायै नमः मुनिपुष्पं स० । ॐ सिद्धिदायै नमः जपापुष्पं स० ।

ॐ वेदमात्रे नमः केतकीपुष्पं स॰ । ॐ जयायै नमः जातीपुष्पं स॰ । ॐ इन्दिरायै तगरपुष्पं स॰ । ॐ प्रकृत्यै नमः कवीरपुष्पं स॰ । ॐ शान्त्यै नमः धत्तूरपुष्पं स॰ । ॐ ऋध्यै नमः पारिजातपुष्प स॰ । ॐ सिध्यै नमः बकुलपुष्पं स॰ । ॐ तुष्ट्यै नमः विष्णुक्रान्तपुष्पं स॰ । ॐ करवीरक्षेत्राधिपत्यायै नमः चम्पकपुष्पं समर्पयामि ।

परिमल द्रव्य :-

सुगन्धं शीतलं शुभ्रं नाना गन्धं समन्वितम् ।
प्रीत्यर्थं तव देवेशि संच्चूर्णं प्रतिगृह्यताम् ॥
चन्दनागरुकर्पूरकुङ्कुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धाश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
सुभगायै नमः श्रीरेतत्ते परिमलद्रव्यं नमः ।

दूर्वादिपूजा :-

विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियपत्रां सुशोभनीम् ।
क्षीरसागरसभूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥

दिकं ततो दत्वा भावपुष्पैः प्रपूजयेत् । समेखलां पद्ममालां पुष्प नानाविधं तथा । सप्तदीपसमुद्भूतं दद्याद्देव्यै सुसाधकः । प्रदीपमुज्जलं कृत्वा महालक्ष्म्यै निवेदयेत् । नैवेद्यं षड्रसोपेतं महादेव्यै निवेदयेत् । दधिक्षीरसागरं च नानामूलफलानि च । भक्ष्यं भोज्यं तथा चोष्यं लेह्यं पेयं च चर्वणम् । रत्नपात्रे परिष्कृत्य ताम्बूलं च निवेदयेत् । ब्रह्माण्डोद्भववस्तूनि चर्व्यचोष्यादिकानि च । फलपुष्पं तथा गन्धं वस्त्रालङ्कारमेव च । तत्सर्वं मनसा चैव महालक्ष्म्यै निवेदयेत् । नगर्यां पथि हट्टे वा दृष्टवा द्रव्यं मनोहरम् । तत्सर्वं मनसा देवि महालक्ष्म्यै निवेदयेत् ।

शिवार्चनचन्द्रिकायाम् – अखण्डास्तण्डुला धौता अक्षताः परिकीर्तिताः । श्वेता शम्भौ तदन्यत्र कुङ्कु माक्ताः स्मृता बुधैः । विभवे रत्नमुक्ताद्यैरक्षतैरर्चयेत्सुरान् ।

(१) असूत्रग्रथितं पुष्पं मधुनाभ्युक्षितैश्च तु । अवालुकायुतं तोयं सर्वं पर्युषितं भवेत् ॥

त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासुरैः।
सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः दू[१]र्वांकुरान् समर्पयामि। ॐ श्रियै नमः दूर्वा स०। ॐ लक्ष्म्यै नमः दूर्वा स०। ॐ कालिकायै नमः दूर्वा स०। ॐ महाकाल्यै नमः दूर्वा स०। ॐ विकराल्यै नमः दूर्वा स०। ॐ त्रैलोक्यजनन्यै नमः दूर्वा स०। ॐ एकनाथायै नमः दूर्वा स०। ॐ रेणुकायै नमः दूर्वा स०। ॐ राममात्रे नमः दूर्वा स०। ॐ शिवायै नमः दूर्वा स०। ॐ भूतनाथायै नमः दूर्वा स०। ॐ भक्तवत्सलायै नमः दुर्वा स०। ॐ भवान्यै नमः दूर्वा स०। ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः दूर्वा स०। ॐ विश्वरूपिण्यै नमः दूर्वा स०। ॐ सर्वाण्यै नमः दूर्वा समर्पयामि।

दू[२]र्वाषोडशकं चैव प्रवालाद्यष्टकं तथा।
अष्टौ अष्टौ गृहीत्वा तु मालतीसाक्षतैस्तथा।
फलं षोडशकं देवि गृहाण वरदा भव॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः मालतीपुष्पाणि अक्षतान् च समर्पयामि। ॐ श्रियै नमः पद्मपत्रं स०। ॐ लक्ष्म्यै नमः दूर्वापत्रं स०। ॐ पद्मायै नमः तुलसीपत्र[३] स०। ॐ धात्र्यै नमः बिल्वपत्रं[४] स०। ॐ रमायै नमः चम्पकपत्रं स०। ॐ वरदायै नमः बकुलपत्रं स०। ॐ लोकमात्रे नमः मालतीपत्रं स०। ॐ चतुर्भुजायै नमः जातीपत्रं स०। ॐ ऋध्यै नमः आम्रपत्रं स०। ॐ सिध्यै नमः मल्लिकापत्रं स०। ॐ पुष्ट्यै नमः अपामार्गपत्रं स०। ॐ तुष्ट्यै नमः अशोकपत्रं स०। ॐ इन्दिरायै नमः कबीरपत्रं स०। ॐ हरिप्रियायै नमः बदरीपत्रं स०। ॐ भूत्यै नमः दाडिमीपत्रं स०।

---

(१) नैव छिन्द्याद्रवौ दूर्वाम्' इति आह्निकसंग्रहवचनात्।

(२) भविष्ये – काण्डानि षोडशादाय यत्संख्यानक्षतानथ। श्रीसुक्तैरर्चयेद्देवीं काण्डादक्षत्रमीति च। ततः पुष्पाणि सङ्गृह्य पूजयेन्नामभिः पृथक् चञ्चलायै नमः पादावन्ते कुसुमं नमः॥

(३) विना तुलस्या स्नानाङ्ग श्राद्धयज्ञार्चनं प्रिये। न संपूर्णफलं प्राहुः सर्व एव विपश्चितः॥ सुन्दरीभैरवीकालीब्रह्मविष्णुविवस्वताम्। विना तुलस्याया पूजा सा पूजा निष्फला भवेत्॥ सावित्रीं च भवानीं च दुर्गादेवीं सरस्वतीम्। योऽर्चयेत्तुलसीपत्रैः सर्वकामैः स मेधते॥

(४) अमारिक्तासु सङ्क्रान्तावष्टम्यामिन्दुवासरे।
बिल्वपत्रं न च च्छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकं व्रजेत्॥

ॐ ईश्वर्यै नमः अगस्तिपत्रं स०। ॐ पार्वत्यै नमः धत्तूरपत्रं स०। ॐ शान्तिरूपिण्यै नमः सेवन्तिकापत्रं स०। ॐ देव्यै नमः सिन्दूरपत्रं स०। ॐ शिवायै नमः शमीपत्रं स.। ॐ भवान्यै नमः कदलीपत्रं समर्पयामि।

अथाङ्गपूजा :-

ॐ चञ्चलायै न[१]मः पादौ पूजयामि। ॐ चपलायै नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ कान्त्यै नमः जानुनी पूजयामि। ॐ मङ्गलायै नमः जङ्घे पूजयामि। ॐ भद्रकाल्यै नमः उरू पूजयामि। ॐ कमलिन्यै नमः कटिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः नाभिं पूजयामि। ॐ क्षमायै नमः उदरं पूजयामि। ॐ गौर्यै नमः हृदयं पूजयामि। ॐ सिंहवाहिन्यै नमः स्तनद्वयं पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः भुजद्वयं पूजयामि। ॐ कम्बुकण्ठायै नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ सरस्वत्यै नमः मुखं पूजयामि। ॐ सुवासिन्यै नमः नासिकां पूजयामि। ॐ स्वर्णकुण्डलायै नमः कर्णद्वयं पूजयामि। ॐ चण्डायै नमः नेत्रद्वयं पूजयामि। ॐ शिवायै नम ललाटं पूजयामि। ॐ कुमार्यै नमः शिरः पूजयामि। ॐ सर्वरूपिण्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

वाराहपुराणान्तर्गताष्टोत्तरशतमहालक्ष्मीनाममन्त्रैः देव्युपरि कमलपुष्प-प्रक्षेपः कार्यः –

ॐ प्रकृत्यै नमः १. ॐ विकृत्यै नमः २. ॐ विद्यायै नमः ३. ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः ४. ॐ श्रद्धायै नमः ५. ॐ विभूत्यै नमः ६. ॐ सुरभ्यै नमः ७. ॐ परमात्मिकायै नमः ८. ॐ वाचे नमः ९. ॐ पद्मालयायै नमः १०. ॐ पद्मायै नमः ११. ॐ शुच्यै नमः १२. ॐ स्वाहायै नमः १३. ॐ स्वधायै नमः १४. ॐ सुधायै नमः १५. ॐ धान्यायै नमः १६. ॐ हिरण्मय्यै नमः. १७. ॐ लक्ष्म्यै नमः १८. ॐ नित्यपुष्टायै नमः १९. ॐ विभावर्यै नमः २०. ॐ अदित्यै नमः २१. ॐ दित्यै नमः २२. ॐ दीप्तायै नमः २३. ॐ वसुधायै नमः २४. ॐ वसुधारिण्यै

---

(१) शान्तौ पूजने च नमो वदेत्॥ वौष्ट् संमोहनोद्दीपपुष्टिमृत्युञ्जयेषु च। हुंकारं प्रीतिनाशे च छेदने मारणे तथा॥ उच्चाटने च विद्वेषे तथा धीविकृतो तु फट्। विघ्नग्रहविनाशे च हुंफट्कारं प्रयोजयेत्॥ मन्त्रोदीपनकार्ये च लाभालाभे वषट् स्मृतम्।

नमः २५. ॐ कमलायै नमः २६. ॐ कान्तायै नमः २७. ॐ कामाक्ष्यै नमः २८. ॐ क्रोधसंभवायै नमः २९. ॐ अनुग्रहप्रदायै नमः ३०. ॐ बुद्ध्यै नमः ३१. ॐ आद्यायै नमः ३२. ॐ हरिवल्लभायै नमः ३३. ॐ अशोकायै नमः ३४. ॐ अमृतायै नमः ३५. ॐ दीप्तायै नमः ३६. ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः ३७. ॐ धर्मनिलयायै नमः ३८. ॐ करुणायै नमः ३९. ॐ लोकमात्रे नमः ४०. ॐ पद्मप्रियायै नमः ४१. ॐ पद्महस्तायै नमः ४२. ॐ पद्माक्षायै नमः ४३. ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः ४४. ॐ पद्मोद्भवायै नमः ४५. ॐ पद्ममुख्यै नमः ४६. ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः ४७. ॐ रमायै नमः ४८. ॐ पद्ममालाधरायै नमः ४९. ॐ देव्यै नमः ५०. ॐ पद्मिन्यै नमः ५१. ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः ५२. ॐ पुष्पगन्धायै नमः ५३. ॐ सुप्रसन्नायै नमः ५४. ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः ५५. ॐ प्रभायै नमः ५६. ॐ चन्द्रवदनायै नमः ५७. ॐ चन्द्रायै नमः ५८. ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः ५९. ॐ चतुर्भुजायै नमः ६०. ॐ चन्द्ररूपायै नमः ६१. ॐ इन्दिरायै नमः ६२. ॐ इन्दुशीतलायै नमः ६३. ॐ आह्लादजनन्यै नमः ६४. ॐ पुष्ट्यै नमः ६५. ॐ शिवायै नमः ६६. ॐ शिवकर्यै नमः ६७. ॐ सत्यै नमः ६८. ॐ विमलायै नमः ६९. ॐ विश्वजनन्यै नमः ७०. ॐ दारिद्रयनाशिन्यै नमः ७१. ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः ७२. ॐ शान्तायै नमः ७३. ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः ७४. ॐ श्रियै नमः ७५. ॐ भास्कर्यै नमः ७६. ॐ बिल्वनिलयायै नमः ७७. ॐ परारोहायै नमः ७८. ॐ यशस्विन्यै नमः ७९. ॐ उदाराङ्गायै नमः ८०. ॐ वसुन्धरायै नमः ८१. ॐ हरिण्यै नमः ८२. ॐ हेममालिन्यै नमः ८३. ॐ धनधान्यकर्यै नमः ८४. ॐ सिद्धायै नमः ८५. ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः ८६. ॐ शुभप्रदायै नमः ८७. ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः ८८. ॐ वरदलक्ष्म्यै नमः ८९. ॐ वसुप्रदायै नमः ९०. ॐ शुभायै नमः ९१. ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः ९२. ॐ समुद्रतनयायै नमः ९३. ॐ जयायै नमः ९४. ॐ मंगलायै नमः ९५. ॐ विष्णुवक्षस्थलस्थिरायै नमः ९६. ॐ विष्णुपत्न्यै नमः ९७. ॐ प्रशन्नाक्ष्यै नमः ९८. ॐ प्रसन्नाननायै नमः ९९. ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः १००. ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः १०१. ॐ सर्वोपद्रववारिण्यै नमः १०२. ॐ नवदुर्गायै नमः

१०३. ॐ महाकाल्यै नमः १०४. ॐ ब्रह्मा विष्णु शिवात्मिकायै नमः १०५. ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः १०६. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः १०७. ॐ कार्यसाधिकायै नमः १०८.

अथावरणपूजा :–

(१) **विन्दौ** – ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीं पूजयामि। दक्षिणपार्श्वे – ॐ शङ्करानन्दनाथ नमः शङ्करनन्दनं पूजयामि। ॐ शंखनिधये नमः शङ्खनिधिं पूजयामि। वामपार्श्वे – ॐ पुष्पाञ्जलिपुठाय नमः पुष्पाञ्जलिपुठं पूजयामि। ॐ पुष्पधन्विने नमः पुष्पधन्विनं पूजयामि। ॐ पद्मनिधये नमः पद्मनिधिं पूजयामि। पुरतः – ॐ दक्षिणपादप्रक्षालनोद्यतायै नमः दक्षिणपादप्रक्षालनोद्यतां पूजयामि। ॐ जन्हुसुतायै नमः जन्हुसुतां पूजयामि। वामपादप्रक्षालनोद्यतायै नमः वामपादप्रक्षालनोद्यतां पूजयामि। ॐ सूर्यसुतायै नमः सूर्यसुतां पूजयामि। पृष्ठतः – ॐ वरुणायै नमः वरुणां पूजयामि। इति पञ्चोपचारैः संपूज्य – ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

(२) **त्रिकोणे** – ॐ पद्मायै नमः पद्मां पूजयामि। ॐ कमलायै नमः कमलां पूजयामि। ॐ इन्दिरायै नमः इन्दिरां पूजयामि। ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

(३) **षट्कोणे** – आग्नेये – ॐ हिरण्मय्यै नमः हिरण्मयीं पूजयामि। ईशाने – ॐ चन्द्रायै नमः चन्द्रां पूजयामि। नैर्ऋत्ये – ॐ रजतस्त्रजायै नमः रजतस्त्रजां पूजयामि। वायव्ये – ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः हिरण्यस्त्रजां पूजयामि। देव्या अग्रतः – ॐ हिरण्यवर्णायै नमः हिरण्यवर्णां पूजयामि। पुरतः आरभ्य चतुर्दिक्षु – ॐ हिरण्यवर्णायै नमः हिरण्यवर्णां पूजयामि।

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

(४) **अष्टपत्रे** – ततः पुरत आरभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेणाष्टदलमध्येषु – ॐ महाकन्यायै नमः महाकन्यां पूजयामि। ॐ महादेव्यै नमः महादेवीं पूजयामि। ॐ भक्तानुग्रहकारिण्यै नमः भक्तानुग्रहकारिणीं पूजयामि।

ॐ स्वप्रकाशात्मरूपिण्यै नमः स्वप्रकाशात्मरूपिणीं पूजयामि । ॐ महामायायै नमः महामायां पूजयामि । ॐ महेश्वर्यै नमः महेश्वरीं पूजयामि । ॐ वागीश्वर्यै नमः वागीश्वरीं पूजयामि । ॐ जगद्धात्र्यै नमः जगद्धात्रीं पूजयामि । ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

(५) **दशपत्रेषु** – ॐ उमायै नम : उमां पूजयामि । ॐ महाकाल्यै नमः महाकालीं पूजयामि । ॐ महासरस्वत्यै नमः महासरस्वतीं पूजयामि । ॐ दुर्गायै नमः दुर्गां पूजयामि । ॐ गङ्गायै नमः गङ्गां पूजयामि । ॐ यमुनायै नमः यमुनां पूजयामि । ॐ महाशौर्यै नमः महाशौरीं पूजयामि । ॐ गायत्र्यै नमः गायत्रीं पूजयामि । ॐ रमायै नमः रमां पूजयामि । ॐ त्रिलोचनायै नमः त्रिलोचनां पूजयामि । ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

(६) **द्वादशपत्रेषु** – ॐ भद्रकाल्यै नमः भद्रकालीं पूजयामि । ॐ त्रिलोकात्मिकायै नमः त्रिलोकात्मिकां पूजयामि । ॐ क्रियालक्ष्म्यै नमः क्रियालक्ष्मीं पूजयामि । ॐ लोकमार्गप्रदायिन्यै नमः लोकमार्गप्रदायिनीं पूजयामि । ॐ अरूपायै नमः अरूपां पूजयामि । ॐ सरूपायै नमः सरूपां पूजयामि । ॐ विश्वरूपिण्यै नमः विश्वरूपिणीं पूजयामि । ॐ पञ्चभूतात्मिकायै नमः पञ्चभूतात्मिकां पूजयामि । ॐ देवमात्रे नमःदेवमातरं पूजयामि । ॐ सुरेश्वर्यै नमः सुरेश्वरीं पूजयामि । ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः दारिद्र्यध्वंसिनीं पूजयामि । ॐ सर्वशक्त्यै नमः सर्वशक्तिं पूजयामि । ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

(७) **चतुर्दशपत्रेषु** – ॐ भैरव्यै नमः भैरवीं पूजयामि । ॐ विशालाक्ष्यै नमः विशालाक्षीं पूजयामि । ॐ रुक्मिण्यै नमः रुक्मिणीं पूजयामि । ॐ नारायण्यै नमः नारायणीं पूजयामि । ॐ मित्रविन्दायै नमः मित्रविन्दां पूजयामि । ॐ पद्माक्ष्यै नमः पद्माक्षीं पूजयामि । ॐ क्षेमकर्यै नमः क्षेमकरीं पूजयामि । ॐ सत्यायै नमः सत्यां पूजयामि । ॐ कालिन्दयै नमः कालिन्दीं पूजयामि । ॐ विजयायै नमः विजयां पूजयामि । ॐ कान्तिमत्यै नमः कान्तिमतिं पूजयामि । ॐ रूपिण्यै नमः रूपिणीं पूजयामि । ॐ शारदायै नमः शारदां

पूजयामि । ॐ वेण्यै नमः वेणीं पूजयामि । ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

(८) **षोडशपत्रे –** ॐ बलाकायै नमः बलाकां पूजयामि । ॐ विमलायै नमः विमलां पूजयामि । ॐ नवमालिकायै नमः नवमालिकां पूजयामि । ॐ विभीषिकायै नमः विभीषिकां पूजयामि । ॐ शाङ्कर्यै नमः शाङ्करीं पूजयामि । ॐ वसुमालिकायै नमः वसुमालिकां पूजयामि । ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः मुक्तालङ्कारां पूजयामि । ॐ वरदायै नमः वरदां पूजयामि । ॐ मुक्त्यै नमः मुक्तिं पूजयामि । ॐ सर्वशास्त्रधारिण्यै नमः सर्वशास्त्रधारिणीं पूजयामि । ॐ समुद्रवसनायै नमः समुद्रवसनां पूजयामि । ॐ ब्रह्माण्डमणिमेखलायै नमः ब्रह्माण्डमणिमेखलां पूजयामि । ॐ अवस्थात्रयनिर्मुक्तायै नमः अवस्थात्रयनिर्मुक्तां पूजयामि । ॐ गुणत्रयविवर्जितायै नमः गुणत्रयविवर्जितां पूजयामि । ॐ योगध्यानैकसंन्यासिन्यै नमः योगध्यानैकसंन्यासिनीं पूजयामि । ॐ योगध्यानैकपरायणायै नमः योगध्यानैकपरायणां पूजयामि । ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥

(९) **अष्टादशपत्रे** – ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः आद्यलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः विद्यालक्ष्मीं पूजयामि । ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः सौभाग्यलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः अमृतलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ कामलक्ष्म्यै नमः कामलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः सत्यलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः भोगलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ योगलक्ष्म्यै नमः योगलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ मुक्तिदात्र्यै नमः मुक्तिदात्रीं पूजयामि । ॐ ऋद्ध्यै नमः ऋद्धिं पूजयामि । ॐ समृद्ध्यै नमः समृद्धिं पूजयामि । ॐ तुष्ट्यै नमः तुष्टिं पूजयामि । ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिं पूजयामि । ॐ धनेश्वर्यै नमः धनेश्वरीं पूजयामि । ॐ श्रद्धायै नमः श्रद्धां पूजयामि । ॐ भोगिन्यै नमः भोगिनीं पूजयामि । ॐ धान्यायै नमः धान्यां पूजयामि । ॐ वेदत्रयविशोकायै नमः वेदत्रयविशोकां पूजयामि । ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्ः ॥

(१०) **विंशतिपत्रे** – ॐ वेदान्तज्ञानरूपिण्यै नमः वेदान्तज्ञानरूपिणीं पूजयामि। ॐ नागयज्ञोपवीतिन्यै नमः नागयज्ञोपवीतिनीं पूजयामि। ॐ शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीं पूजयामि। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः ब्रह्मचारिणीं पूजयामि। ॐ चित्रघण्टायै नमः चित्रघण्टां पूजयामि। ॐ कूष्माण्डायै नमः कूष्माण्डां पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः स्कन्दमातरं पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः कात्यायनीं पूजयामि। ॐ कालरात्र्यै नमः कालरात्रीं पूजयामि। ॐ महागौर्यै नमः महागौरीं पूजयामि। ॐ सिध्दिदायै नमः सिध्दिदां पूजयामि। ॐ सर्वात्मिकायै नमः सर्वात्मिकां पूजयामि। ॐ विश्वप्रसूत्यै नमः विश्वप्रसूतिं पूजयामि। ॐ रसायै नमः रसां पूजयामि। ॐ नवखण्डवत्यै नमः नवखण्डवतीं पूजयामि। ॐ क्षित्यै नमः क्षितिं पूजयामि। ॐ अनन्तायै नमः अनन्तां पूजयामि। ॐ धरायै नमः धरां पूजयामि। ॐ सर्वसंहारायै नमः सर्वासंहारां पूजयामि। ॐ कैवल्यदायै नमः कैवल्यदां पूजयामि। ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान् मां शरणागतम् भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्॥

(११) **द्वाविंशतिपत्रे** – ॐ वेदिकायै नमः वेदिकां पूजयामि। ॐ वेदरूपिण्यै नमः वेदरूपिणीं पूजयामि। ॐ गिरिसंभवायै नमः गिरिसंभवां पूजयामि। ॐ सूर्यमण्डलसंस्थितायै नमः सूर्यमण्डलसंस्थितां पूजयामि। ॐ सोममण्डलमध्यस्थायै नमः सोममण्डलमध्यस्थां पूजयामि। ॐ वायुमण्डलस्थायै नमः वायुमण्डलस्थां पूजयामि। ॐ वह्निमण्डलसंस्थायै नमः वह्निमण्डलसंस्थां पूजयामि। ॐ शक्तिमण्डलसंस्थायै नमः शक्तिमण्डलसंस्थां पूजयामि। ॐ चक्रिकायै नमः चक्रिकां पूजयामि। ॐ चक्रमध्यसंस्थितायै नमः चक्रमध्यसंस्थितां पूजयामि। ॐ चक्रमार्गप्रदायै नमः चक्रमार्गप्रदां पूजयामि। ॐ सर्वसिद्धान्तमार्गप्रदायै नमः सर्वसिद्धान्तमार्गप्रदायिनीं पूजयामि। ॐ षड्वर्गवर्जितायै नमः षड्वर्गवर्जितां पूजयामि। ॐ प्रत्यक्षादिप्रमावृतायै नमः प्रत्यक्षादिप्रमावृतां पूजयामि। ॐ विद्यामूर्तायै नमः विद्यामूर्तां पूजयामि। ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै नमः त्रैलोक्यमोहिनीं पूजयामि। ॐ विद्यायै नमः विद्यां पूजयामि। ॐ चर्मदायै नमः चर्मदां पूजयामि। ॐ रक्षायै नमः रक्षां पूजयामि। ॐ ब्रह्मस्थापितरूपायै नमः

ब्रह्मस्थापितरूपां पूजयामि । ॐ कैवल्यज्ञानगोचरायै नमः कैवल्यज्ञानगोचरां पूजयामि । ॐ करुणायै नमः करुणां पूजयामि । ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यमेकादशावरणार्चनम् ॥

(१२) **चतुर्विंशतिपत्रे** – ॐ नित्यशुद्धायै नमः नित्यशुद्धां पूजयामि । ॐ नित्यतृप्तायै नमः नित्यतृप्तां पूजयामि । ॐ निर्विकारायै नमः निर्विकारां पूजयामि । ॐ निरीक्षणायै नमः निरीक्षणां पूजयामि । ॐ निराधारायै नमः निराधाराम् पूजयामि । ॐ निस्सङ्कल्पायै नमः निस्सङ्कल्पाम् पूजयामि । ॐ निराश्रयायै नमः निराश्रयां पूजयामि । ॐ निर्विकल्पायै नमः निर्विकल्पां पूजयामि । ॐ निर्यन्त्रायै नमः निर्यन्त्रां पूजयामि । ॐ निर्बीजायै नमः निर्बीजां पूजयामि । ॐ निर्वाणदायिन्यै नमः निर्वाणदायिनीं पूजयामि । ॐ नीरजायै नमः नीरजां पूजयामि । ॐ निखिलायै नमः निखिलां पूजयामि । ॐ निष्कम्पायै नमः निष्कम्पां पूजयामि । ॐ नानास्वरूपचिद्धात्र्यै नमः नानास्वरूपचिद्धात्रीं पूजयामि । ॐ न्यायवस्तुप्रकाशिकायै नमः न्यायवस्तुप्रकाशिकां पूजयामि । ॐ निरञ्जन्यै नमः निरञ्जनीं पूजयामि । ॐ निद्रायै नमः निद्रां पूजयामि । ॐ नयात्मिकायै नमः नयात्मिकां पूजयामि । ॐ नीत्यै नमः नीतिं पूजयामि । ॐ निवृत्त्यै नमः निवृत्तिं पूजयामि । ॐ नृसिंह्यै नमः नृसिंहिं पूजयामि । ॐ निशितृप्तायै नमः निशितृप्तां पूजयामि । ॐ नित्योदितायै नमः नित्योदितां पूजयामि । ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशावरणार्चनम् ।

(१३) **षड्विंशतिपत्रे** – ॐ ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदं पूजयामि । ॐ यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदं पूजयामि । ॐ सामवेदाय नमः सामवेदं पूजयामि । ॐ अथर्ववेदाय नमः अथर्ववेदं पूजयामि । ॐ छन्दोभ्यो नमः छन्दांसि पूजयामि । ॐ ज्यौतिषाय नमः ज्यौतिषं पूजयामि । ॐ निरुक्ताय नमः निरुक्तं पूजयामि । ॐ शिक्षायै नमः शिक्षां पूजयामि । ॐ कल्पाय नमः कल्पं पूजयामि । ॐ व्याकरणाय नमः व्याकरणं पूजयामि । ॐ पुराणेभ्यो नमः पूराणान् पूजयामि । ॐ जम्बूद्वीपाय नमः जम्बूद्वीपं पूजयामि । ॐ प्लक्षद्वीपाय नमः प्लक्षद्वीपं पूजयामि । ॐ कुशद्वीपाय नमः कुशद्वीपं पूजयामि । ॐ क्रौञ्चद्वीपाय

नमः क्रौञ्चद्वीपं पूजयामि। ॐ शाकद्वीपाय नमः शाकद्वीपं पूजयामि। ॐ पुष्करद्वीपाय नमः पुष्करद्वीपं पूजयामि। ॐ अमरावत्यै नमः अमरावतीं पूजयामि। ॐ भोगवत्यै नमः भोगवतीं पूजयामि। ॐ नयनवत्यै नमः नयनवतीं पूजयामि। ॐ सिद्धवत्यै नमः सिद्धवतीं पूजयामि। ॐ गान्धर्ववत्यै नमः गान्धर्ववतीं पूजयामि। ॐ लङ्कावत्यै नमः लङ्कावतीं पूजयामि। ॐ यशोवत्यै नमः यशोवतीं पूजयामि। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं त्रयोदशावरणार्चनम्॥

(१४) **अष्टाविंशतिपत्रे** – ॐ सूर्याय नमः सूर्यं पूजयामि। ॐ चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसं पूजयामि। ॐ भौमाय नमः भौमं पूजयामि। ॐ बुधाय नमः बुधं पूजयामि। ॐ गुरुवे नमः गुरुं पूजयामि। ॐ शुक्राय नमः शुक्रं पूजयामि। ॐ शनये नमः शनिं पूजयामि। ॐ राहवे नमः राहुं पूजयामि। ॐ केतवे नमः केतुं पूजयामि। ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरं पूजयामि। ॐ उमायै नमः उमां पूजयामि। ॐ स्कन्दाय नमः स्कन्दं पूजयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुं पूजयामि। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पूजयामि। ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रं पूजयामि। ॐ यमाय नमः यमं पूजयामि। ॐ कालाय नमः कालं पूजयामि। ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं पूजयामि। ॐ अगनये नमः अग्निं पूजयामि। ॐ अद्भ्यो नमः अपं पूजयामि। ॐ पृथिव्यै नमः पृथिवीं पूजयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुं पूजयामि। ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रं पूजयामि। ॐ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीं पूजयामि। ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिं पूजयामि। ॐ सर्पेभ्यो नमः सर्पान् पूजयामि। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पूजयामि। ॐ गणपत्यादिसप्तलोकपालेभ्यो नमः गणपत्यादिसप्तलोकपालान् पूजयामि। ॐ अभीष्टसिध्दिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्दशावरणार्चनम्॥

(१५) **त्रिंशत्पत्रे** – ॐ अश्विन्यै नमः अश्विनीं पूजयामि। ॐ भरण्यै नमः भरणीं पूजयामि। ॐ कृत्तिकायै नमः कृत्तिकां पूजयामि। ॐ रोहिण्यै नमः रोहिणीं पूजयामि। ॐ मृगशिरायै नमः मृगशिरां पूजयामि। ॐ आर्द्रायै नमः आर्द्रां पूजयामि। ॐ पुनर्वसवे नमः पुनर्वसुं पूजयामि। ॐ पुष्याय नमः पुष्यं पूजयामि। ॐ श्लेषायै नमः श्लेषां पूजयामि। ॐ मघायै नमः मघां पूजयामि।

ॐ पूर्वाफाल्गुन्यै नमः पूर्वाफाल्गुनीं पूजयामि। ॐ उत्तराफाल्गुन्यै नमः उत्तराफाल्गुनीं पूजयामि। ॐ हस्ताय नमः हस्तं पूजयामि। ॐ चित्रायै नमः चित्रां पूजयामि। ॐ स्वात्यै नमः स्वातीं पूजयामि। ॐ विशाखायै नमः विशाखां पूजयामि। ॐ अनुराधायै नमः अनुराधां पूजयामि। ॐ ज्येष्ठायै नमः ज्येष्ठां पूजयामि। ॐ मूलाय नमः मूलं पूजयामि। ॐ पूर्वाषाढाभ्यो नमः पूर्वाषाढां पूजयामि। ॐ उत्तराषाढाभ्यो नमः उत्तराषाढां पूजयामि। ॐ श्रवणाय नमः श्रवणं पूजयामि। ॐ धनिष्ठायै नमः धनिष्ठां पूजयामि। ॐ शतभिषायै नमः शतभिषां पूजयामि। ॐ पूर्वाभाद्रपदाय नमः पूर्वाभाद्रपदं पूजयामि। ॐ उत्तराभाद्रपदाय नमः उत्तराभाद्रपदं पूजयामि। ॐ रेवत्यै नमः रेवतीं पूजयामि। ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः सप्तऋषीन् पूजयामि। ॐ भूरादिसंप्तलोकेभ्यो नमः भूरादिसप्तलोकान् पूजयाामि। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसून् पूजयामि। ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चदशावरणार्चनम् ॥

(१६) **द्वात्रिंशत्पत्रे** – ॐ मेषाय नमः मेषं पूजयामि। ॐ वृषाय नमः वृषं पूजयामि। ॐ मिथुनाय नमः मिथुनं पूजयामि। ॐ कर्काय नमः कर्कं पूजयामि। ॐ सिंहाय नमः सिंहं पूजयामि। ॐ कन्यायै नमः कन्या पूजयामि। ॐ तुलायै नमः तुलां पूजयामि। ॐ वृश्चिकाय नमः वृश्चिकं पूजयामि। ॐ धनाय नमः धनं पूजयामि। ॐ मकराय नमः मकरं पूजयामि। ॐ कुंभाय नमः कुंभं पूजयामि। ॐ मीनाय नमः मीनं पूजयामि। ॐ विष्कम्भादियोगेभ्यो नमः विष्कम्भादियोगान् पूजयामि। ॐ आनन्दाद्यष्टविंशतियोगेभ्यो नमः आनन्दाद्यष्टविंशतियोगान् पूजयामि। ॐ ववादिसप्तकरणेभ्यो नमः ववादिसप्तकरणान् पूजयामि। ॐ स्थिरादिसप्तकरणेभ्यो नमः स्थिरादिसप्तकरणान् पूजयामि। ॐ सप्तवारेभ्यो नमः सप्तवारान् पूजयामि। ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रान् पूजयामि। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यान् पूजयामि। ॐ एकोनपञ्चाशन्मरुद्भ्यो नमः एकोन्पञ्चाशन्मरुतान् पूजयामि। ॐ षोडशमातृभ्यो नमः षोडशमातृकान् पूजयामि। ॐ षड्ऋतुभ्यो नमः षड्ऋतून् पूजयामि। ॐ द्वादशमासेभ्यो नमः द्वादशमासान् पूजयामि।

ॐ द्वयनाभ्यां नमः द्वयनौ पूजयामि । ॐ पञ्चदशतिथिभ्यो नमः पञ्चादशतिथीन् पूजयामि । ॐ षष्टिसंवत्सरेभ्यो नमः षष्टिसंवत्सरान् पूजयामि । ॐ सुपर्णेभ्यो नमः सुपर्णान् पूजयामि । ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षान् पूजयामि । ॐ विद्याधरेभ्यो नमः विद्याधरान् पूजयामि । ॐ अप्सरेभ्यो नमः अप्सरान् पूजयामि । ॐ रक्षोभ्यो नमः रक्षान् पूजयामि । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वान् पूजयामि । ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षोडशावरणार्चनम् ॥

ततो भूगृहे – पूर्वादिक्रमेण – ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रं पूजयामि । ॐ अग्नये नमः अग्निं पूजयामि । ॐ यमाय नमः यमं पूजयामि । ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिं पूजयामि । ॐ वरुणाय नमः वरुणं पूजयामि । ॐ वायवे नमः वायुं पूजयामि । ॐ कुबेराय नमः कुबेरं पूजयामि । ॐ ईशानाय नमः ईशानं पूजयामि । ॐ पश्चिमनिर्ऋतिमध्ये – ॐ अनन्ताय नमः अनन्तं पूजयामि । ॐ पूर्वेशानमध्ये – ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पूजयामि । तत्रैव – ॐ वज्राय नमः वज्रं पूजयामि । ॐ शक्तये नमः शक्तिं पूजयामि । ॐ दण्डाय नमः दण्डं पूजयामि । ॐ खड्गाय नमः खड्गं पूजयामि । ॐ पाशाय नमः पाशं पूजयामि । ॐ अङ्कुशाय नमः अङ्कुशं पूजयामि । ॐ गदायै नमः गदां पूजयामि । ॐ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलं पूजयामि । ॐ चक्राय नमः चक्रं पूजयामि । ॐ पद्माय नमः पद्मं पूजयामि । तत्रैव ॐ ऐरावताय नमः ऐरावतं पूजयामि । ॐ पुण्डरीकाय नमः पुण्डरीकं पूजयामि । ॐ वामनाय नमः वामनं पूजयामि । ॐ कुमुदाय नमः कुमुदं पूजयामि । ॐ अञ्जनाय नमः अञ्जनं पूजयामि । ॐ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तं पूजयामि । ॐ सार्वभौमाय नमः सार्वभौमं पूजयामि । ॐ सुप्रतीकाय नमः सुप्रतीकं पूजयामि । पुनः पूर्वादिक्रमेणाष्टदिक्ष्वष्ट सिद्धीः पूजयेत् – ॐ अणिम्ने नमः अणिमानं पूजयामि । ॐ महिम्ने नमः महिमानं पूजयामि । ॐ गरिम्ने नमः गरिमानं पूजयामि । ॐ लघिम्ने नमः लघिमानं पूजयामि । ॐ प्राप्त्यै नमः प्राप्तीं पूजयामि । ॐ प्राकाम्यै नमः प्राकामीं पूजयामि । ॐ ईशितायै नमः ईशितां पूजयामि । ॐ वशितायै नमः वशितां पूजयामि । ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षोडशावरणार्चनम् ।

धूपादि दद्यात् :–

नानाविधौषधविमिश्रितगन्धयुक्तं श्रीदेवतामनुजदानवसौख्यदं च ।
सौगन्ध्ययुक्तमतुलं जलजाधिवासे धूपं गृहाण कृपया विनिवेदितं मे ।।
ॐ दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दनागुरूसंयुतम् ।
भक्त्या दत्तं मया देवि प्रसीदत्वं महेश्वरि ॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धु दुरितात्यग्निः ॥
नमो दे ै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः श्रीरेषते धूपो नमः ।

दीपकं :–

एकादशतन्तुभिः पुष्पवर्तिकां निक्षिप्य मूलमन्त्रेण प्रज्वाल्य दक्षिणहस्तेन सुप्रज्वालितं दीपपात्रमादाय वामहस्तधृतं घण्टां वादयन्–
कर्पूरमिश्रितघृतैः परिपूर्णाकण्ठं ध्वान्तौघनाशकरणं जगदेकवन्द्ये ।
देदीप्यमानमतुलं स्वदृशा प्रभाभिरङ्गीकुरुष्व कृपया मम दीपमेनम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः साधारणदीपं दर्शयामि ।

अथ विशिष्ट दीपदान प्रकार :–

षोडशदीपान् प्रज्वाल्य संप्रोक्ष्य संपूज्य च – मार्तण्डमण्डलाखण्ड-चन्द्रबिम्बाग्नितेजसम् । गृहाण देवि दीपं मे निर्मितं श्वेतवर्तिभिः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः षोडशदीपान दर्शयामि । तत :–

शारदातिलके – गुग्गुलु अगरूशीरशर्करामधुचन्दनैः। धूपयेदाज्य- संमिश्रैर्नीचैर्देवस्य देशिकः॥ तथैव प्रकारान्तरम् - सिताज्यमधुसंमिश्रं गुग्गुल्वगुरूचन्दनम् । षडङ्गधूपमेतत्तु सर्वदेवप्रियं सदा ॥ 'रागतस्त्वर्पयेद्

ॐ कर्पूरवर्ति संयुक्तं गोघृतेन समन्वितम् ।
दीपं गृहाण देवेशि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥
आप: सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
निच देवीं मातंर श्रियं वासय मे कुले ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेद: ।
सन: पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि: ॥
नमो देव्यै महा देव्यै शिवायै सततं नम: ।
नम: प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम ॥
श्री महालक्ष्म्यै नम: । श्री रेष ते दीपो नम: ।

नैवेद्यं :–

नैवेद्यपात्रं पुरतो विधाय तत्र सामान्यमण्डलं जलादिना कृत्वा तत्र गन्धाक्षतपुष्पादिना संपूज्य यथाशक्त्यनुसारेण मिष्टान्नादिकं परिवेषणं कुर्यात्–

माणिक्यपात्रपरिवेषितलेह्यचोष्यपेयादिवस्तुसहितं विधिवत्सुपक्वम् ।
नानाविधानपरिवर्तितस्वादुगन्धं नैवद्यमेतदुररि कुरु सेवकस्य ॥

नानाविधानि रम्याणि पक्वानि च फलानि तु । स्वादुरस्यानि कमले गृह्यतां फलदानि तु ॥ रंभाफलं रसालं च नारिकेलसमन्वितम् । फलं गृहाणदेवेशि पुत्रपौत्रफलप्रदे ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः – नानाफलानि समर्पयामि । सुस्वादुरससंयुक्तमिक्षुवृक्षरसोद्भवम् । अग्निपक्वमपक्वं वा गुडं वै देवि गृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः गुडं समर्पयामि । सस्यचूर्णोद्भवं पक्वं स्वस्तिकादिसमन्वितम् । मया निवेदितं देवि पिष्टकं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः पिष्टकं समर्पयामि । पार्थिवं वृक्षभेदं च विविधैर्द्रव्य कारणम् । सुस्वादुरससंयुक्तमैक्षणं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ऐक्षणं समर्पयामि । देवतालयपातालभूतलाधारधान्यजम् । षोडशाकारकं नैवेद्यं निवेदयामि ॥ सुवासितं शीतलं च पिपासानाशकारणम् । जगजीवनरूपं च जीवनं देवि गृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः जलपूरितसुवर्णादिकलशं समर्पयामि । ततः 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इति देव्यै अपोशानार्थं जलं दत्वा ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्-अंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यमाभिः– ॐ प्राणाय स्वाहा ।

अंगुष्ठमध्यमानामिकाभिः— ॐ अपानाय स्वाहा। अंगुष्ठानामिकाकनिष्ठाभिः— ॐ व्यानाय स्वाहा। कनिष्ठातर्जन्यंगुष्ठैः — ॐ समानायस्वाहा। सांगुष्ठाभिः सर्वाभिः— ॐ उदानाय स्वाहा। ततः — स्वाग्रे जवनिकां गोदोहनमात्रं दत्वा 'श्रीम्' इति दशवारं जपेत्। एलोशीरलवङ्गादि — कर्पूरपरिवासितम्। प्राशनार्थं हृतं तोयं गृहाण कमले शुभे॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः — मध्ये पानीयं समर्प्य जवनिकामपसार्य ॐ उत्तरापोशनं कर्तुं तोयमुद्धृत्यमुज्वलम्। मया निवेदितं भक्त्या गृहाण कमले शुभे॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः उत्तरापोशनजलं समर्पयामि। ततः ॐ आत्मतत्वव्यापिनी लक्ष्मी' तृप्यतु। ॐ विद्यातत्वव्यापिनी लक्ष्मी तृप्यतु। ॐ शिवतत्वव्यापिनी लक्ष्मी तृप्यतु। ॐ सर्वतत्वव्यापिनी लक्ष्मी तृप्यतु। इत्याचमनं दत्वा हस्तप्रक्षालनादिगण्डूषान् भावनामात्रेण कारयित्वा तज्जलं पूजास्थांनादन्यत्र बहिः प्रक्षिपेत्। अथवा — समस्त 'श्रीसूक्तम्' एकाग्रचित्तेन पठित्वा नैवेद्यम अर्पणं कुर्यादिति संप्रदायः।

ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्य भोज्य समन्विता।
षड्रसै रचित दिव्यं धृतेन परिपूरितम्॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥
पूर्णं मालिन्यै नमः श्री रेतते नैवेद्यं सुधा।
मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनम पुनराचमनीयम्॥
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षती एक पदी द्विपदीसा।
चतुष्पदी अष्टपदी नव पदी वभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहातिवेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

प्रणोदेवी सरस्वती वाजे भिर्वा जिनीवति ।
यज्ञं वषृधिया वसूः वीणा पुस्तक धारिण्यै नमः ॥
श्री रेतत्ते नैवेद्यं नमः ।

करोद्वर्तनम् :-

ॐ कर्पूर चन्दनोन्मिश्रं दिव्यगन्ध समन्वितम् ।
करोद्वर्तनकं नित्यं ग्रहाण परमेश्वरि ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
माहेश्वर्यै नमः श्रीरेतते करोद्वर्तनं नमः ॥
तत ईशानकोणे मण्डलं कृत्वा तत्र नैवेद्यशेषं किञ्चित् संस्थाप्य ॐ उच्छिष्टबलिभोक्त्रीशेषिकायै नमः – इति मन्त्रेण जलं क्षिपेत् ।

फलं :-

ॐ इदं फलं मयादेवि स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सकलावाप्तिर्भ वेज्जन्मनि जन्मनि ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराति । यतो निदहातिवेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो दैव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
सिद्धिदायै नमः । श्री रेतत्ते फलम् ॥

पुनः आचमनीयम् पुंगीफल :-

ॐ पुंगीफलैः सकर्पूरैर्नागबल्लीदलैर्युतम् ।
कर्पूर चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
आर्द्रांयः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।

एलालवङ्गघनसारसुगन्धरम्यं पूजाकुखण्डयुतमास्यसुखप्रदं च ।
ताम्बूलपक्वदलवर्तितवीटकं मे मातर्गृहाण कृपया करुणार्द्रचित्ते ॥
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं. जातवेदो म आवह ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेवसिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
पिङ्गलायै नमः । श्री रेतत्ते **ताम्बूलं** नमः ॥

दक्षिणा द्रव्याणी :–

ॐ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ।
अनन्त पुण्य फल दमतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ दक्षिणां समर्पयामि ।

सुवर्ण पुष्प :–

ॐ जातवेद से सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
राजोपचार देव्यै नमः । श्री रेतते सुवर्ण पुष्पं नमः ।

छत्रं :–

हरिन्मणिगणाबद्धदण्डशक्तिवरप्रदम् ।
सुवर्णकलशं छत्रं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः छत्रं समर्पयामि ।

चामरं :–

वियन्नदीप्रभे हैमे चामरे विशदप्रभे ।
स्वर्णदण्डोपशोभाढ्ये गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः चामरे समर्पयामि ।

मञ्चकं :-

प्रबालनालसद्गात्रं मुक्तामञ्चकमण्डितम् ।
पट्टसूत्रमयं दत्तं गृहाण सरसीरुहे ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः मञ्चकं समर्पयामि ।

दर्पणं :-

सवितृकिरणस्पर्धिस्फुरत्किरणमण्डलम् ।
दर्पणं मुनिभिः क्लृप्तं गृहाण सुरपूजिते ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः दर्पणं समर्पयामि ।

अत्तरं :-

सुगन्धनिर्मितमित्रं पुष्प साररैनेकधा ।
घ्राणाय ते महालक्ष्मि वरदा भव मंगले ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः बहुमूल्योपकल्पित ।
सुगन्धित इत्रं समर्पयामि ॥

व्यजनं :-

शीतवायुप्रदं चैव दाहे च सुखदं परम् ।
कमले गृह्यतां चेदं व्यजनं श्वेतचामरम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः व्यजनं समर्पयामि ।

वसनं :-

देहसौन्दर्यबीजं च सदा शोभाविवर्धनम् ।
कार्पासजं च कृत्रिमं च वसनं देवि गृह्यताम् ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः विशिष्टवसनं समर्पयामि ॥

विशेष द्रव्य :-

यद्यद्द्रव्यमपूर्वं च पृथिव्यामतिदुर्लभम् ।
देवभूषाद्यमौर्ग्यं च तद् द्रव्यं देवि गृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः विशिष्टद्रव्याणि समर्पयामि ।
ब्रह्माण्डमध्यगतवस्तुतवैव देवि किं दक्षिणां तव कृते प्रददामि मातः तत्रापि

भक्तिपरिपूरितचेतसाऽहमेनां ददामि सफलां कुरु दृष्टिपातैः ॐ महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनं :-

ततः – नीराजनदीपं प्रज्वाल्य गन्धपुष्पाक्षतैः सम्पूज्य वामहस्तेन घण्टां वादयन् कर्पूरनिर्मितं दीपं स्वर्णपात्रे निवेशितम्। नीराजनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। ततः देव्याः पादादिमस्तकान्तं त्रिवारं शनैःशनैः परिभ्राम्य पात्रं भूमौ संस्थाप्य एकमाचमनीयं जलं प्रक्षिप्य तत्र स्थिताः सर्वे पुरुषाः बालकाः स्त्रियश्च क्रमेण आरार्तिकं गृह्णीयुः।

ॐ त्वं सूर्यचन्द्ररत्नानि विद्युदग्निस्त्वेमेवहि।
नीराजनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥
यमुनाद्रिवासिन्यै नमः। श्री रेतते नीराजनम्॥

पुष्पाञ्जली :-

अनेक जन्मार्जित पाप पुञ्ज विनाशते प्राप्त प्रशस्त कीर्तिम्।
पुष्पाञ्जलिं ते वितनामि मातर्दयार्द्र चित्ते सफलं कुरुध्व॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥ पुष्पाञ्जली समर्पयामि॥

नमस्कारं :-

नमस्ते सर्वदेवातां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वप्रपन्नानाम् सा मे भूयात्वदर्चनात्॥
या देवी सर्व भूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः नमस्कारं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा :-

कायवाङ्मानसं पापं यत्कृतं जन्मजन्मनि।
तन्मे नाशय देवि त्वं प्रदक्षिणविधानतः॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।
ॐ सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहातिवेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वाना वेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥
महाकाल्यै नमः श्री रेतानि प्रदक्षिणानि॥

क्षमापन :-

अबुद्ध मतिरिक्तं वा न्यूनं वा यन्मयार्चितम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः क्षमापनं प्रार्थयामि। ततः—

अत्रोत्तराङ्गत्वेन त्रयस्त्रिंशन्नामभिः गन्धपुष्पाक्षतद्वारा महालक्ष्मीं पूजयेत्- ॐ श्रियै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ वरदायै नमः। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः। ॐ वसुप्रियायै नमः। ॐ हिरण्यरूपायै नमः। ॐ स्वर्णमालिन्यै नमः। ॐ रजतस्त्रजायै नमः। ॐ स्वर्णगृहायै नमः। ॐ स्वर्णप्रकाशिकायै नमः। ॐ पद्मवासिन्यै नमः। ॐ पद्महस्तायै नमः। ॐ पद्मप्रियायै नमः। ॐ ईश्वर्यै नमः। ॐ भुक्तिप्रदायै नमः। ॐ मुक्तिप्रदायै नमः। ॐ विभूतिदायै नमः। ॐ ऋध्दिदायै नमः। ॐ समृध्दिदायै नमः। ॐ पुष्टिदायै नमः। ॐ तुष्टिदायै नमः। ॐ धनदायै नमः। ॐ सुभद्रदायै नमः। ॐ भोगिन्यै नमः। ॐ धान्यै नमः। ॐ विधात्र्यै नमः। ॐ गजान्तलक्ष्म्यै नमः। ॐ राजलक्ष्म्यै नमः। ॐ साम्राज्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ विजयप्रदायै नमः। ॐ सर्वसौभाग्यदायै नमः। ॐ सूर्यायै नमः। ततः—न मे जन्मनि दौर्भाग्यं न मे जन्म दरिद्रता। महालक्ष्मि नमस्तुभ्यमर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः त्रिवारं षोडशवारं वा विशेषार्घ्यं समर्पयामि। ततः शङ्खजलं देव्युपरि भ्राम येत् —

ॐ साधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥ इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि त्रिः परिभ्राम्य तज्जलं दक्षिणहस्ते आदाय शिरसि मार्जयेत् पल्लवादिनाप्राच्यां दिशि देवऋत्विजो मार्जयन्ताम् । दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम् । प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो मार्जयन्ताम् । उदीच्यां दिशि आप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम् । ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरो यज्ञपति मार्जयन्ताम् । इति प्रतिदिश तज्जलमुत्सृजेदितितन्त्रक्रमः । ततः — यथा । संख्यपरिमितं श्रीसूक्तपाठं कुर्यात् । देशकालौ संङ्कीर्त्य मम धन-पुत्र-पौत्रादि समृद्धयर्थं नानारोगदूरीकरणार्थं नवग्रहदेवताप्रसन्नार्थं च षोडश-दश-पञ्च शतादिसंख्याकान् स्वयं ब्राह्मणद्वारा पाठान् कारयिष्ये-इति सङ्कल्पपूर्वकं कुर्यात् । अयं पाठः अर्चनाङ्गमिति बोध्यम् । पाठान्ते तु-ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्रीत्वं गृहाणास्मद् कृतं जपम् । सिध्दिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ इति महालक्ष्म्यै जपं निवेद्य अनेन श्रीसूक्तपाठाख्येन श्रीमहालक्ष्मीश्वरि भगवती प्रीयताम् इति जलमुत्सृजेत् । ततः — तत्रस्थितान् आचार्यादीन् दक्षिणादिकं दत्वा प्रार्थयेत्- ॐ यत्पादपद्मामृतसेवनेन मूढोऽपि सद्यः प्रकरोति काव्यम् । साऽनेकदेवादिगणैः सपूज्या समस्तविघ्नक्षयमातनोतु ॥ प्रदक्षिणा त्रयं देवि प्रयत्नेन मया कृता । क्षम्यतां देव देवेशि पापानां क्षालनं कुरु ॥ प्रयच्छ पुत्रपौत्रांश्च. विष्णुवक्षः स्थलेऽनघे । श्रियं देहि यशो देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥ धनं धान्यं धरां धर्मं कीर्तिमायुर्यशः श्रियम् । तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मि प्रयच्छ मे । विष्णोर्वक्षसि पद्मे च शङ्खे चक्रे तथाम्बरे । लक्ष्मि नित्या यथासि त्वं मयि नित्या तथा भव ॥ यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु । न बाध्यन्तां कुकर्माणि संकटान्मे निवारय ॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावद्येवा वसुन्धरा । तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव । यावत्तारागणाकाशे यावदिन्द्रादयोऽमराः । तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव । पङ्कजं देवि सन्त्यज्य मम वेश्मनि संविश । यथा सदारपुत्रोऽहं सुखीस्यां त्वत्प्रसादतः । भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् । त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे । कोऽपरः क्षमते लोके केवलं मातरं विना ॥ साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया

देवि गृहाणाराधनं मम ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं शिवे। तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ततः – आचार्याय सुवर्णम्, अन्नवस्त्रादिकम्, स्वर्णश्रृंगादियुतं गां संकल्पपूर्वकं दद्यात्। करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः। तदविघ्नेन मे यातु समाप्तिं त्वत्प्रसादतः॥ इति जलं देव्यग्रे भूमौ क्षिपेदिति।

उलूकपूजनम् :-

ॐ अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिम्ब्यऽउलूकानग्नीषोमाम्या-ञ्चाषानश्विभ्यां मयूरान्मित्रावरुणाम्याङ्कपोतान् ॥ ॐ वर्षाहूऋतूनामाखुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वसूनां कपिञ्जलः कपोतऽ उलूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः ॥ ॐ उलूकाय नमः उलूकं पूजयामि।

हस्तिपूजनम् :-

ॐ प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्येनाय वर्त्तिका नीलं गोः क्रिमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हस्ती ॥ ॐ हस्तिने नमः हस्तिनं पूजयामि।

कामदेवादिऋतुपूजनम् :-

उलूकाग्रे कामदेवं तरुणं वर्णं रक्तवस्त्राभरणमाल्यानुलेपनं वामदक्षिणयोरतिप्रीतिभ्यां शोभितं पुष्पवाणोक्षुधनुर्धरं वसन्तादिसहितं ध्यायेत् – ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ ॐ कामदेवाय नमः कामदेवं पूजयामि। तद्वामेरतिं गौरवर्णां सर्वालङ्कारभूषितां रक्तवस्त्रपरीधानां पद्मद्वयकरां ध्यायेत् – ॐ इह रतिरिहरमध्वमिहधृतिरिहस्वधृतिः स्वाहा। उपसृजन्धरुणं मात्रे धरुणो मातरन्धयन्। रायस्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा ॥ ॐ रत्यै नमः रतिं पूजयामि। कामस्य दक्षिणभागे प्रीतिश्यामव सर्वाभरणभूषितां रक्तवस्त्रपरीधानां तांबूलकरां ध्यायेत्-ॐ प्रेषेभिः प्रैषानाप्नोत्याप्रीभिराप्रीर्यज्ञस्य। प्रयाजेभिरनुयाजान्व-षटकारेभिराहुतीः॥ ॐ प्रीत्यै नमः प्रीतिं पूजयामि। ततः कामदेवस्याग्रे वसन्तादिऋतून् पूजयेत् – ॐ वसन्तेनऽ ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः।

रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥ ॐ वसन्तऋतवे नमः वसन्तऋतुं पूजयामि । ॐ ग्रीष्मेणऽ ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः । बृहता यशसा बलꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥ ॐ ग्रीष्मऋतवे नमः ग्रीष्मऋतुं पूजयामि । ॐ वर्षाभिऋतुना दित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः । वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥ ॐ वर्षाऋतवे नमः वर्षाऋतुं पूजयामि । ॐ शारदेनऽ ऋतुना देवाऽ एकविꣳ शऽऋभवस्तुताः । वैराजेन श्रिया श्रियꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥ ॐ शरदऋतवे नमः शरदऋतुं पूजयामि । ॐ हेमन्तेनऽ ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतस्तुताः । बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥ ॐ हेमन्तऋतवे नमः हेमन्तऋतुं पूजयामि । ॐ शैशिरेणऽ ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिꣳ शे मृतास्तुताः । सत्येन रेवतीः क्षत्रꣳ हविरिन्द्र वयो दधुः ॥ ॐ शिशिरऋतवे नमः शिशिरऋतुं पूजयामि । इति लब्धोपचारैः संपूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात् – ॐ वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्त्तिका हेमन्ताय ककराञ्छिशिराय विकंकरान् ॥ ततः – कामदेवस्य दिक्षु विदिक्षु च देवान् पूजयेत् – पञ्चवर्णैः चन्दने वा अष्टदलं कृत्वा बहिश्चतुरस्रं तद्बहिर्वर्तुलत्रयं तद्बहिर्वृत्तं चतुरस्रं कृत्वा ॐ [१] भस्मशरीराय नमः भस्मशरीरं पूजयामि । ॐ अनङ्गाय[२] नमः अनङ्गं पूजयामि । ॐ मन्मथाय[३] नमः मन्मथं पूजयामि । ॐ वसन्त[४]सखाय नमः वसन्तसखं पूजयामि । ॐ स्मराय[५] नमः स्मरं

---

(१) ॐ सँज्ञानमसि कामधरणम्मयि ते कामधरणं भूयात् । अग्नेर्भस्म्मास्यग्नेः पुरीषमसि चितस्स्थपरिचितऽऊर्ध्वचितः श्रयध्वम् ॥

(२) ॐ अङ्गान्यात्व मन्भिंषजातदश्विनात्त्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती । इन्द्रस्य रूपꣳ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाः ॥

(३) ॐ अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौस्थऽउर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवाऽअसि । गायत्रेण त्वा च्छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा च्छन्दसा मन्थामि ॥

(४) ॐ अश्मन्वतीरीयते सꣳ रमध्वमुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः । अत्राजहीमो शिवा येऽअसञ्छिवन्वयमुत्तरेमाभिवाजान् ॥

(५) ॐ सन्धये जारङ्गेहायोपपतिमार्त्यै परिवित्तन्निर्ऋत्यै परिविविदानमराध्याऽ एदिधिषुः पतिन्निष्कृत्यै पेशस्कारी सञ्ज्ञानायस्मरकारीम्प्रकामोद्यायोपसदं वर्णायानुरुधम्बलायोपदाम् ॥

पूजयामि । ॐ [१]इषुचापाय नमः इषुचापं पूजयामि । ॐ [२] पुष्पास्त्राय नमः पुष्पास्त्रं पूजयामि । ॐ [३] कन्दर्पाय नमः कन्दर्पं पूजयामि । इति लब्धोपचारैः संपूज्य ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि । तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥ नमोऽस्तु पुष्पवाणाय जगदानन्दकारिणे । मन्मथाय जगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय च ॥ इति नतिं कुर्यात् ।

कुमारीपूजा[४] :-

अद्य श्रीलक्ष्मीपूजनसाङ्गतासिद्धये कुमारीपूजनं करिष्ये-इति सङ्कल्प्य- ॐ नृत्ताय सूतङ्गीताय शैलूषन्धर्माय सभाचरन्नरिष्ठायै भीमलन्नर्माय रेभठं॰ हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखम्प्रमदे कुमारी पुत्रं मेधायै रथकारन्धैर्याय तक्षाणम् ॥ ॐ कन्याऽइव वहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि । यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराऽअभितत्पवन्ते ॥ ॐ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ ॐ कुमार्यै नमः कुमारीं पूजयामि ।

बटुकपूजा :-

अद्य श्रीलक्ष्मीपूजनकर्मणि साङ्गफलप्राप्तये बटुकपूजनं करिष्ये — इति सङ्कल्प्य ॐ अनुते शुष्मन्तुरन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्नमातरा । विश्वास्ते स्पृधः

---

(१) ॐ तपसे कौलालम्मायायै कर्माठं॰ रूपाय मणिकारठं॰ शुभे वपठं॰ शरव्यायाऽइषुकारठं॰ हेत्यै धनुष्कारङ्कर्म्मणो ज्याकारन्दिष्टाय रज्जुसर्ज्जम्मृत्यवे मृगयुमन्तकाय श्वनिनम् ।

(२) ॐ ओषधयः प्रति गृब्भ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः । अयं वो गर्भऽऋत्वियः प्रत्क्नठं॰ सधस्त्थमासदत् ॥

(३) ॐ प्रथमा द्वितीयैर्दितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भियजू षि सामभिः सामान्युग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्काराऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्ध्दयन्तु भूः स्वाहा ॥

(४) मधुरं भोजनं देयं शर्कराघृतसंयुतम् । दश वा सप्त वा चाथ पञ्च वा तिस्त्र एव च ॥ एकाप्यशक्तेन तथा कन्या भोज्या सुवासिनी । यथाशक्त्या च तासां वै दद्यात्कञ्चुकवाससी ॥ अलङ्कारादिकं चैव सुमनो मालिकाः शुभाः । यथाशक्त्याथवा कुर्यात्सर्वमेतध्दि पूजनम् ॥

श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ ॐ बटुकाय नमः बटुकं पूजयामीत्यावाहनादिराजोपचारैः संपूजयेत् ।

सुवासिनीपूजा :–

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः । सुखदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मेदाऽ आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मेदाः । विधृतिरुपरिष्टाद् वृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मेदा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि । ॐ या देवि सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ इति संपूज्य- ॐ बालायै नमः । ॐ कामेश्वर्यै नमः । ॐ गणेश्यै नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ कलाभ्यो नमः । इतिदेवीरूपां ध्यात्वा वस्त्रालङ्कारादि समर्प्य प्रार्थयेत्- बन्धूकपुष्पसंकाशे त्रिपुरे भयनाशिनी । भाग्योदयसमुत्पन्ने प्रसन्नवरदेति वै । जय देवि जगद्धात्रि त्रिपुरे च त्रिदैवते । भक्तेभ्यो वरदे देवि महिषघ्नि नमोऽस्तु ते ॥ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये जगन्मोहनविधायिनि । सर्वविघ्नहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

निधिपूजनम् :–

ॐ धन्वनागा धन्वनाजिञ्जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम । धनुः शत्रोरपकामङ्कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम ॥ ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु । ऋतस्य पथाप्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥ ॐ स्वर्णघर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा ॥ इति निधिं पूजयेत् । अथवा — ॐ कुबेराय नमः इति नाममन्त्रेण संपूज्य प्रार्थयेत् — ॐ धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च । भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादिसम्पदः ॥ ततः षोडशसंख्याकान् गोधूमनिर्मितान् सघृतादिसहितान् अपूपान्[१] षोडशलड्डुकान् षोडशऋतुफलानि नानापक्वापक्वसाकादीनि दक्षिणां च श्रीमहालक्ष्मीपूजायाः सद्गुण्यार्थमिदमाचार्याय दास्ये-इति संकल्प्य ॐ इन्दिराप्रतिगृह्णाति इन्दिरा वै ददाति च । इन्दिरातारकोभाभ्यामिन्दिरायै नमो नमः ॥ इति पठित्वा ददेत् ।

(१) दद्यात्तु षोडशापूपान् गोधूमानां द्विजातये ।

चरणोदकपानम् :-

ततस्तच्चरणोदकं पात्रान्तरे गृहीत्वा पिबेत्- ॐ गङ्गापुष्करनर्मदा च यमुनागोदावरीगोमतीगङ्गाद्वारगयाप्रयागबदरीवाराणसीसिन्धुषु। रेवासेतु सरस्वतीप्रभृतिषु ब्रह्माण्डभाण्डोदरे तीर्थस्नानसहस्रकोटिफलदं श्रीमूर्तिपादो[1]दकम् ॐ महाल्क्ष्म्यै नमः चरणोदकं पिबामि। ततः॥ ॐ तां मऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥ इति मन्त्रेण पूजितपुष्पमालां गृहीत्वा नासिकायाम् आघ्राय स्वहृदि मस्तके धारयेत्। ततः – 'अनेन यथाशक्त्यर्चनप्रकारेण श्रीमहालक्ष्मीः प्रीयताम्' इति भूमौ पात्रान्तरे वा जलं क्षिपेदिति। अर्चितपुष्पाक्षतजलादिकं तु तुलस्यादौ प्रतिदिनं क्षिपेदिति सम्प्रदायः।

ब्राह्मणकर्तृकाशीर्वाद :-

ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा॥ स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्रयं न च बाधते। सर्वपापहरालक्ष्मीः सर्वसिध्दिप्रदायिनी॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमा-विधात्पवमानं महीपते। धनं धान्यं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ त्रिनयनमभिमुखनिःसृतामिमां य इह पठेत्प्रयतश्च सदा द्विजः। स भवति धनधान्यपशुपुत्रकीर्तिमानतुलं च सुखं समस्नुते दिवीति दिवीति॥ ततः सति संभवे उत्सवं[2] पुराणादिकथां च कुर्वन् सन् रात्रौ जागरणं कुर्याद् बन्धुभिः सह। प्रभाते ब्राह्मणादिभोजयेत्[3]।

---

(१) स्वयं देवस्य वहनं काष्ठपात्रे च पूजनम्। स्थापनं मृत्तिकापात्रे त्रयं दारिद्र्यकारणम्॥ हस्ते वैदले कांस्ये शङ्खे च रीतिसंभवे। तृणे च नेत्रपात्रे च त्वचि रौप्ये न चार्चयेत्॥

(२) महान्तमुत्सवं कुर्याद् भवने बन्धुभिः सह।

(३) ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दीनान्धकृपणैः सह। तदा कृतार्थमात्मानं मन्यते मनुजोत्तमः॥ भोजयेत्साङ्गवेदज्ञान्स्वादुभिर्भोज्यवस्तुभिः। विततं च यथाशीर्भिरभीष्टफलदं भवेत्॥ ब्राह्मणानां ततः पूजा कार्या वित्तानुसारत। यावद्विप्रा न पूज्यन्ते न तावत्पूर्णतां व्रजेत्॥ पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं संपूर्णतां व्रजेत्॥

अथ होमादिविसर्जनान्तकर्म[१] :-

यजमानादयः सर्वे यथास्थानमुपविश्याचम्य प्राणानायम्य शान्तिसूक्तं पठित्वा यजमानो देशकालौ सङ्कीर्त्य-गोत्रः, शर्मा अस्मिन् सनवग्रहमखहवनात्मकमहालक्ष्मीयागकर्मणि[२] गणेशाम्बिकयोः, वरुणस्य, सगणपानां षोडशमातृणां, सप्तमातृणां, वास्तुपीठस्थदेवानां, मण्डपदेवतानां, सर्वतोभद्रपीठस्थदेवतानां, प्रधानस्य सपरिवारस्य मेखलादेवानामग्नेः शान्तिकलशदेवस्य, नवग्रहाणां सपरिवाराणां, योगिनीनां, क्षेत्रपालानामाचार्यदित्रऋत्विजां च पूजनं करिष्ये इति सङ्कल्प्य सर्व विधिवतकृत्वा यजमानः अग्न्यायतनस्य[३] चतुर्दिक्षु ब्राह्मणोपवेशनं कारयित्वा स्वयमपि पश्चिमदिशि उपविश्य गणपतिं स्मृत्वा ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने। तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते ॥ इति मन्त्रेण शिखाग्रन्थिबन्धनं कुर्यात्। ततः –

ॐ सहस्राणि सहस्रसो बाहवोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ इति मन्त्रेण महीं प्रार्थयेत्। ततः – ॐ यऽएतावन्तश्च भूयाँ्सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाँ् सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि ॥ इत्यासनोपरि उपवेशयेत्।

---

(१) आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म विनिर्मितम्। शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम् ॥ ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाग्रे याश्च देवताः। ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यक्षसिद्धिं मुदान्विताः ॥ हे कुण्ड तव निर्माणं कृतं वै विश्वकर्मणा। अस्माकं वाञ्छितासिद्धिं यक्षसिद्धिं ददातु भो।

कुण्डे विश्वकर्मापूजा – ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्तपूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत्। उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा विश्वकर्मणऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥ अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः। नाशय त्वं हि तान्सर्वान्विश्वकर्मन्नमोस्तु ते ॥

(२) द्रवं स्रुवेण होतव्यं पाणिना कठिनं हविः। शत्त्यभावे घृतादीनां पूर्वमानार्धमेव च ॥ घृतं पञ्चामृतादीनां यन्मानन्नं समुदीरितम्। शक्त्यभावे तदर्धं वा समुद्दिष्टं मनीषिभीः ॥ आयुःक्षयो यवाधिक्ये यवसाम्ये धनक्षयः। सर्वकामसमृद्धिः स्यात्तिलाधिक्ये न संशयः।

(३) होममध्ये यदा कश्चिज्जीवाग्नौ तु विपद्यते। तदा देयाग्नये स्वाहा प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम्। यद्वा हुत्वा त्वनादिष्टं होमशेषं समापयेत् ॥

ततः — ॐ अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु रथन्तरꣳ साम त्रिवृत्स्तोमो वसन्तऽऋतुर्ब्रह्मद्रविणम् ॥ ॐ पूर्वायै नमः। ॐ दक्षिणामारोह त्रिष्टुप्त्वावतु बृहत्साम पञ्चदशस्तोमो ग्रीष्मऽऋतुः क्षत्रन्द्रविणम् ॥ ॐ दक्षिणायै नमः। ॐ प्रतीचीमारोह जगती त्वावतु वैरूपꣳ साम सप्तदशस्तोमो वर्षाऽऋतुर्विड्द्रविणम् ॥ ॐ पश्चिमायै नमः। ॐ उदीचीमारोहानुष्टप्त्वावतु वैराजꣳ सामैकविꣳशस्तोमः शरद् ऋतुः फलन्द्रविणम् ॥ ॐ उत्तरायै नमः। ततः —

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ उपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन हवनं च समारभे॥। ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाँ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि॥ इति मन्त्रेण दिग्बन्धनं कृत्वा ग्रहहवनं समाप्य तद्दिने द्वितीयदिने वा प्रधानन्यासं कुर्यात्। तत्रादौ ध्यायेत् — ॐ त्वं परा प्रकृतिः साक्षाद् ब्रह्मणः परमात्मनः। त्वत्तो जातं जगत्सर्वं त्वं जगज्जननी शिवे॥ महदाद्यणुपर्यन्तं यदेतत्सचराचरम्। त्वयैवोत्पादितं भद्रे त्वदधीनमिदं जगत्॥ त्वमाद्या सर्वविद्यानामस्माकमपि जन्मभूः। त्वं जानासि जगत्सर्वं न त्वां जानासि कश्चन॥ त्वं काली तारिणी दुर्गा षोडशी भुवनेश्वरी। धूमावती त्वं बगला भैरवी छिन्नमस्तका॥ त्वमन्नपूर्णा वाग्देवी त्वं देवी कमलालया। सर्वशक्तिस्वरूपा त्वं सर्वदेवमयी तनुः॥ त्वमेव सूक्ष्मा स्थूला त्वं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी। निराकारापि साकारा कस्त्वां वेदितुमर्हति॥ उपासकानां कार्यार्थं श्रेयसे जगतामपि। दानवानां विनाशाय धत्से नानाविधास्तनूः॥ चतुर्भुजा त्वं द्विभुजा षडभुजाऽष्टभुजा तथा। तमेव विश्वरक्षार्थं नानाशस्त्रास्त्रधारिणी॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ततः- ॐ महालक्ष्म्यै नमः। अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ विष्णुवामाङ्कसंस्थितायै नमः। तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सौभाग्यजनन्यै नमः- मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सुखदायै नमः- अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सौभाग्यकर्त्र्यै नमः- कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ समस्तभूतान्तरसंस्थितायै नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः। ततः- 'हिरण्यवर्णाम्' इति

लक्ष्मीसूक्तेन पूर्वोक्तन्यासद्वयं कृत्वा ध्यायेत[१] — ॐ अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा कमलधृतेष्टाभीतियुग्मांबुजा च। मणिमुकुटविचित्रालंकृतिः पद्ममाला भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥ ततः प्रधानहोमः[२]। आवरणादिस्थापितदेवानां होमः। सतिसंभवे लक्ष्मीसहस्रमन्त्रैनोमहोर्मः। ततः प्रार्थयेत्- ॐ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलान्तर्गतशुभगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरे प्रसीद मह्यम्॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्॥ पद्मानने पद्मउरु पद्माक्षीपद्मसंभवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो

---

(१) ॐ मातर्नमिमि कमले कमलायताक्षि श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः। क्षीरोदजे कोमलगर्भगौरिलक्ष्मी प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ ॐ वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदां हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्। भक्ताभीष्टफलप्रदा हरिहरब्रह्मादिभिस्सेवितां पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः॥

ॐ कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः हस्तात्क्षिप्तहिरण्मया-मृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्। बिभ्राणां वरमव्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलां क्षौमाबध्दनितम्बबिम्बललितां वन्दे रविन्दस्थिताम्।

(२) एकसाहस्त्रिको होमः पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया। दश साहस्त्रिको होमः श्रीकामः शुद्धमानसः॥ अयुतं शतकृत्वस्तु जुहुयात्तिलसर्पिषा। अनन्तामव्यच्छिन्नां शाश्वतीं विन्दते श्रियम्॥ अशक्तौ- जप एवोत्को दशसाहस्त्रिको वरः। जप्त्वा तु प्रयुतं सभ्यगनन्तां विन्दते श्रियम्। अयुतं शतकृत्वस्तु जप्त्वा सर्वमुपाश्नते। विष्णुधर्मोत्तरे- श्रीसूक्तं यो जपेद् भक्त्या तस्यालक्ष्मीर्विनश्यति। जुहुयाद्यश्च धर्मज्ञो हविष्येण विशेषतः॥ श्रीसूक्तेन तु पद्मानां घृताक्तानां भृगूत्तम। अयुतं होमयेद्यस्तु वह्नौ भक्तियुतो नरः। दशायुतं तु पद्मानां जुहुयाद्यस्तथा जले। मापैति तत्कुलाल्लक्ष्मीर्विष्णोर्वक्षगता यथा॥ घृताक्तानां तु बिल्वानां हुत्वा रामायुतं तथा। बहुवित्तमवाप्नोति स यावन्मनसेच्छति॥ बिल्वानां लक्षहोमेन कुले लक्ष्मीमुपाश्नुते। पद्मानामथ बिल्वानां कोटिहोमं समाचरेत्॥ सत्यलोकमवाप्नोति देवेन्द्रमपि च ध्रुवम्।'

लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥ आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः । ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवीदेवता ॥ ऋणरोगादिदारिद्रयं पापञ्च अपमृत्यवः । भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ तत उत्तरपूजनादारभ्य बलिदानादि कर्म कृत्वा पुष्पपूरिताञ्जलिनिविष्टं भावयन् तत्तत्पूजामन्त्रैः तत्तदावरणपूजां देव्या वामहस्ते पूजासमर्पणं च विभाव्य आवरणानि च विभाव्य देवीपादमूले स्थितजीवात्मनां सहितां श्रीदेवीं नीत्वा स्वञ्जलिगतकुसुमैस्तत्र तां सम्पूज्य पञ्चोपचारचन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत् । ततो देव्या नासायाम् गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायाम् नैवेद्यदेवता इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य मूलमन्त्रमुच्चरन् क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत् । ततः- अभिषेकादिविसर्जनान्तं कृत्वा सुहृदादियुतो भुञ्जीतेति शिवम् ।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

अथ श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ॥१ ॥

हे शास्त्रों को प्रकट करनेवाले वह्निदेव, तप्तसुवर्ण के समान दीप्तिमती, हरितवर्णा (अथवा मृगीरूपधारण करनेवाली) स्वर्णमय एवं रौप्यमय पुष्पों की माला पहिनी हुई, चन्द्रमा की तरह जगत् को आल्हादित करनेवाली, सुवर्णादि द्रव्यों से ही जिसकी सत्ता प्रकट होती है, ऐसी लक्ष्मी का मेरे लिए आह्वान कीजिए ॥१ ॥

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२ ॥

हे जातवेदः, उस अनपायिनी लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाइये जिसके मेरे पास आ जानेपर मैं सुवर्णादि द्रव्य, गौ आदि पशु, अश्व आदि वाहन एवं पुत्र, मित्र, दास आदि पुरुषों से सम्पन्न हो जाऊँ ॥२ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥३॥

जिसके अग्रभाग में अश्व और मध्यभाग में रथ हों तथा जो अपने हाथियों की चिंघाड़ से सब को जागृत कर देती है, ऐसी सेना रूपा लक्ष्मी का मैं आवाहन करता हूं, वही प्रकाशरूपा लक्ष्मी मुझ से प्रीति करे अर्थात् मेरे पास स्थिर रहे॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।
पद्मे स्थिताम् पद्मवर्णाम् तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥

जो भगवती लक्ष्मी 'ब्रह्म' रूपा है, श्रेष्ठ स्मित से युक्त सुवर्ण के आवरणवाली, शीतल स्वभाववाली, ज्योतिः स्वरूपा है स्वयं तृप्त हुई अपने भक्तों के मनोरथ पूर्ण कर उन्हें भी तृप्त करती है, कमल में स्थित है, और कमल तुल्य मनोहर वर्णवाली है ऐसी देवी लक्ष्मी का यहाँ आवाहन करता हूँ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीमे नश्यतां त्वां वृणोमि॥५॥

चन्द्रमा की तरह आह्लादिनी, कान्तिमती, लोक में अपनी कीर्ति से प्रकाशमान, देवताओं से सेवित, उदारप्रकृतिवाली, कमलतुल्य आकृतिवाली, ईकार से वाच्य उस लक्ष्मी की शरण में प्राप्त होता हूँ जिससे मेरी दरिद्रता का नाश हो और मैं लक्ष्मीयुक्त हो जाऊँ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः॥६॥

हे सूर्य के समान वर्णवाली श्री, तपस्या से ही तुम्हारे हाथ से यह मङ्गलमय बिल्व नाम का वनस्पति वृक्ष प्रकट हुआ अतः तुम्हारी कृपा से इस वृक्ष के फल मेरे अन्तरिन्द्रिय सम्बन्धी अज्ञान और बहिरिन्द्रय सम्बन्धी अलक्ष्मी का निवारण करें॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृध्दिं ददातु मे॥७॥

हे श्रीः, मुझे महादेवजी के मित्र धनाध्यक्ष कुबेर कीर्ति और चिन्तामणि मन्त्र सहित प्राप्त हो, मैं इस राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ वह देवसखा कुबेर मुझे कीर्ति और समृध्दि प्रदान करे ॥७ ॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृध्दिञ्च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥

हे अग्ने, भूख प्यास से मलिन हुई, लक्ष्मी की अग्रजा अलक्ष्मी को मैं नष्ट करता हूँ। हे लक्ष्मीः, मेरे घर से सब प्रकार की अभूति और असमृध्दि को दूर करो ॥ ८ ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९ ॥

हे अग्ने, गन्ध के द्वारा जिसका बोध होता है, जिसका कोई घर्षण (अपमान) नहीं कर सकता. जो धान्यादि से सर्वदा पुष्ट है, जिसमें प्रचुर मात्रा में करीष (सूखा गोबर, इस विशेषता से पशुओं की समृद्धि द्योतित होती है) प्राप्त होता है, सब प्राणियों के एकमात्र निग्रहानुग्रह में समर्थ उस (पृथ्वीरूपा) लक्ष्मी का मैं यहाँ आवाहन करता हूँ ॥६ ॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१० ॥

हे श्रीः, हमारे मनोरथ और चेष्टाएँ पूर्ण हों, वाणी यथार्थ वादिनी हो, दूध आदि के लिए विविध पशु और भोजन के लिए पर्याप्त अन्न हमें प्राप्त हो, आपके उपासक मुझ को सम्पत्ति और यश दोनों मिले ॥१० ॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११ ॥

कर्दमरूप पुत्र से ही लक्ष्मी पुत्रवती है अतः हे कर्दम, आप मुझमें भी पुत्ररूप से उत्पन्न हों, क्योंकि आपके आने से पुत्रस्नेह के कारण लक्ष्मी भी आ जायेगी। इसलिये पद्ममालिनी माता लक्ष्मी का निवास मेरे वंश में कराइये। अथवा कर्दम ऋषि से यह सारी प्रजा उत्पन्न हुई है अतः हे कर्दम, आप मुझसे भी पुत्ररूप से उत्पन्न हों ॥११ ॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

जलाभिमानी देवता मेरे लिये स्नेहयुक्त पदार्थों को उत्पन्न करें। हे चिल्कीत, (लक्ष्मीपुत्र) आप मेरे घर में वास कीजिए और माता लक्ष्मी को भी मेरे कुल में निवास कराइये क्योंकि आप के आने से पुत्र स्नेहयुता वह स्वयं मेरे यहाँ निवास करेंगी ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽ आवह ॥१३॥

हे अग्ने, स्नेहमयी अथवा प्रचुर गन्धवाली, जगत् को पुष्ट करनेवाली यद्वा अभिषेक के लिए तत्पर हुए दिग्गजों के पुष्कर (शुण्डाग्र) वाली एवं स्वयं पुष्टिस्वरूपा पिङ्गलवाली, कमलों की माला धारण की हुई सबको आल्हादित करनेवाली, स्वर्णमयी उस लक्ष्मी का मेरे लिए आवाहन कीजिए ॥१३॥

आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽ आवह ॥१४॥

हे अग्ने, उस स्नेहमयी,यशस्करिणी अथवा जगत की रक्षा के लिए दण्ड ग्रहण की हुई पूजनीय स्वरूपवाली या स्वयं धर्मदण्डस्वरूपा, सुन्दरवर्ण से युक्त, स्वर्णमयमालाधारिणी, ऐश्वर्यरूपा अथवा प्रसरण शीला, स्वर्णमयी, लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन कीजिए ॥१४॥

तां मऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

हे अग्ने, सर्वदा स्थिर रहनेवाली उस लक्ष्मी को मेरे पास बुलाइये जिसके आनेपर मुझे प्रचुर सुवर्ण, गायें, दासियाँ, घोडे और सेवक प्राप्त हों ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

जो व्यक्ति लक्ष्मी की कामना करता हो वह पवित्र और संयमी होकर प्रतिदिन घृत से हवन करे और श्रीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का निरन्तर पाठ करे,

या पन्द्रह बार श्रीसूक्त का अखण्डपारायण कर फिर प्रत्येक ऋचा का विधिपूर्वक यथा संख्या जप करे। यदि इतना न कर सके तो बिना अग्निहोत्र के भी लौकिक अर्थात् सामान्यरूप से गृह में स्थित अग्नि में श्रीसूक्त की १५ ऋचाओं से १५ आहुति देकर हवन करे और फिर १५ बार श्रीसूक्त का जप करे तो उस श्रीकाम पुरुष को इसी जन्म में लक्ष्मी प्राप्ति अवश्य हो जाती है, यह निश्चय है ॥१६॥

भगवती महालक्ष्मी के यथालब्धोपचार-पूजन के अनन्तर महालक्ष्मीपूजन के अङ्ग-रूप श्री देहली विनायक, मसिपात्र (दवात) लेखनी, सरस्वती कुबेर तुला-मान तथा दीपकों की पूजा की जाती है सर्वप्रथम देहली विनायक की पूजा।

देहली विनायक पूजन :-

व्यापारिक प्रतिष्ठानादि में दीवारों पर "ॐ श्री गणेशाय नमः" "स्वास्तिक चिह्न" "शुभलाभ" आदि मांगलिक एवं कल्याणकर सिन्दूरादि से लिखे जाते हैं इन्हीं शब्दों पर "ॐ देहली विनायकाय नमः" इस नाम मन्त्र द्वारा गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे॥

श्री महाकाली (दवात) पूजन :-

स्याही-युक्त दावात को भगवती महालक्ष्मी के सामने पुष्प तथा अक्षत पुञ्ज (ढेरी) में रखकर उसमें सिन्दूर से स्वस्तिक बना दे तथा मौली लपेट दे। "ॐ महाकाल्यै नमः" इस मन्त्र से गन्ध पुष्पादि पञ्चोपचार या षोडशोपचार से दवात में भगवती महाकाली का पूजन करे और अन्त में इस प्रकार ध्यान, प्रार्थना पूर्वक उन्हे प्रणाम करें।

ध्यानम् :-

ॐ मषित्वं लेखनी युक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरुसदामम॥
या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्ड मुण्डविमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव॥
सद्यश्छिन्न-शिरः. कृपाणमभयंहस्तैर्वरं बिभ्रतीं।
घोरास्यां शिरसां स्रजं सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलीम्॥

सृक्कासृक्-प्रवहांश्मशान निलयांश्रुत्योः शवालंकृतिं ।
श्यामाङ्गीं कृत मेखलां शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम ।।

आवाहन :-

भगवती काली का ध्यान करने के बाद, लेखनी दवात के सम्मुख आवाहन मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र पढते हुए उनका आवाहन करे –

ॐ देवेशि ! भक्ति सुलभे ! परिवार – समन्विते ।
यावत् त्वां पूजायिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिराभव ।।
दुष्पारे घोर संसार-सागरे पतितम् सदा ।
त्रायस्व वरदे देवि ! नमस्ते चित् परात्मिके ।।
ये देवा, याश्च देव्यश्च चलितायां चलन्ति हि ।
आवाहयामि तान् सर्वान् कालिके परमेश्वरि ।।
प्राणान् रक्ष, यशोरक्ष, रक्ष वारान्, सुतान, धनम् ।
सर्वं रक्षा करो यस्मात् त्वं हि देवि, जगन्मये ।
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन् यावत पूजां करोम्यहम ।
सर्वानन्द करे देविः । सर्व-सिद्धिं प्रयच्छ में ।।
तिष्ठात्र कालिके मातः । सर्व कल्याण – हेतवे ।
पूजाम् ग्रहाण सुमुखि नमस्ते-शङ्कर – प्रिये ।।

आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़कर उनके आसन के लिये पांच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने छोड़े । नाना-रत्न समायुक्त, कार्त-स्वर-विभूषितम् । आसनं देव-देवेशि ! प्रीत्यर्थं प्रति गृह्यताम् ।। श्री महाकाली देव्यै आसनार्थे पञ्च पुष्पाणि समर्पयामि ।। भगवती श्री काली के आसन के लिये पांच पुष्प अर्पित करे । फिर चन्दन-अक्षत-पुष्प धूप दीप नैवेद्य से निम्न मन्त्रों से पूजन करें ।

ॐ श्री काली देव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री काली देव्यै नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री काली देव्यै नमः गंधाक्षतं समर्पयामि ।

ॐ श्री काली देव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ श्री काली देव्यै नमः धूपं आघ्रापयामि।
ॐ श्री काली देव्यै नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ श्री काली देव्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
ॐ श्री काली देव्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ श्री काली देव्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

इस प्रकार पूजन करने के बाद बाँएं हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर दाहिने हाथ द्वारा मन्त्र पढ़ते हुए लेखनी दवात पर छोड़े। ॐ महाकाल्यै नमः अनेन श्री कालीदेवीं प्रीयताम् नमो नमः।

पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करे।

कालिके! त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्त से।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहार प्रसिद्धये॥
या कालिका रोगहरा सुवन्द्या।
भक्तैः समस्तै र्व्यवहार दक्षैः जनैर्जनानां भयहारणी च
सा लोकमाता मम सौख्यदास्तु॥

लेखनी-पूजन :—

लेखनी (कलम) पर मोली बान्ध कर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करे।

ॐ शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणा पुस्तक धारणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम॥
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां।
वन्देतां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम॥
लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना।
लोकानां च हितार्थाय स्मातां पूजयाम्यहम्॥
या कुन्देन्दु-तुषार-हारधवला, या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना॥

या ब्रह्माऽच्युत शङ्कर प्रभृति भिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥

सरस्वती (पञ्जिका-वही-खाता) पूजनम् –

पञ्जिका – बही बसना, तथा थैली में रोली या केशर युक्त चन्दन से स्वस्तिक-चिह्न बनाये तथा थैली में पांच हल्दी की गांठ, धनिया, कमल गट्टा अक्षत दूर्वा और द्रव्य रखकर उसमें सरस्वती का पूजन करे – **ध्यान् करे** ।

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता ।
या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृति भिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निः शेष जाडयापहा ॥

आवाहन :–

भगवती सरस्वती का ध्यान करने के बाद बही-खाते के सम्मुख आवाहन मुद्रा दिखाकर निम्न मन्त्र पढते हुए उनका आवाहन करे । आगच्छ देव-देवेशि । तेजोमयि सरस्वति ॥ श्री सरस्वती देवीं आवाहयामि ॥

निम्न मन्त्र पढ़कर उनके आसन के लिए पाच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने रक्खे बही-खाते के निकट छोड़े ।

नाना रत्न समायुक्तं कार्त-स्वर विभूषितम् ।
आसनं देव देवेशि । प्रीत्यर्थं प्रति गृह्यताम् ॥
श्री सरस्वती देव्यै आसनार्थे पञ्च पुष्पाणि समर्पयामि ॥

भगवती सरस्वती के आसन के लिये पांच पुष्प अर्पित करता हूँ । इसके बाद चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य से भगवती सरस्वती का पूजन निम्न मन्त्रों द्वारा करे ।

ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः गंधाक्षतं समर्पयामि ।
ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि ।

ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः धूपं आघ्रापयामि।

ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः दीपं दर्शयामि।

ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ श्री सरस्वती देव्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

इस प्रकार पूजन करने के बाद बाएं हाथ में गंध अक्षत पुष्प लेकर दाहिने हाथ द्वारा निम्न मन्त्र पढते हुए बही-खाते पर छोड़े।

ॐ वीणा पुस्तक धारिण्यै श्री सरस्वत्यै नमः।

अनेन पूजनेन श्री सरस्वती देवी प्रीयताम् नमो नमः॥

गंधादि पुष्प अक्षत उपचारों से पूजन करे।

प्रार्थना करें।

ॐ शारदा शारदम्भोज वदना वदनाम्बुजे।

सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥

कुबेर पूजनम् – तिजोरी अथवा रुपये रखे जानेवाले सन्दूक आदि को स्वस्तिकादि से अलङ्कृत कर उसमें निधिपति कुबेर का आवाहन करे – आवाहन मुद्रा दिखाकर – उन पर मोली बांध कर कुबेर का पूजन करे।

ध्यान –

मनुज-बाह्य विमान् स्थितम्।

गरूड-रत्न निभं निधि नायकम्॥

शिव-सखं मुकुटादि विभूषितम्।

वर गढे दधतं भजे तुन्दिलम्॥

भगवान श्री कुबेर का ध्यान करने के बाद तिजोरी, सन्दूक आदि के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखाकर निम्न मन्त्र द्वारा उनका आवाहन करे।

आवाहयामि देव ! त्वामिहायाहि कृपां कुरु।

कोशं वर्द्धय नित्यं त्व परि रक्ष सुरेश्वर॥

श्री कुबेर देवम् आवाहयामि॥

आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़कर श्री कुबेर देव के आसन के लिये पांच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने तिजोरी-सन्दूक आदि के निकट छोड़े ।

नाना-रत्न-समायुक्तं कार्त-स्वर विभूषितम् ।
आसनं देव-देवेश ! प्रीत्यर्थं प्रति गृह्यताम् ॥
श्री कुबेर देवाय आसनार्थे पञ्च पुष्पाणि समर्पयामि ॥

भगवान् श्री कुबेर के आसन के लिए मैं पांच पुष्प अर्पित करता हूं । इसके बाद चन्दन, अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य से भगवान कुबेर का पूजन करे ।

ॐ श्री कुबेराय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः गंधाक्षतं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः धूपांघ्रापयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः दीपं दर्शयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः नैवेद्यं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः आचमनीयं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः ताम्बूलं समर्पयामि ।
ॐ श्री कुबेराय नमः अनेन पूजनेन श्री धनाध्यक्ष
श्री कुबेरः श्री प्रीयताम् नमो नमः । प्रार्थना करे –
धनदाय नमस्तुभ्यंनिधि पद्माधिपाय च ।
भगवान त्वत्प्रसादेन धनधान्यादि सम्पदः ॥
धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने ।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

इस प्रकार प्रार्थना कर पूर्व पूजित हल्दी धनिया कमल गट्टा द्रव्य दूर्वादि से युक्त थैली, तिजोरी में रखे ।

तुला तथा मान पूजा :–

सिन्दूर से सांतिया करके मोली लपेट कर तुलाधिष्ठातृ देवता का ध्यान करना चाहिये ।

नमस्ते सर्व देवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता ।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥

ॐ तुलाधिष्ठातृ देवतायै नमः ॥ इस नाम मन्त्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करे ॥

प्रार्थना :–

ॐ विपणि त्वं महादेवी धनधान्य प्रवर्द्धनी ।
मद् गृहे सुयशो देहिधन धानादिकं तथा ॥
आयुः पशून्प्रजां देहि सर्वसम्पत्करी भव ॥

दीपमालिका (दीपक) पूजनम् :–

किसी पात्र में ग्यारह इक्कीस या उससे अधिक दीपकों को प्रज्ज्वलित कर महालक्ष्मी के समीप रख कर उस दीपज्योति का "ॐ दीपावल्यै नमः" इस नाम मन्त्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन कर इस प्रकार **प्रार्थना करे –**

ध्यानम् :–

भो दीप ! ब्रह्म रूपस्त्वं ह्यन्धकार विनाशकः ।
गृहाण मया कृतां पूजां, ओजस्तेजः प्रवर्धय ॥

प्रार्थना करे :–

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारका ।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नमः ।
शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुख सम्पदाम् ।
मम बुद्धि प्रकाशं च दीप-ज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥
शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पुष्टि-वर्धनम् ।
आत्म तत्त्व-प्रबोधाय दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

दीपावलिर्मया दत्ता गृहाणत्वं सुरेश्वरि।
अनेन दीप दानेन ज्ञान दृष्टि प्रदा भव॥

दीप मालिकाओं का पूजन कर अपने आचार के अनुसार संतरा, ईख पानी फल धान का लावा इत्यादि पदार्थ चढाये। धान का लावा (खील) गणेश महालक्ष्मी तथा अन्य देवी देवताओं को भी अर्पित करे। अन्त में सभी दीपकों को प्रज्ज्वलित कर सम्पूर्ण गृह अलंकृत करे।

प्रधान आरती – इस प्रकार भगवती महालक्ष्मी तथा उनके सभी अङ्ग प्रत्यङ्गों एवं उपाङ्गों का पूजन कर लेने के अनन्तर प्रधान आरती करनी चाहिये। इसके लिये एक थाली में स्वस्तिक आदि मांगलिक चिह्न बनाकर अक्षत तथा पुष्प के आसन पर किसी दीप आदि में घृतयुक्त बत्ती प्रज्ज्वलित करे। एक पृथक पात्र में कपूर प्रज्ज्वलित कर वह पात्र थाली में यथा स्थान रख ले। आरती थाल का जल से प्रोक्षण कर ले।

आरती –

ॐ चक्षुर्द सर्व लोकानां तिमिरस्य निवारणं।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त या गृहाण परमेश्वरी॥
देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वंत्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥
नीराजनं सुमाङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।
चन्द्रार्क वह्नि सदृशं महादेवि नमोऽस्तुते॥
कर्पूरगौरं करुणावतारंसंसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

श्री लक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णु धाता ॥ॐ जय ॥

उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ॐ जय ॥

दुर्गा रूप निरञ्जनि सुख-सम्पति-दाता ।
जो कोई तुम को ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता ॥ॐ जय ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि भवनिधि की त्राता ॥ॐ जय ॥

जिस घर तुम रहती तँह सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ॐ जय ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान पान का वैभव सब तुम से आता ॥ॐ जय ॥

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहि पाता ॥ॐ जय ॥

महालक्ष्मी जी की आरति, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ जय ॥

मन्त्र-पुष्पाञ्जलि –

दोनों हाथो में कमल आदि के पुष्प लेकर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रों का पाठ करे ।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधि राजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्ता दापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरूतः परिवेष्टारो मरूत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य काम प्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरूत विश्व तो मुखो विश्वतो बाहुरूत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैद्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यैच धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥
ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा ।
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

(हाथ में लिये फूल महालक्ष्मी पर चढा दें । प्रदक्षिणा कर साष्टाङ्ग प्रणाम करें ।

प्रदक्षिणा :–

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ॥
तानि तानि. विनश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेष शरणं देवि ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन, क्षमस्व परमेश्वरि ॥
श्री महालक्ष्मी देव्यै प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

साष्टाङ्ग प्रणाम मन्त्र :–

ॐ नमः सर्व हितार्थाय जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मयाकृतः ॥
ॐ भवानि ! त्वं महालक्ष्मीः सर्व काम प्रदायिनि ।
प्रसन्ना सन्तुष्टा भव देवि ! नमोऽस्तु ते ॥
अनेन पूजनेन श्री लक्ष्मी देवी प्रीयताम् नमो नमः ॥

क्षमा-प्रार्थना :-

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सामेभूयात्त्वदर्चनात् ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ॥
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ॥
त्वमेव माताच पिता त्वमेव । त्वमेव बन्धुश्चसखात्वमेव ॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहिमां परमेशानि सर्वपापहरा भव ॥
अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते, धवलतरांशुक गंध माल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

पुनः प्रणाम करके ॐ अनेन यथाशक्त्यर्चनेन श्री महालक्ष्मीः प्रसीदति । यह कह कर जल छोड दे । ब्राह्मण एवं गुरुजनों को प्रणाम कर चरणामृत तथा प्रसाद वितरण करे ।

विसर्जन :-

पूजन के अन्त में हाथ में अक्षत लेकर नूतन गणेश एवं महालक्ष्मी की प्रतिमा को छोड़ कर अन्य सभी आवाहित प्रतिष्ठित एवं पूजित देवताओं को अक्षत छोडते हुए निम्न मन्त्र से विसर्जित करे –

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकाम समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥

• • •

श्री महालक्ष्मी ध्यानम् :-

वन्दे पद्मकराम् प्रसन्नवदनाम् भक्ताभीष्ट फलप्रदाम् हरिहर
सौभाग्यदाम् भाग्यदाम् ब्रह्मादिभिः सेविताम्
हस्ताभ्याम् अभयप्रदाम् मणिगणैः पार्श्वं पङ्कज शङ्ख पद्मनिधिभिः
नानाविधैः भूषिताम् युक्ताम् सदा शक्तिभिः ॥

अस्मिन् दीपे मङ्गलरूपां महालक्ष्मीं आवहयामि ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीम् ध्यायामि आसनं समर्पयामि अर्घ्यं समर्पयामि पाद्यं समर्पयामि गन्धान् धारयामि स्वर्णपुष्पं समर्पयामि दीपं दर्शयामि कदली फलं निवेदयामि ताम्बूलं समर्पयामि सर्वोपचारार्थम् अक्षतान् समर्पयामि अष्टोत्तरशत संख्यया/सहस्त्र संख्यया नामावल्या कुंकुम अर्चनां करिष्ये ।

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरंगधामेश्वरीं,
दासीभूत समस्त देव वनितां लोकैक दीपांकुराम्
श्रीमन्मन्द कटाक्षलब्ध विभव ब्रह्मेन्द्र गङ्गाधरां,
त्वां त्रैलोक्य कुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम् ॥

श्री लक्ष्मी सहस्त्र नामावलिः

ॐ श्रियै नमः । ॐ वासुदेवमहिष्यै नमः । ॐ पुंप्रधानेश्वर्यै नमः ।
ॐ अचिंत्यानन्तविभवायै नमः । ॐ भावाभावविभाविन्यै नमः ।
ॐ अहंभावात्मिकायै नमः । ॐ पद्मायै नमः । ॐ शान्तानन्तजितात्मिकायै नमः ।
ॐ ब्रह्मभावंगतायै नमः । ॐ त्यक्तभीतायै नमः । ॐ सर्वजगन्मय्यै नमः ।
ॐ षाड्गुण्यपूर्णायै नमः । ॐ त्रव्यन्तरूपायै नमः । ॐ आत्मानपगामिन्यै नमः ।
ॐ एकयोग्यायै नमः । ॐ अशून्यभावाकृत्यै नमः । ॐ तेजःप्रभाविन्यै नमः ।
ॐ भाव्याभावकभावायै नमः । ॐ आत्मभाव्यायै नमः । ॐ कामदुहे नमः ।
ॐ आत्मभुवे नमः । ॐ भावाभावमय्यै नमः । ॐ दिव्यायै नमः ।
ॐ भेद्यभेदकभावगायै नमः । ॐ जगत्कुटुम्बिन्यै नमः । ॐअखिलाधारायै नमः ।
ॐ कामविजृम्भिण्यै नमः । ॐ पञ्चकृत्यकर्यै नमः । ॐ पञ्चशक्तिमय्यै नमः ।

ॐ आत्मवल्लभायै नमः। ॐ भावाभावानुगायै नमः। ॐ सर्वसम्मतायै नमः।
ॐ आत्मोपगूहिन्यै नमः। ॐ अपृथक्चारिण्यै नमः। ॐ सौम्यायै नमः।
ॐ सौम्यरूपायै नमः। ॐ अव्यवस्थितायै नमः। ॐ आद्यन्तरहितायै नमः।
ॐ देव्यै नमः। ॐ भवभाव्यस्वरूपिण्यै नमः। ॐ महाविभूत्यै नमः।
ॐ समतां गतायै नमः। ॐ ज्योतिर्गणेश्वर्यै नमः। ॐ सर्वकार्यकर्यै नमः।
ॐ धर्मस्वभावायै नमः। ॐ आत्माग्रतःस्थितायै नमः। ॐ आज्ञासमविभक्ताङ्ग्यै नमः। ॐ ज्ञानानन्दक्रियामय्यै नमः। ॐ स्वातन्त्र्यरूपायै नमः।
ॐ देवोरःस्थितायै नमः। ॐ तद्धर्मधर्मिण्यै नमः। ॐ सर्वभूतेश्वर्यै नमः।
ॐ सर्वभूतमात्रे नमः। ॐ आत्ममोहिन्यै नमः। ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः।
ॐ सर्वव्यापिन्यै नमः। ॐ प्राप्तयोगिन्यै नमः। ॐ विमुक्तिदायिन्यै नमः।
ॐ भक्तगम्यायै नमः। ॐ संसारतारिण्यै नमः। ॐ धर्मार्थवादिन्यै नमः।
ॐ व्योमनिलयायै नमः। ॐ व्योमविग्रहायै नमः। ॐ पञ्चव्योमपद्यै नमः।
ॐ रक्षव्यावृत्यै नमः। प्राप्यपूरिण्यै नमः। ॐ आनन्दरूपायै नमः।
ॐ सर्वाप्तिशालिन्यै नमः। ॐ शक्तिनायिकायै नमः। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः।
ॐ हैरण्यप्राकारायै नमः। ॐ हेममालिन्यै नमः। ॐ प्रस्फुरत्तायै नमः।
ॐ भद्रहोमायै नमः। ॐ वशिन्यै नमः। ॐ रजतस्रजायै नमः।
ॐ स्वाज्ञाकार्यमरायै नमः। ॐ नित्यसुरभ्यै नमः। ॐ व्योमचारिण्यै नमः।
ॐ योगक्षेमवहायै नमः। ॐ सर्वसुलभायै नमः। ॐ इच्छाक्रियात्मिकायै नमः।
ॐ महासमूहायै नमः। ॐ निखिलप्ररोहायै नमः। ॐ वेदगोचरायै नमः।
ॐ विस्मयाधायिन्यै नमः। ॐ ब्रह्मसंहितायै नमः। ॐ सुगुणोत्तरायै नमः।
ॐ प्रज्ञापरिमितायै नमः। ॐ आत्मानुरूपायै नमः। ॐ सत्योपायार्जितायै नमः।
ॐ मनोज्ञेयायै नमः। ॐ ज्ञानगम्यायै नमः। ॐ नित्यमुक्तायै नमः।
ॐ आत्मसेविन्यै नमः। ॐ कर्तृशक्त्यै नमः। ॐ सुगहनायै नमः।
ॐ भोक्तृ शक्त्यै नमः। ॐ गणप्रियायै नमः। ॐ ज्ञानशक्त्यै नमः। (१००)
ॐ अनौपम्यायै नमः। ॐ परशक्त्यै नमः। ॐ निरामयायै नमः।
ॐ अकलङ्कायै नमः। ॐ महाशक्त्यै नमः। ॐ निराधारायै नमः।

ॐ विकासिन्यै नमः ।ॐ महामायायै नमः । ॐ महानन्दायै नमः ।
ॐ ब्रह्मानीत्यै नमः । ॐ निराश्रयायै नमः । ॐ एकस्वरूपायै नमः ।
ॐ त्रिविधायै नमः । ॐ संख्यातीतायै नमः । ॐ निरन्जनायै नमः ।
ॐ आत्मसत्तायै नमः । ॐ नित्यशुचये नमः । ॐ निर्विकल्पायै नमः ।
ॐ सुखोचितायै नमः । ॐ नित्यशान्तायै नमः । ॐ ओं निस्तरङ्गायै नमः ।
ॐ निर्भिन्नायै नमः । ॐ सर्वभेदिन्यै नमः । ॐ असंकीर्णायै नमः ।
ॐ अविधेयात्मने नमः । ॐ निषेध्दयायै नमः । ॐ सर्वपावन्यै नमः ।
ॐ निष्कामनायै नमः । ॐ सर्वरसायै नमः । ॐ अभेद्दायै नमः ।
ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः । ॐ अनिर्देश्यायै नमः । ॐ अपरिमितायै नमः ।
ॐ निर्विकारायै नमः । ॐ त्रिलक्षणायै नमः । ॐ अभयङ्कर्यै नमः ।
ॐ स्त्रीस्वरूपायै नमः । ॐ अव्यक्तायै नमः । ॐ सदसदाकृत्यै नमः ।
ॐ अप्रतर्क्यायै नमः । ॐ अप्रतिहतायै नमः । ॐ नियन्त्रयै नमः ।
ॐ यंत्रवाहिन्यै नमः । ॐ हार्दमूर्त्यै नमः । ॐ महामूर्त्यै नमः ।
ॐ अव्यक्तायै नमः ।ॐ विश्वगोपिन्यै नमः । ॐ वर्धमानायै नमः ।
ॐ अनवद्दाङ्ग्यै नमः । ॐ निरवद्दायै नमः । ॐ त्रिवर्गदायै नमः ।
ॐ अप्रमेयायै नमः । ॐ अमृतदुधायै नमः । ॐ कूटस्थायै नमः ।
ॐ कुलनन्दिन्यै नमः । ॐ अविगीतायै नमः । ॐ तन्त्रसिध्दायै नमः ।
ॐ योगसिध्दायै नमः । ॐ अमरेश्वर्यै नमः । ॐ विश्वसूत्यै नमः ।
ॐ तर्पयन्त्यै नमः । ॐ नित्यतृप्तायै नमः । ॐ महोषध्यै नमः ।
ॐ शब्दात्ययायै नमः । ॐ शब्दसहायै नमः ।ॐ कृतज्ञायै नमः ।
ॐ कृतलक्षणायै नमः । ॐ त्रिवर्तिन्यै नमः । ॐ त्रिलोकस्थायै नमः ।
ॐ भूर्भुस्वरयोनिजायै नमः । ॐ अग्राह्यायै नमः । ॐ अग्राहकायै नमः ।
ॐ अनन्ताह्वयायै नमः । ॐ सर्वातिशायिन्यै नमः । ॐ व्योमपद्दायै नमः ।
ॐ कृतधुरायै नमः । ॐ पूर्णकामायै नमः । ॐ महेश्वर्यै नमः ।
ॐ सुवाच्यायै नमः । ॐ वाचिकायै नमः । ॐ सत्यकथनायै नमः ।
ॐ सर्वपावन्यै नमः । ॐ लक्ष्यमाणायै नमः । ॐ लक्षयन्त्यै नमः ।

ॐ जगज्ज्येष्ठायै नमः। ॐ शुभावहायै नमः। ॐ जगत्प्रतिष्ठायै नमः।
ॐ भुवनभर्त्र्यै नमः। ॐ गूढप्रभाविन्यै नमः। ॐ क्रियायोगात्मिकायै नमः।
ॐ मूर्तायै नमः। ॐ हृदब्जस्थायै नमः। ॐ महाक्रमायै नमः।
ॐ परमदिवे नमः। ॐ प्रथमजायै नमः। ॐ परमाप्तायै नमः।
ॐ जगन्निधयै नमः। ॐ आत्मानपायिन्यै नमः। ॐ तुल्यस्वरूपायै नमः।
ॐ समलक्षणायै नमः। (२००)
ॐ तुल्यवृत्तायै नमः। ॐ समवयसे नमः। ॐ मोदमानायै नमः।
ॐ खगध्वजायै नमः। ॐ तुल्यचेष्टायै नमः। ॐ तुल्यशीलायै नमः।
ॐ वरदायै नमः। ॐ कामरूपिण्यै नमः। ॐ समग्रलक्षणायै नमः।
ॐ अनन्तायै नमः। ॐ तुल्यभूत्यै नमः। ॐ सनातनायै नमः। ॐ महर्द्धये नमः।
ॐ सत्यसंकल्पायै नमः। ॐ भूमिजायै नमः। ॐ परमेश्वर्यै नमः।
ॐ जगन्मात्रे नमः। ॐ सूत्रवत्यै नमः। ॐ भूतधात्र्यै नमः। ॐ यशस्विन्यै नमः।
ॐ महाभिलाषायै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ प्रधानायै नमः।
ॐ सर्वभासिन्ये नमः। ॐ नानावपुषे नमः। ॐ बहुविधायै नमः।
ॐ सर्वज्ञायै नमः। ॐ पुण्यकीर्तनायै नमः। ॐ भूताश्रयायै नमः।
ॐ हृषीकेशायै नमः। ॐ अशोकायै नमः। ॐ अङ्गिवाहिकायै नमः।
ॐ ब्रह्मात्मिकायै नमः। ॐ पुण्यजन्यै नमः। ॐ सत्यकामायै नमः।
ॐ समाधिभुवे नमः। ॐ हिरण्यगर्भायै नमः. ॐ गम्भीरायै नमः।
ॐ गोधूल्यै नमः। ॐ कमलासनायै नमः। ॐ जितक्रोधायै नमः।
ॐ कुमुदिन्यै नमः। ॐ वैजयन्त्यै नमः। ॐ मनोजवायै नमः।
ॐ धनलक्ष्म्यै नमः। ॐ स्वस्तिकर्यै नमः। ॐ राज्यलक्ष्म्यै नमः।
ॐ महासत्यै नमः। ॐ जयलक्ष्म्यै नमः। ॐ महागोष्ठयै नमः।
ॐ मघोन्यै नमः।ॐ माधवप्रियायै नमः। ॐ पद्मगर्भायै नमः।
ॐ वेदवत्यै नमः। ॐ विविक्तायै नमः। ॐ परमेष्ठिन्यै नमः।
ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः। ॐ महत्यै नमः। ॐ महायोगिप्रियायै नमः।
ॐ अनघायै नमः। ॐ पद्मे स्थितायै नमः। ॐ वेदमय्यै नमः।

ॐ कुमुदायै नमः । ॐ जयवाहिन्यै नमः । ॐ संहत्यै नमः ।
ॐ निर्मितायै नमः । ॐ ज्योतिषे नमः । ॐ नियत्यै नमः ।
ॐ विविधोत्सवायै नमः । ॐ रुद्रवन्द्यायै नमः । ॐ सिन्धुमत्यै नमः ।
ॐ वेदमात्रे नमः । ॐ मधुव्रतायै नमः । ॐ विश्वम्भरायै नमः ।
ॐ हेमवत्यै नमः । ॐ समुद्रायै नमः । ॐ इच्छाविहारिण्यै नमः ।
ॐ अनुकूलायै नमः । ॐ यज्ञवत्यै नमः । ॐ शतकोट्यै नमः ।
ॐ सुपेशलायै नमः । ॐ धर्मोदयायै नमः । ॐ धर्मसेवायै नमः ।
ॐ सुकुमार्यौ सभावत्यै नमः । ॐ भीमायै नमः । ॐ ब्रह्मस्तुतायै नमः ।
ॐ मध्यप्रभायै नमः । ॐ देवर्षिवन्दितायै नमः । ॐ देवभोग्यायै नमः ।
ॐ महाभागायै नमः । ॐ प्रतिज्ञायै नमः । ॐ पूर्णशेवध्यै नमः ।
ॐ सुवर्णायै नमः । ॐ रुचिरप्रख्यायै नमः । ॐ भोगिन्यै नमः ।
ॐ भोगदायिन्यै नमः । ॐ वसुप्रणायै नमः । ॐ उत्तमवध्वै नमः ।
ॐ गायत्र्यै नमः । (३००)
ॐ कमलोद्भवायै नमः । ॐ विद्वत्प्रियायै नमः । ॐ पद्मचिन्हायै नमः ।
ॐ वरिष्ठायै नमः । ॐ कमलेक्षणायै नमः । ॐ पद्मप्रियायै नमः ।
ॐ सुप्रसन्नायै नमः । ॐ प्रमोदायै नमः । ॐ प्रियपार्श्वगायै नमः ।
ॐ विश्वभूषायै नमः । ॐ कान्तिमत्यै नमः । ॐ कृष्णायै नमः ।
ॐ वीणारवोत्सुकायै नमः । ॐ रोचिष्कयै नमः । ॐ स्वप्रकाशायै नमः ।
ॐ शोभमानायै नमः । ॐ विहङ्गमायै नमः । ॐ देवाङ्कस्थायै नमः ।
ॐ परिणत्यै नमः । ॐ कामवत्सायै नमः । ॐ महामत्यै नमः ।
ॐ इल्वलायै नमः । ॐ उत्पलनाभायै नमः । ॐ अधिशमन्यै नमः ।
ॐ वरवर्णिन्यै नमः । ॐ स्वनिष्ठायै नमः । ॐ पद्मनिलयायै नमः ।
ॐ सद्गत्यै नमः । ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः । ॐ पद्मवर्णायै नमः ।
ॐ कामयोन्यै नमः । ॐ चण्डिकायै नमः । ॐ चारुकोपनायै नमः ।
ॐ रतिस्नुषायै नमः । ॐ पद्मधरायै नमः । ॐ पूज्यायै नमः ।
ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै नमः । ॐ नित्यकन्यायै नमः । ॐ बिन्दुमालिन्यै नमः ।

ॐ अक्षयायै नमः। ॐ सर्वगन्धिन्यै नमः। ॐ गन्धात्मिकायै नमः।
ॐ सुरसिकायै नमः। ॐ दीप्तमृत्यै नमः। ॐ सुमध्यमायै नमः।
ॐ पृथुश्रोण्यै नमः। ॐ सौम्यमुख्यै नमः। ॐ सुभगायै नमः।
ॐ विष्टरश्रुत्यै नमः। ॐ स्मिताननायै नमः। ॐ चारुगत्यै नमः।
ॐ निम्ननाभ्यै नमः। ॐ महास्तन्यै नमः। ॐ स्निग्धवेण्यै नमः।
ॐ भगवत्यै नमः।ॐ सुकान्तायै नमः। ॐ वामलोचनायै नमः।
ॐ पल्लवाङ्ध्रयै नमः। ॐ पद्ममनसे नमः। ॐ पद्मबोधायै नमः।
ॐ महाप्सरसे नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ चारुहासायै नमः।
ॐ शुभदृष्ट्यै नमः। ॐ ककुद्मिन्यै नमः। ॐ कम्बुग्रीवायै नमः।
ॐ सुजघनायै नमः। ॐ रक्तपाण्यै नमः। ॐ मनोरमायै नमः।
ॐ पद्मिन्यै नमः। ॐ मन्दगमनायै नमः। ॐ चतुर्दंष्ट्रायै नमः।
ॐ चतुर्भुजायै नमः। ॐ शुभरेखायै नमः। ॐ विलासभ्रुवे नमः।
ॐ शुकवाण्यै नमः। ॐ कलावत्यै नमः। ॐ ऋजुनासायै नमः।
ॐ कलरवायै नमः। ॐ वरारोहायै नमः। ॐ तलोदर्यै नमः।
ॐ सन्धयायै नमः। ॐ बिम्बाधरायै नमः। ॐ पूर्वभाषिण्यै नमः।
ॐ श्रीसमाह्वयायै नमः। ॐ इक्षुचापायै नमः। ॐ सुमशरायै नमः।
ॐ दिव्यभूषायै नमः। ॐ मनोहरायै नमः। ॐ वासव्यै नमः।
ॐ पाण्ड़रछत्रायै नमः। ॐ करभोरवे नमः। ॐ तिलोत्तमायै नमः।
ॐ सीमन्तिन्यै नमः। ॐ प्राणशक्त्यै नमः। ॐ विभीषिण्यै नमः।
ॐ असुधारिण्यै नमः। ॐ भद्रायै नमः। ॐ जयावहायै नमः।
ॐ चन्द्रवदनायै नमः। (४००)
ॐ कुटिलालकायै नमः। ॐ चित्राम्बरायै नमः। ॐ चित्रगन्धायै नमः।
ॐ रत्नमौलिसमुज्ज्वलायै नमः। ॐ दिव्यायुधायै नमः। ॐ दिव्यमाल्यायै नमः।
ॐ विशाखायै नमः। ॐ चित्रवाहनायै नमः। ॐ अम्बिकायै नमः।
ॐ सिन्धुतनयायै नमः। ॐ निःश्रेण्यै नमः। ॐ सुमहासिन्यै नमः।
ॐ सामप्रियायै नमः। ॐ नवमृग्यै नमः। ॐ सर्वसेव्यायै नमः।

ॐ वराङ्गनायै नमः । ॐ गन्धद्वारायै नमः । ॐ दुराधर्षायै नमः ।
ॐ नित्यपुष्टायै नमः । ॐ करीषिण्यै नमः । ॐ देवजुष्टायै नमः ।
ॐ दिव्यवर्णायै नमः । ॐ दिव्यगन्धायै नमः । ॐ स्वकर्दमायै नमः ।
ॐ अनन्तरूपायै नमः । ॐ अनन्तस्थायै नमः । ॐ सर्वदानन्तसङ्गमायै नमः ।
ॐ यज्ञाशन्यै नमः । ॐ महावृष्ट्यै नमः । ॐ सर्वपूज्यायै नमः ।
ॐ वषदक्रियायै नमः । ॐ योगप्रियायै नमः । ॐ वियन्नाभ्यै नमः ।
ॐ अनन्तश्रियै नमः । ॐ अतीन्द्रियायै नमः । ॐ योगिसेव्यायै नमः ।
ॐ सत्यरतायै नमः । ॐ योगमायायै नमः । ॐ पुरातन्यै नमः ।
ॐ सर्वेश्वर्यै नमः । ॐ सुतरुण्यै नमः । ॐ शरण्यायै नमः ।
ॐ धर्मदेवतायै नमः । ॐ सुतरायै नमः । ॐ संवृतज्योतिषे नमः ।
ॐ योगिन्यै नमः । ॐ योगसिध्दिदायै नमः । ॐ सृष्टिशक्त्यै नमः ।
ॐ द्योतमानभूतायै नमः । ॐ मङ्गलदेवतायै नमः । ॐ संहारशक्त्यै नमः ।
ॐ प्रबलायै नमः । ॐ निरुपाधये नमः । ॐ परवरायै नमः ।
ॐ उत्तारिण्यै नमः । ॐ तारयन्त्यै नमः । ॐ शाश्वत्यै नमः ।
ॐ समितिंजयायै नमः । ॐ महाश्रियै नमः । ॐ अजहत्कीर्त्यै नमः ।
ॐ योगश्रियै नमः । ॐ सिध्दिसाधन्यै नमः । ॐ पुण्यश्रियै नमः ।
ॐ पुण्यनिलयायै नमः । ॐ ब्रह्मश्रियै नमः । ॐ ब्राह्मणप्रियायै नमः ।
ॐ राजश्रियै नमः । ॐ राजकलितायै नमः । ॐ फलश्रियै नमः ।
ॐ स्वर्गदायिन्यै नमः । ॐ देवश्रियै नमः । ॐ अद्‌भुतकथायै नमः ।
ॐ वेदश्रियै नमः । ॐ श्रुतिमार्गिण्यै नमः । ॐ तमोपहायै नमः ।
ॐ अव्ययनिधये नमः । ॐ लक्ष्मणायै नमः । ॐ हृदयङ्गमायै नमः ।
ॐ मृतसंजीविन्यै नमः । ॐ शुभ्रायै नमः । ॐ चन्द्रिकायै नमः ।
ॐ सर्वतोमुख्यै नमः । ॐ सर्वोत्तमायै नमः । ॐ मित्रविन्दायै नमः ।
ॐ मैथिल्यै नमः । ॐ प्रियदर्शनायै नमः । ॐ सत्यभामायै नमः ।
ॐ वेदवेद्यायै नमः । ॐ सीतायै नमः । ॐ प्रणतपोषिण्यै नमः ।
ॐ मूलप्रकृत्यै नमः । ॐ ईशानायै नमः । ॐ शिवदायै नमः ।

ॐ दीप्रदीपिन्यै नमः । ॐ अभिप्रियायै नमः । ॐ स्वैरवृत्त्यै नमः ।
ॐ रुक्मिण्यै नमः । ॐ सर्वसाक्षिण्यै नमः । ॐ गान्धारिण्यै नमः ।
ॐ परगत्यै नमः । (५००)
ॐ तत्वगर्भायै नमः । ॐ भवाभवायै नमः । ॐ अन्तर्वत्यै नमः ।
ॐ महामुद्रायै नमः । ॐ विष्णुदुर्गायै नमः । ॐ महाबलायै नमः ।
ॐ मदयन्त्यै नमः । ॐ लोकधारिण्यै नमः । ॐ अदृश्यायै नमः ।
ॐ सर्वनिष्कृत्यै नमः । ॐ देवसेनायै नमः । ॐ आत्मफलदायै नमः ।
ॐ वसुधायै नमः । ॐ मुख्यमातृकायै नमः । ॐ क्षीरधारायै नमः ।
ॐ घृतमय्यै नमः । ॐ जुह्वत्यै नमः । ॐ यज्ञदक्षिणायै नमः ।
ॐ योगनिद्रायै नमः । ॐ योगरतायै नमः । ॐ ब्रह्मचर्यायै नमः ।
ॐ दुरत्ययायै नमः । ॐ सिह्मपिञ्च्छायै नमः । ॐ महादुर्गायै नमः ।
ॐ जयन्त्यै नमः । ॐ खगवाहिन्यै नमः । ॐ जगत्प्रियायै नमः ।
ॐ विरूपाक्ष्यै नमः । ॐ सुवर्णायै नमः । ॐ क्रूरतापिन्यै नमः ।
ॐ कात्यायन्यै नमः । ॐ कालरात्र्यै नमः । ॐ निशिदृष्टायै नमः ।
ॐ करालिकायै नमः । ॐ त्रिशूलिन्यै नमः । ॐ खड्गधरायै नमः ।
ॐ महाकाल्यै नमः । ॐ इन्द्रमालिन्यै नमः । ॐ एकवीरायै नमः ।
ॐ भद्रकाल्यै नमः । ॐ सौन्दर्यै नमः । ॐ उल्लसद्रदायै नमः ।
ॐ नारायण्यै नमः । ॐ जगत्पूरिण्यै नमः । ॐ उर्वरायै नमः ।
ॐ द्रुहिणप्रस्वे नमः । ॐ यज्ञकामायै नमः । ॐ लेलिहानायै नमः ।
ॐ तीर्थकर्यै नमः । ॐ उग्रविक्रमायै नमः । ॐ गरुत्मदुदयायै नमः ।
ॐ अत्युग्रायै नमः । ॐ वाराह्यै नमः । ॐ मातृभीषिण्यै नमः ।
ॐ अश्वक्रान्तायै नमः । ॐ रथक्रान्तायै नमः । ॐ विष्णुकान्तायै नमः ।
ॐ उरुचारिण्यै नमः । ॐ वैरोचिन्यै नमः । ॐ नारसिंह्यै नमः ।
ॐ जीमूतायै नमः । ॐ शुभदेक्षणायै नमः । ॐ दीक्षाविधायै नमः ।
ॐ विश्वशक्त्यै नमः । ॐ निजशक्त्यै नमः । ॐ सुदर्शिन्यै नमः ।
ॐ प्रतीत्यै नमः । ॐ जगत्यै नमः । ॐ वन्यधारिण्यै नमः ।

ॐ कलिनाशिन्यै नमः ।ॐ अयोध्यायै नमः । ॐ अच्छिन्नसन्तानायै नमः ।
ॐ महारत्नायै नमः । ॐ सुखावहायै नमः । ॐ राजवर्त्यै नमः ।
ॐ अर्कप्रतिभायै नमः । ॐ विनयित्र्यै नमः । ॐ महाशनायै नमः ।
ॐ अमृतस्यन्दिन्यै नमः । ॐ सीमायै नमः । ॐ यज्ञगर्भायै नमः ।
ॐ समीक्षणायै नमः । ॐ आकूत्यै नमः । ॐ ऋग्यजुःसामघोषायै नमः ।
ॐ आरामवधूत्सुकायै नमः । ॐ सोमपायै नमः । ॐ माधव्यै नमः ।
ॐ नित्यकल्याण्यै नमः । ॐ कमलार्चितायै नमः ।ॐ योगरूढ्यै नमः ।
ॐ स्वार्थजुष्टायै नमः । ॐ वह्निवर्णायै नमः । ॐ जितासुरायै नमः ।
ॐ यज्ञविद्यायै नमः । ॐ गुह्यविद्यायै नमः । ॐ अध्यात्मविद्यायै नमः ।
ॐ कृतागमायै नमः । ॐ आप्यायिन्यै नमः । ॐ कलातीतायै नमः ।
ॐ सुमित्रायै नमः । (६००)
ॐ परभक्तिदायै नमः । ॐ काङ्क्षमाणायै नमः । ॐ महामायायै नमः ।
ॐ कोलकामायै नमः । ॐ अमरावत्यै नमः । ॐ सुवीर्यायै नमः ।
ॐ दुःस्वप्रहरायै नमः । ॐ देवक्यै नमः । ॐ वसुदेवतायै नमः ।
ॐ सौदामिन्यै नमः । ॐ मेघरथायै नमः । ॐ ऋद्धिदायै नमः ।
ॐ दैत्यमर्दिन्यै नमः । ॐ श्रेयस्कर्यै नमः । ॐ चित्रलीलायै नमः ।
ॐ एकायिन्यै नमः । ॐ रत्नपादुकायै नमः ।ॐ मनस्यमानायै नमः ।
ॐ तुलस्यै नमः । ॐ रोगनाशिन्यै नमः ।ॐ उरुप्रथायै नमः ।
ॐ तेजस्विन्यै नमः । ॐ सुखोज्ज्वलायै नमः । ॐ मन्दरेखायै नमः ।
ॐ अमृताशिन्यै नमः । ॐ ब्रह्मिष्ठायै नमः । ॐ वह्निशमन्यै नमः ।
ॐ जुषमाणायै नमः । ॐ गुणात्ययायै नमः । ॐ कादम्बर्यै नमः ।
ॐ ब्रह्मरतायै नमः । ॐ विधात्र्यै नमः । ॐ उज्ज्वलहस्तिकायै नमः ।
ॐ अक्षोभ्यायै नमः । ॐ सर्वतोभद्रायै नमः । ॐ वयस्यायै नमः ।
ॐ स्वस्तिदक्षिणायै नमः । ॐ सहस्रास्यायै नमः । ॐ ज्ञानमात्रे नमः ।
ॐ वैश्वानर्यै नमः । ॐ अक्षवर्तिन्यै नमः । ॐ प्रत्यग्वरायै नमः ।
ॐ वारणवत्यै नमः । ॐ अनसूयायै नमः । ॐ दुरासदायै नमः ।

ॐ अरुन्धत्यै नमः । ॐ कुण्डलिन्यै नमः । ॐ भव्यायै नमः ।
ॐ दुर्गतिनाशिन्यै नमः । ॐ मृत्युञ्जयायै नमः । ॐ त्रासहरायै नमः ।
ॐ निर्भयायै नमः । ॐ शत्रुसूदिन्यै नमः । ॐ एकाक्षरायै नमः ।
ॐ सुपुरन्धर्यै नमः । ॐ सुरपक्षायै नमः । ॐ वरातुलायै नमः ।
ॐ सकृद्विभासायै नमः । ॐ प्रद्युम्नायै नमः । ॐ हरिभद्रायै नमः ।
ॐ धुरन्धरायै नमः । ॐ बिल्वप्रियायै नमः । ॐ अवन्यै नमः ।
ॐ चक्रहृदयायै नमः । ॐ कम्बुतीर्थगायै नमः । ॐ सर्वमन्त्रात्मिकायै नमः ।
ॐ विद्युते नमः । ॐ यशोदायै नमः । ॐ सर्वरञ्जिन्यै नमः ।
ॐ ध्वजछत्राश्रयायै नमः । ॐ भूम्यै नमः । ॐ वैष्णव्यै नमः ।
ॐ सद्वणोज्ज्वलायै नमः । ॐ सुषेणायै नमः । ॐ लोकविदितायै नमः ।
ॐ कामसुवे नमः । ॐ जगदादिभुवे नमः । ॐ वेदान्तयोन्यै नमः ।
ॐ जिज्ञासायै नमः । ॐ मनीषायै नमः । ॐ समदर्शिन्यै नमः ।
ॐ सहस्रशक्त्यै नमः । ॐ आवृत्त्यै नमः । ॐ सुस्थिरायै नमः ।
ॐ श्रेयसांनिधये नमः । ॐ रोहिण्यै नमः । ॐ रेवत्यै नमः ।
ॐ चन्द्रसोदर्यै नमः । ॐ भद्रमोदिन्यै नमः । ॐ आर्यायै नमः ।
ॐ गव्यप्रियायै नमः । ॐ विश्वभाविन्यै नमः । ॐ सुविभाविन्यै नमः ।
ॐ सुप्रदृश्यायै नमः । ॐ कामचारिण्यै नमः । ॐ अप्रमत्तायै नमः ।
ॐ ललन्तिकायै नमः । ॐ मोक्षलक्ष्म्यै नमः । ॐ जगद्योन्यै नमः ।
ॐ व्योमलक्ष्म्यै (७००)
ॐ सुदुर्लभायै नमः । ॐ भास्कर्यै नमः । ॐ पुण्यगेहस्थायै नमः ।
ॐ मनोज्ञायै नमः । ॐ विभवप्रदायै नमः । ॐ लोकस्वामिन्यै नमः ।
ॐ अच्युतार्थायै नमः । ॐ पुष्कलायै नमः । ॐ जगदाकृत्यै नमः ।
ॐ विचित्रहारिण्यै नमः । ॐ कान्तायै नमः । ॐ पाविन्यै नमः ।
ॐ भूतभाविन्यै नमः । ॐ प्राणिन्यै नमः । ॐ प्राणदायै नमः ।
ॐ विद्वते नमः । ॐ विश्वब्रह्माण्डवासिन्यै नमः । ॐ सम्पूर्णायै नमः ।
ॐ परमोत्साहायैनमः । ॐ श्रीमत्यै नमः । ॐ श्रुत्यै नमः ।

ॐ श्रयन्त्यै नमः । ॐ श्रयमाणायै नमः । ॐ क्ष्मायै नमः ।
ॐ विश्वरूपायै नमः । ॐ प्रसादिन्यै नमः । ॐ हर्षिण्यै नमः ।
ॐ प्रथमायै नमः ।ॐ सर्वायै नमः । ॐ विशालायै नमः ।
ॐ कामवर्षिण्यै नमः । ॐ सुप्रतीकायै नमः । ॐ पृश्निमत्यै नमः ।
ॐ निवृत्त्यै नमः । ॐ विविधायै नमः । ॐ परायै नमः ।
ॐ सुयज्ञायै नमः । ॐ मधुरायै नमः । ॐ श्रीदायै नमः ।
ॐ देवरात्यै नमः । ॐ महामनसे नमः । ॐ स्थूलायै नमः ।
ॐ सर्वाकृत्यै नमः ।ॐ सूक्ष्मायै नमः । ॐ निम्नगव्यायै नमः ।
ॐ तमोनुदायै नमः । ॐ तुष्ट्यै नमः । ॐ वागीश्वर्यै नमः ।
ॐ पुष्ट्यै नमः । ॐ सर्वायै नमः । ॐ आद्यायै नमः ।
ॐ स्वरूपशोषिण्यै नमः । ॐ शक्त्यात्मिकायै नमः । ॐ शब्दशक्त्यै नमः ।
ॐ विशिष्टायै नमः । ॐ वायुमत्यै नमः । ॐ अमायै नमः ।
ॐ आन्वीक्षिक्यै नमः । ॐ त्रयीवार्तायै नमः । ॐ दण्डनीत्यै नमः ।
ॐ नियामिकायै नमः । ॐ व्याल्यै नमः । ॐ संकर्षण्यै नमः ।
ॐ द्योतायै नमः । ॐ महादेव्यै नमः । ॐ अपराजितायै नमः ।
ॐ कपिलायै नमः । ॐ पिङ्गलायै नमः । ॐ स्वस्थायै नमः ।
ॐ बलाक्यै नमः । ॐ घोषनन्दिन्यै नमः । ॐ अजितायै नमः ।
ॐ कर्षण्यै नमः । ॐ क्षान्त्यै नमः ।ॐ गरुडायै नमः ।
ॐ गरुडासनायै नमः । ॐ ह्लादिन्यै नमः । ॐ अनुग्रहायै नमः ।
ॐ नित्यायै नमः । ॐ ब्रह्मविद्यायै नमः । ॐ हिरण्मय्यै नमः ।
ॐ मह्यै नमः ।ॐ शुद्धविधायै नमः । ॐ पृथ्व्यै नमः ।
ॐ शतानन्दायै नमः । ॐ अंशुमालिन्यै नमः । ॐ यज्ञाश्रयायै नमः ।
ॐ ख्यातिपरायै नमः । ॐ स्तव्यायै नमः । ॐ धृष्ट्यै नमः ।
ॐ त्रिकालगायै नमः । ॐ संबोधिन्यै नमः । ॐ शब्दपूर्णायै नमः ।
ॐ विजयायै नमः । ॐ अंशुमत्यै नमः । ॐ कलायै नमः ।
ॐ शिवायै नमः । ॐ स्तुतिप्रियायै नमः । ॐ ख्यात्यै नमः ।

ॐ जीवयन्त्यै नमः । (८००) ॐ पुनर्वसवे नमः । ॐ दीक्षायै नमः ।
ॐ भक्तार्तिहायै नमः । ॐ रक्षायै नमः । ॐ परीक्षायै नमः ।
ॐ यज्ञसंभवायै नमः । ॐ आर्द्रायै नमः । ॐ पुष्करिण्यै नमः ।
ॐ पुण्यायै नमः । ॐ गण्यायै नमः । ॐ दारिद्र्यभञ्जिन्यै नमः ।
ॐ धन्यायै नमः । ॐ मान्यायै नमः । ॐ पद्मनेम्यै नमः । ॐ भार्गव्यै नमः ।
ॐ वंशवर्धिन्यै नमः । ॐतीक्ष्णप्रवृत्यै नमः । ॐ सत्कीर्त्यै नमः ।
ॐ निधिसेव्यायै नमः । ॐ अघनाशिन्यै नमः । ॐ संज्ञायै नमः ।
ॐ निःसंशयायै नमः । ॐ पूर्वायै नमः । ॐ वनमालायै नमः ।
ॐ वसुन्धरायै नमः । ॐ पृथ्व्यै नमः । ॐ महोत्कटायै नमः ।
ॐ अहल्यायै नमः । ॐ मण्डलायै नमः । ॐ आश्रितमानदायै नमः ।
ॐ सर्वस्यै नमः । ॐ नित्योदितायै नमः । ॐ उदारायै नमः ।
ॐ जृम्भमाणायै नमः । ॐ महोदयायै नमः । ॐ चन्द्रकान्तोदितायै नमः ।
ॐ सूर्यायै नमः । ॐ चतुरश्रायै नमः । ॐ मनोजवायै नमः ।
ॐ बालायै नमः । ॐ कुमार्यै नमः । ॐ युवत्यै नमः ।
ॐ करुणायै नमः । ॐ भक्तवत्सलायै नमः । ॐ मेदिन्यै नमः ।
ॐ उपनिषन्मिश्रायै नमः । ॐ सुमवीरवे नमः । ॐ धनेश्वर्यै नमः ।
ॐ दुर्मर्षण्यै नमः । ॐ सुचरितायै नमः ।ॐ बोधायै नमः ।
ॐ शोभायै नमः । ॐ सुवर्चलायै नमः । ॐ यमुनायै नमः ।
ॐ अक्षौहिण्यै नमः । ॐ गङ्गायै नमः । ॐ मन्दाकिन्यै नमः ।
ॐ अमलाशयायै नमः । ॐ गोदायै नमः । ॐ गोदावर्यै नमः ।
ॐ चन्द्रभागायै नमः । ॐ कावेर्यै नमः । ॐ उदन्वत्यै नमः ।
ॐ सिनीवाल्यै नमः । ॐ कुहवे नमः । ॐ राकायै नमः ।
ॐ वारणायै नमः । ॐ सिन्धुमत्यै नमः । ॐ अमायै नमः ।
ॐ पूर्तये नमः ।ॐ मायात्मिकायै नमः । ॐ स्फूर्तये नमः ।
ॐ व्याख्यायै नमः ।ॐ सूत्रायै नमः । ॐ प्रजावत्यै नमः ।
ॐ वृद्ध्यै नमः । ॐ स्थित्यै नमः ।ॐ ध्रुवायै नमः ।

ॐ बुद्ध्यै नमः । ॐ त्रिगुणायै नमः । ॐ गुणगह्वरायै नमः ।
ॐ अमोघायै नमः । ॐ शान्तिदायै नमः । ॐ सत्यायै नमः ।
ॐ ज्ञानदायै नमः ।ॐ उत्कर्षिण्यै नमः । ॐ शिवायै नमः ।
ॐ प्रकृत्यै नमः । ॐ भामिन्यै नमः ।ॐ लोलायै नमः ।
ॐ कमलायै नमः । ॐ कामदुहे नमः । ॐ विध्यै नमः ।
ॐ प्रज्ञायै नमः । ॐ रामायै नमः । ॐ परायै नमः ।
ॐ सन्ध्यायै नमः ।ॐ सुभद्रायै नमः । ॐ सर्वमङ्गलायै नमः ।
ॐ नन्दायै नमः । (१००) ॐ भद्रायै नमः ।ॐ जयायै नमः ।
ॐ रिक्तायै नमः । ॐ तिथिपूर्णायै नमः । ॐ ऋतम्भरायै नमः ।
ॐ काष्ठायै नमः । ॐ कामेश्वर्यै नमः । ॐ निष्ठायै नमः ।
ॐ काम्यायै नमः ।ॐ राम्यायै नमः । ॐ धरायै नमः ।
ॐ स्मृत्यै नमः । ॐ शङ्खिन्यै नमः ।ॐ चक्रिण्यै नमः ।
ॐ श्यामायै नमः । ॐ सामायै नमः । ॐ गोत्रायै नमः ।
ॐ रमायै नमः । ॐ द्युत्यै नमः । ॐ शान्तिदायै नमः ।
ॐ स्तुत्यै नमः ।ॐ सिद्धयै नमः । ॐ विरजायै नमः ।
ॐ अत्युज्ज्वलायै नमः । ॐ अव्ययायै नमः ।ॐ वाण्यै नमः ।
ॐ गौर्यै नमः । ॐ इन्दिरायै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
ॐ मेधायै नमः । ॐ श्रद्धायै नमः । ॐ अप्रमायै नमः । ॐ द्युतये नमः ।
ॐ स्वधायै नमः । ॐ स्वाहायै नमः । ॐ रतिरुषायै नमः । ॐ वसवे नमः ।
ॐ विद्यायै नमः । ॐ धृत्यै नमः । ॐ सभायै नमः । ॐ शिष्टायै नमः ।
ॐ इष्टायै नमः । ॐ शुच्यै नमः । ॐ धात्र्यै नमः । ॐ सुधारायै नमः ।
ॐ अक्षोण्यजायै नमः । ॐ अमृतायै नमः । ॐ रमण्यै नमः । ॐ एकायै नमः ।
ॐ शारदाम्बायै नमः । ॐ समेधायै नमः । ॐ आद्यायै नमः ।
ॐ शुभाक्षरायै नमः ।ॐ रत्नावल्यै नमः । ॐ भारत्यै नमः । ॐ ईडायै नमः ।
ॐ धीरायै नमः । ॐ धियै नमः । ॐ केवलायै नमः । ॐ आत्मदायै नमः ।
ॐ यस्यै नमः ।ॐ तस्यै नमः । ॐ शुद्धयै नमः । ॐ सोस्मितायै नमः ।

ॐ कस्यै नमः ।ॐ नीलायै नमः । ॐ राधायै नमः । ॐ अमृतोद्भवायै नमः ।
ॐ विभूत्यै नमः ।ॐ निष्कलायै नमः । ॐ रम्यायै नमः । ॐ रक्षायै नमः ।
ॐ सुविमलायै नमः ।ॐ क्षमायै नमः । ॐ प्राप्त्यै नमः ।
ॐ वासन्तिकालेखायै नमः ।ॐ भूरिबीजायै नमः । ॐ महांगदायै नमः ।
ॐ वरधुर्यायै नमः ।ॐ स्वधायै नमः । ॐ ह्रियै नमः । ॐ भुवे नमः ।
ॐ कामिन्यै नमः ।ॐ शोकनाशिन्यै नमः । ॐ मायायै नमः । ॐ प्रीत्यै नमः ।
ॐ असहनायै नमः ।ॐ नर्मदायै नमः । ॐ गोकुलाश्रयायै नमः ।
ॐ अर्कप्रभायै नमः ।ॐ रसेभायै नमः । ॐ श्रीनिलयायै नमः ।
ॐ इन्दुप्रभायै नमः । ॐ अद्‌भुतायै नमः ।ॐ श्रियै नमः । ॐ कृशानुप्रभायै नमः ।
ॐ वज्रलम्बनायै नमः ।ॐ सर्वभूमिदायै नमः । ॐ भोगप्रियायै नमः ।
ॐ भोगवत्यै नमः । (१०००)ॐ भोगीन्द्रशयनासनायै नमः । ॐ अश्वपूर्वायै नमः ।
ॐ रथमध्यायै नमः ।ॐ हस्तिनादप्रबोधिन्यै नमः ।
ॐ सर्वलक्षणलक्षण्यायै नमः ।ॐ सर्वालोकप्रियङ्कर्यै नमः ।
ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यायै नमः । (१००८)

ॐ दृष्टादृष्टफलप्रदायै नमः । सर्वाभीष्टफलप्रदायै नमः ।
सुप्रीता भव सुप्रसन्ना भव सर्वभीष्टफलदा भव

श्री महालक्ष्म्यै नमः ।

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः ।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
लक्ष्मीः प्रसीद सततं नमतां शरण्ये ॥

कर्पूर नीराजनं मङ्गल आरति

॥ समस्त सन्मङ्गलानि सन्तु ॥

॥ शुभम् ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री महालक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

चतुर्भुजां महालक्ष्मीं द्विनेत्रां चारुकुण्डलाम्
श्वेतमाल्यांबरधरां हार केयूरभूषिताम्
सर्वलक्षणसम्पन्नां पीनोन्नतपयोधराम्
प्रफुल्लोत्पलविस्तीर्णलोचनां सुस्मितााननाम्
लसल्ललाटतिलकां वेङ्कटाद्रीशवल्लभाम्
कृष्णकुञ्चितकेशान्तां वंशमुक्ताफलत्विषाम्
पद्मगर्भोपमाकारां सुमुखां भावयेत् सदा।

ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ विकृत्यै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। ॐ सुरभ्यै नमः। ॐ परमात्मिकायै नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ पद्मालयायै नमः। ॐ शुचये नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ सुधायै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ धन्यायै नमः। ॐ हिरण्मय्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ नित्यपुष्टायै नमः। विभावर्यै नमः। ॐ आदित्यै नमः। ॐ दित्यै नमः। ॐ दीप्तायै नमः। ॐ वसुधायै नमः। ॐ वसुधारिण्यै नमः। ॐ कमलायै नमः। ॐ कान्तायै नमः। ॐ कामाक्ष्यै नमः। ॐ क्रोधसंभवायै नमः। ॐ अनुग्रहपदायै नमः। ॐ बुद्धये नमः। ॐ अनघायै नमः। ॐ हरिवल्लभायै नमः। ॐ अशोकायै नमः। ॐ अमृतायै नमः। ॐ दीप्तायै नमः।ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः। ॐ धर्मनिलयायै नमः। ॐ करुणायै नमः। ॐ लोकमात्रे नमः। ॐ पद्मप्रियायै नमः। ॐ पद्महस्तायै नमः। ॐ पद्माक्ष्यै नमः। ॐ पद्मसुंदर्यै नमः। ॐ पद्मोद्भवायै नमः। ॐ पद्ममुख्यै नमः। ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः। ॐ रमायै नमः। ॐ पद्ममालाधरायै नमः। ॐ देव्यै नमः। ॐ पद्मिन्यै नमः। ॐ पद्मगंधिन्यै नमः। ॐ पुण्यगंधायै नमः। ॐ सुप्रसन्नायै नमः। ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ चन्द्रवदनायै नमः। ॐ चन्द्रायै नमः। ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः। ॐ चतुर्भुजायै नमः। ॐ चन्द्ररूपायै नमः। ॐ इन्दिरायै नमः। ॐ इन्दुशीतलायै नमः।

ॐ आल्हादजनन्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ शिवकर्यै नमः। ॐ सत्यै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ विश्वजनन्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः। ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः। ॐ शान्तायै नमः। ॐ शुक्लमाल्यांबरायै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ भास्कर्यै नमः। ॐ बिल्वनिलयायै नमः। ॐ वरारोहायै नमः। ॐ यशस्विन्यै नमः। ॐ वसुंधरायै नमः। ॐ उदारांगायै नमः। ॐ हरिण्यै नमः। ॐ हेममालिन्यै नमः। ॐ धनधान्यकर्यै नमः। ॐ सिद्धयै नमः। ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः। ॐ शुभप्रदायै नमः। ॐ नृपवेश्मगतानंदायै नमः। ॐ वरलक्ष्म्यै नमः। ॐ वसुप्रदायै नमः। ॐ शुभायै नमः। ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः। ॐ समुद्रतनयायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ मंगलादेव्यै नमः। ॐ विष्णुवक्षस्थलस्थितायै नमः। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः। ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः। ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः। ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः। ॐ देव्यै नमः। ॐ सर्वोपद्रवारिण्यै नमः। ॐ नवदुर्गायै नमः। ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मिकायै नमः। ॐ त्रिकालज्ञानसंपन्नायै नमः। ॐ भुवनेश्वर्यै नमः।

ॐ श्री रङ्गनायकी महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ दृष्टादृष्टफलप्रदायै नमः। सर्वाभीष्टफलप्रदायै नमः।

सुप्रीता भव सुप्रसन्ना भव सर्वाभीष्टफलदा भव

इति श्रीलक्ष्मी अष्टोत्तरशत नामावलि संपूर्णा।

॥ समस्त सन्मङ्गलानि सन्तु ॥

॥ शुभम् ॥

॥ ॐ श्रियै नमः ॥

॥ श्री महालक्ष्मी अक्षरमालिका नामावलिः ॥

अशेषजगदीशित्रि अकिञ्चन मनोहरे
अकरादिक्षकारान्त नामभिः पूजयाम्यहम्।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये सर्वाभीष्टफलप्रदे
त्वयैवप्रेरितो देवि अर्चनां करवाण्यहम्।

सर्व मङ्गलसंस्कारसंभृतां परमां शुभाम्।
हरिद्राचूर्ण संपन्नां अर्चनां स्वीकुरु स्वयम्॥

ॐ अकार लक्ष्म्यै नमः। ॐ अच्युत लक्ष्म्यै नमः। ॐ अन्न लक्ष्म्यै नमः।
ॐ अनन्त लक्ष्म्यै नमः। ॐ अनुग्रह लक्ष्म्यै नमः। ॐ अमर लक्ष्म्यै नमः।
ॐ अमृत लक्ष्म्यै नमः। ॐ अमोघ लक्ष्म्यै नमः। ॐ अष्ट लक्ष्म्यै नमः।
ॐ अक्षर लक्ष्म्यै नमः। ॐ आत्म लक्ष्म्यै नमः। ॐ आदि लक्ष्म्यै नमः।
ॐ आनन्द लक्ष्म्यै नमः। ॐ आर्द्र लक्ष्म्यै नमः। ॐ आरोग्य लक्ष्म्यै नमः।
ॐ इच्छा लक्ष्म्यै नमः। ॐ इभ लक्ष्म्यै नमः। ॐ इन्दु लक्ष्म्यै नमः।
ॐ इष्ट लक्ष्म्यै नमः। ॐ ईडित लक्ष्म्यै नमः। ॐ उकार लक्ष्म्यै नमः।
ॐ उत्तम लक्ष्म्यै नमः। ॐ उद्यान लक्ष्म्यै नमः। ॐ उद्योग लक्ष्म्यै नमः।
ॐ उमा लक्ष्म्यै नमः। ॐ ऊर्जा लक्ष्म्यै नमः। ॐ ऋद्धि लक्ष्म्यै नमः।
ॐ एकान्त लक्ष्म्यै नमः। ॐ ऐश्वर्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ ओंकार लक्ष्म्यै नमः।
ॐ औदार्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ औषधि लक्ष्म्यै नमः। ॐ कनक लक्ष्म्यै नमः।
ॐ कला लक्ष्म्यै नमः। ॐ कान्त लक्ष्म्यै नमः। ॐ कान्ति लक्ष्म्यै नमः।
ॐ कीर्ति लक्ष्म्यै नमः। ॐ कुटुम्ब लक्ष्म्यै नमः। ॐ कोश लक्ष्म्यै नमः।
ॐ कौतुक लक्ष्म्यै नमः। ॐ ख्याति लक्ष्म्यै नमः। ॐ गज लक्ष्म्यै नमः।

ॐ गान लक्ष्म्यै नमः। ॐ गुण लक्ष्म्यै नमः। ॐ गृह लक्ष्म्यै नमः। ॐ गो लक्ष्म्यै नमः। ॐ गोत्र लक्ष्म्यै नमः। ॐ गोदा लक्ष्म्यै नमः। ॐ गोप लक्ष्म्यै नमः। ॐ गोविन्द लक्ष्म्यै नमः। ॐ चम्पक लक्ष्म्यै नमः। ॐ छन्दो लक्ष्म्यै नमः। ॐ जनक लक्ष्म्यै नमः। ॐ जय लक्ष्म्यै नमः। ॐ जीव लक्ष्म्यै नमः। ॐ तारक लक्ष्म्यै नमः। ॐ तीर्थ लक्ष्म्यै नमः। ॐ तेजो लक्ष्म्यै नमः। ॐ दया लक्ष्म्यै नमः। ॐ दिव्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ दीप लक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गा लक्ष्म्यै नमः। ॐ द्वार लक्ष्म्यै नमः। ॐ धन लक्ष्म्यै नमः। ॐ धर्म लक्ष्म्यै नमः। ॐ धान्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ धीर लक्ष्म्यै नमः। ॐ धृति लक्ष्म्यै नमः। ॐ धैर्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ ध्वज लक्ष्म्यै नमः। ॐ नाग लक्ष्म्यै नमः। ॐ नाद लक्ष्म्यै नमः। ॐ नाट्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ नित्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ पद्म लक्ष्म्यै नमः। ॐ पूर्ण लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रजा लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रणव लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रसन्न लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रसाद लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रीति लक्ष्म्यै नमः। ॐ भद्र लक्ष्म्यै नमः। ॐ भवन लक्ष्म्यै नमः। ॐ भव्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ भाग्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ भुवन लक्ष्म्यै नमः। ॐ भूति लक्ष्म्यै नमः। ॐ भूरि लक्ष्म्यै नमः। ॐ भूषण लक्ष्म्यै नमः। ॐ भोग्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ मकार लक्ष्म्यै नमः। ॐ मन्त्र लक्ष्म्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ मान्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ मेधा लक्ष्म्यै नमः। ॐ मोहन लक्ष्म्यै नमः। ॐ मोक्ष लक्ष्म्यै नमः। ॐ यन्त्र लक्ष्म्यै नमः। ॐ यज्ञ लक्ष्म्यै नमः। ॐ याग लक्ष्म्यै नमः। ॐ योग लक्ष्म्यै नमः। ॐ योगक्षेम लक्ष्म्यै नमः। ॐ रङ्ग लक्ष्म्यै नमः। ॐ रक्षा लक्ष्म्यै नमः। ॐ राज लक्ष्म्यै नमः। ॐ लावण्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ लीला लक्ष्म्यै नमः। ॐ वर लक्ष्म्यै नमः। ॐ वरद लक्ष्म्यै नमः। ॐ वराह लक्ष्म्यै नमः। ॐ वसन्त लक्ष्म्यै नमः। ॐ वसु लक्ष्म्यै नमः। ॐ वार लक्ष्म्यै नमः। ॐ वाहन लक्ष्म्यै नमः। ॐ वित्त लक्ष्म्यै नमः। ॐ विजय लक्ष्म्यै नमः। ॐ वीर लक्ष्म्यै नमः। ॐ वेद लक्ष्म्यै नमः। ॐ वेत्र लक्ष्म्यै नमः। ॐ व्योम लक्ष्म्यै नमः।

ॐ शान्त लक्ष्म्यै नमः । ॐ शुभ लक्ष्म्यै नमः । ॐ शुभ्र लक्ष्म्यै नमः । ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः । ॐ सन्तान लक्ष्म्यै नमः । ॐ सिद्ध लक्ष्म्यै नमः । ॐ सिद्धि लक्ष्म्यै नमः । ॐ सूत्र लक्ष्म्यै नमः । ॐ सौम्य लक्ष्म्यै नमः । ॐ हेमाब्ज लक्ष्म्यै नमः । ॐ हृदय लक्ष्म्यै नमः । ॐ क्षेत्र लक्ष्म्यै नमः । ॐ ज्ञान लक्ष्म्यै नमः । ॐ अकिञ्चिनाश्रयायै नमः ॥

ॐ दृष्टादृष्टफलप्रदायै नमः । सर्वाभीष्टफलप्रदायै नमः ।

॥ इति श्रीमहालक्ष्मी अक्षरमालिका नामावलिः संपूर्णाः ॥

समाप्त

श्री कमला-स्तोत्र

श्री लक्ष्म्यै नमः ।

शंकर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रमनुत्तमम् ।
पठनात् श्रवणाद्यस्य नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥

श्री महादेवजी बोले, हे पार्वति ! अब अति उत्तम लक्ष्मीस्तोत्र कहता हूं, इसको पढ़ने वा सुनने से मनुष्यों को मुक्ति प्राप्त होती है ।

गुह्याद् गुह्यतरं पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वमंत्रमयं साक्षाच्छृणु पर्वतनन्दिनि ॥

हे पर्वतनन्दिनि ! यह गुह्यसे गुह्यतर सर्वदेवों से नमस्कृत और सर्वमन्त्रमय है, सुनो ॥

अनन्तरूपिणी लक्ष्मीरपारगुणसागरी ।
अणिमादिसिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि लक्ष्मि ! तुम अनन्तरूपिणी और गुणों की सागरस्वरूप हो । तुम्हीं प्रसन्न होकर अणिमादि सिद्धि देती हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

आपदुद्धारिणी त्वं हि आद्या शक्तिः शुभा परा ।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं प्रसन्न होकर नम्र हुए भक्तों को विपदा से उद्धार करती हो, तुम्हीं कल्याणी और आद्या शक्ति हो, तुम्हीं सबकी आदि और तुम्हीं आनन्ददायिनी हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं ।

इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्टमंत्रस्वरूपिणी ।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि जगन्माता लक्ष्मी ! तुम्हीं अनीष्ट प्रदान करती हो, तुम्हारा मुख पूर्णचन्द्रमा के समान प्रकाशमान है, तुम्हीं इष्टमन्त्रस्वरूपिणी और इच्छामयी हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं ।

उमा उमापतेस्त्वन्तु ह्युत्कण्ठाकुलनाशिनी ।
उर्वीश्वरी जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि लक्ष्मि ! तुम्हीं उमापति की उमा हो, तुम्हीं उत्कण्ठित मनुष्यों की उत्कण्ठा का नाश करती हो, तुम्हीं पृथ्वी की ईश्वरी हो, तुमको नमस्कार है ।

ऐरावतपतिपूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिनी ।
औदार्य्यगुणसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि ! तुम्हीं ऐरावतपति देवराज इन्द्र की वन्दनीय हो, तुम्हीं प्रसन्न होनेपर सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान कर सकती हो, तुम्ही उदार गुणों से विभूषित हो, तुमको नमस्कार है ।

कृष्णवक्षःस्थिता देवि कलिकल्मषनाशिनी ।
कृष्णचित्तहरा कर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे कमले ! तुम सदा श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में विराजमान रहती हो, तुम्हारे बिना और कोई भी कलिकल्मषध्वंस करने में समर्थ नहीं है, तुमने ही श्रीकृष्ण का चित्त हरण किया है, अतएवं तुम्हीं सर्वकर्त्री हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

कन्दर्पदमना देवि कल्याणी कमलानना ।
करुणार्णवसम्पूर्णा शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुमने ही काम का दर्प हरण किया है, तुम्हीं कल्याणमयी हो, तुम्हारा मुख कमल की समान मनोहर है, और तुम्हीं दया की एकमात्र सागरस्वरूप हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

खञ्जनाक्षी खंजनासा देवि खेदविनाशिनी ।
खंञ्जरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम खञ्जनाक्षी अर्थात् खञ्जन के नेत्र की समान सुनयना हो, तुम्हारी नासिका गरुड़ की नासिका के समान मनोहर है, तुम आश्रित जनों का खेद विनाश करती हो, और तुम्हारी गति खञ्जरीटके समान है, मैं तुमको मस्तक झुकाकर नमस्कार करता हूँ ।

गोविन्दवल्लभा देवी गन्धर्वकुलपावनी।
गोलोकवासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम्हीं वैकुण्ठपति गोविन्द की प्रियतमा अर्थात् प्यारी हो, तुम्हारे अनुग्रह से ही गन्धर्वकुल पवित्र हुआ है, तुम्हीं सर्वदा गोलोकधाम में विहार करती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

ज्ञानदा गुणदा देवि गुणाध्यक्षा गुणाकरी।
गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे मातः ! एकमात्र तुम्हीं ज्ञान की देनेवाली और एकमात्र तुम्हीं गुण की दायिनी हो, तुम्हीं गुणों की अध्यक्ष और तुम्हीं गुणों की आधार हो। तुम्हीं गन्धपुष्प द्वारा निरन्तर शोभित रहती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको नमस्कार करता हूँ।

घनश्यामप्रिया देवि घोरसंसारतारिणी।
घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे कमले ! तुम्हीं घनश्याम हरि की प्रियतमा अर्थात् प्यारी हो, एकमात्र तुम्हीं घोरतर संसारसागर से रक्षा कर सकती हो, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी भयंकर पापों से उद्धार करने में समर्थ नहीं है, अतएव मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

चतुर्वेदमयी चिन्त्या चित्तचैतन्यदायिनी।
चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं चतुर्वेदमयी और एकमात्र तुम्हीं योगि गणों की चिन्तनीय हो, तुम्हारे प्रसाद से ही चित्त में चैतन्यता का संचार होता है, जगत्पति चतुरानन (ब्रह्मा) भी तुम्हारी पूजा करते हैं, अतएव हे जननि ! मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटिसमप्रभा।
चन्द्रार्कनखरज्योतिर्लक्ष्मि देवि नमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं चैतन्यरूपिणी हो, तुम्हारे देह की कांति करोड़ चन्द्रमा के

समान रमणीय है, तुम्हारे चरणों की दीप्ति चन्द्रसूर्य की कांति से भी अधिक देदीप्यमान है, मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।

चपला चतुराध्यक्षी चरमे गतिदायिनी।
चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे देवि लक्ष्मि ! तुम सदा एक स्थान में वास नहीं करतीं, इसीलिये तुम्हारा 'चपला' नाम हुआ है, अंतकाल में एकमात्र तुम्हीं गति देती हो, तुम्हीं चराचर जीवों की अधीश्वरी हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्य्यनाशिनी।
छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे जननि ! तुम्हीं शोभायमान छत्र और चामर से परम शोभा पाती हो, छलचातुरी सब ही तुम्हारे प्रभाव से नाश को प्राप्त होती है, तुम्हीं छिद्र अर्थात् पापसमूह नष्ट करती हो; अतएव मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधाररूपिणीं।
जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे जननि ! तुम्हीं जगत् की जननी हो, तुम्हीं जगत् का एक मात्र आधार तथा जयदात्री हो और तुम्हीं जानकी रूप से पृथ्वी में अवतीर्ण हुई हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको नमस्कार करता हूँ।

जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी।
जीवात्मनां च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे जननि ! तुम्हीं जानकीपति रघुवर की सहधर्मिणी हो, तुम्हीं जनक नरपति को आनन्द की देनेवाली हो, और तुम्हीं सर्वजीवों की आत्मस्वरूप हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

झिञ्जीरवस्वना देवि झंझावातनिवारिणी।
झर्झरप्रियवाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे देवि ! तुम्हारे कण्ठ का स्वर झिञ्जीरव की समान मधुर है, तुम्हारे अनुग्रह से झंझा वर्षायुक्त वायु के हाथ से सहज में ही रक्षा लाभ होता है, तुम गोवर्द्धनादि

पर्वतों में झर्झरवाद्य में अत्यन्त अनुरक्त हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

अर्थप्रदायिनी त्वं हि त्वञ्च ठकाररूपिणी।
ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी ॥
डमरूप्रणया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! एकमात्र तुम्हीं अर्थ प्रदान करती हो, तुम्हीं ठकार रूपिणी (चन्द्रमण्डलस्वरूपिणी) हो, डमरू और डम्फ वाद्य में तुमको अत्यन्त प्रसन्नता होती है, और ढक्कादि वाद्य (एक बाजा) तुम्हारा प्रीतिकर है, मैं मस्तक झुकाकर तुम्हारे चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ।

तप्तकांचनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणी।
त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि लक्ष्मि ! तुम्हारा वर्ण तपे हुए काञ्चन की समान उज्ज्वल हैं, तुम त्रैलोक्यवासी जीवों की रक्षा करती हो, तुम्हीं त्रिलोक को उत्पन्न करनेवाली हो, मैं मस्तक झुकाकर, तुमको प्रणाम करता हूँ।

त्रैलोक्यसुन्दरी त्वं हि तापत्रयनिवारिणी।
त्रिगुणधारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम त्रिभुवन में रूपवती हो, तुम्हीं तीनों तापों का विनाश करती हो, तुम्हीं सत्त्व, रज और तमोगुण धारिणी हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

त्रैलोक्यमंगला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया।
त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं तीनों लोकों का मंगल विधान करती हो, तुम्हारे चरणकमलों में सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान रहते हैं, तुम भूत; भविष्य और वर्तमान तीनों कालों को जानती हो, तुम्हीं जीवों की रक्षा करनेवाली हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

दुर्गतिनाशिनी त्वं हि दारिद्र्यापद्विनाशिनी।
द्वारकावासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननी ! तुम आपदा, दुर्गति और दरिद्र मनुष्य की दरिद्रता दूर करती हो, तुम्हीं द्वारकापुरी में अवस्थिति करके विराजमान रहती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

देवतानां दुराराध्या दुःखशोकविनाशिनी ।
दिव्याभरणभूषांगी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! देवता भी बहुत आराधना अथवा बहुत कष्ट से तुमको प्राप्त होते हैं, तुम प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण शोक दुःख नष्टकर देती हो, तुम दिव्य भूषणों से परम शोभायमान हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

दामोदरप्रिया त्वं हि दिव्ययोगप्रदर्शिनी ।
दयामयी दयाध्यक्षी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम दामोदर की प्रिया हो, तुम्हारे प्रसाद से ही दिव्य योग प्राप्त किया जाता है, तुम्हीं दयामयी और दया की अधिष्ठात्री हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

ध्यानातीता धराध्यक्षा धनधान्यप्रदायिनी ।
धर्मदा धैर्यदा मातःशिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे मातः ! तुम ध्यान के भी अतीत हो, तुम्हीं पृथ्वी की अध्यक्ष और तुम्हीं भक्तों को धन धान्य इत्यादि प्रदान करती हो, तुम्हीं धर्म और धैर्य देती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनगेहिनी ।
नवयौवनचार्वङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम नवगोरोचन की समान गौरवर्ण हो, तुम्ही नन्दनन्दन हरि की प्रियतमा गेहिनी हो, तुम्हीं नवयौवन के कारण परम कान्तिमती हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

नानारत्नादिभूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी ।
नितम्बिनी नलिनाक्षी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि ! तुम अनेक प्रकार के रत्नादि भूषणों से विभूषित होकर परम

शोभा पाती हो, तुम्ही प्रसन्न होनेपर नानारत्न प्रदान करती हो, तुम्हीं विशाल नितम्बवती और तुम्हारे नेत्र कमल के पत्ते की समान चौड़े हैं, तुमको शिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ ।

निधुवनप्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा ।
निर्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ।।

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम विकाररहित और नित्यरूपिणी हो, निधुवन में विहार करने से तुमको प्रेमानन्द की प्राप्ति होती है, तुम्ही निराश्रय जनको गति देती हो, तुमको नमस्कार है ।

पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्मसनातनी ।
परा शक्तिः परा भक्तिर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ।।

हे देवि कमले ! तुम पूर्णानन्दमयी और तुम्हीं पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी हो, तुम्हीं परमशक्ति और तुम्हीं परमभक्तिस्वरूपा हो, तुमको नमस्कार है ।

पूर्णचन्द्रमुखी त्वं हि परानन्दप्रदायिनी ।
परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

हे देवि ! तुम्हारा वंदन पूर्णचन्द्रमा की समान शोभायमान है, तुम्हीं परमानन्द और परमार्थ दान करती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

पुण्डरीकाक्षिणी त्वं हि पुण्डरीकाक्षगेहिनी ।
पद्मरागधरा त्वं हि शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

हे जननि ! तुम्हारे नेत्र कमल की समान विस्तृत है, तुम्हीं पुण्डरीकाक्ष हरि की गेहिनी हो, तुम्हीं पद्मरागमणि धारण करके परम शोभा पाती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

पद्मा पद्मासना त्वं हि पद्ममालाविधारिणी ।
प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

हे मातः ! तुम पद्मासनपर विराजमान रहती हो, इसी लिये तुम्हारा 'पद्मा' नाम हुआ है, तुम्हारे गले में मनोहर पद्ममाला पड़ी रहती है, तुम्हीं ओंकाररूपिणी हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

फुल्लेन्दुवदना त्वं हि फणिवेणिविमोहिनी ।
फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे जननि ! तुम्हारा मुख निर्मल चन्द्रमा की किरण के समान निर्मल है, तुम्हारे शिर की वेणी ने फणि की समान लम्बायमान होकर परम शोभा धारण की हैं । तुम्हीं क्षीरोंद सागर में शेष शय्यापर शयन करनेवाले देवदेव हरि की गृहिणी हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

विश्वकर्त्री विश्वभर्त्री विश्वत्रात्री विश्वेश्वरी ।
विश्वाराध्या विश्वबाह्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम्हीं संसार की, करनेवाली तुम्हीं विश्व का पालन करनेवाली और तुम्हीं सम्पूर्ण विश्व की ईश्वरी हो, तुम्हीं विश्ववासी जीवों की पूजनीया और तुम्हीं विश्व में सर्वत्र दीप्तिमान् रहती हो, तो भी तुम इसमें लिप्त नहीं हो, तुम्हीं विश्व के बाहर स्थित हो, तुमको नमस्कार है ।

विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमंत्रस्वरूपिणी ।
वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

हे देवि ! तुम्हीं विष्णु की प्रिया और तुम्हीं विष्णु की एक मात्र शक्ति हो, तुम्हीं बीजमंत्र स्वरूपिणी, तुम्हीं वर देनेवाली और तुम्हीं वाक्‌सिद्धियुक्त हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।

वेणुवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी ।
विद्युद्गौरी महादेवि लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे महादेवि ! हे लक्ष्मीदेवि ! तुम विद्युत की समान गौरवर्ण हो, वेणुवाद्य और दूसरे शब्द से तुमको परम प्रीति का संचार होता है, तुमको नमस्कार है ।

भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि भक्तानुग्रहकारिणी ।
भवार्णवत्राणकर्त्री लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि ! तुम भुक्ति और मुक्ति प्रदान करती हो, तुम भक्तों के प्रति अनुग्रह दिखाती हो, और तुम्हीं आश्रित जनों का भवसागर से उद्धार करती हो । तुमको नमस्कार है ।

भक्तप्रिया भागीरथी भक्तमंगलदायिनी।
भयदा भयदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे जननि ! तुम भक्तों के प्रति आन्तरिक स्नेह प्रकाशित करती हो, तुम्हीं भागीरथी गंगास्वरूपिणी और भक्तों को कल्याणदायिनी हो, तुम्हीं दुष्टों को भय देती और शरणागतों को अभय देती हो ! तुमको नमस्कार है ।

मनोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी।
मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम मनोरथ पूर्ण करती और महामोह का विनाश करती हो, तुम्हीं मोक्ष और सन्मान देती हो, तुमको नमस्कार है ।

महाधन्या महामान्या माधवस्यात्ममोहिनी।
मुखराप्राणहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम्हीं एकमात्र धन्या और माननीय हो, क्या धन्यवाद में क्या सन्मान में तुम्हारी अपेक्षा श्रेष्ठ दूसरा कोई नहीं है, तुमने ही माधव का मन मोहित किया है, जो स्त्रियें बहुत बोलनेवाली है, उनका तुम विनाश करती हो, तुमको नमस्कार है ।

यौवनपूर्णसौन्दर्या योगमाया तथेश्वरी।
युग्मश्रीफलवृक्षा चं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि ! तुमने पूर्ण यौवन के कारण परम कान्ति धारण की है, तुम्हीं मूर्तिमान योगमाया और तुम्हीं योग की ईश्वरी हो, तुम्हारे हृदय में दो नारियल के समान उंचे दो कुच शोभा पाते हैं, तुमको नमस्कार है ।

युग्माङ्गदविभूषाढ्या युवतीनां शिरोमणिः।
यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे देवि ! तुम्हारे दोनों बाहुओं में दो अंगद बाजूबन्द विद्यमान रहने से परम शोभा हुई है, तुम्हीं यशोदानन्द की महिषी हो, तुमको नमस्कार है ।

रूपयौवनसम्पन्ना रत्नालंकारधारिणी।
राकेन्दुकोटिसौन्दर्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम परम रूपवती और यौवनसम्पन्न हो, तुम्ही रत्नालंकार

से विभूषित होकर परम शोभा धारण करती हो, तुम्हारी कान्ति करोड पूर्ण चन्द्रमा से भी उज्ज्वल है, तुम को नमस्कार है।

रमा रामा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा।
राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तु ते॥

हे लक्ष्मी देवि ! तुम्हारा ही 'रमा' और 'रामा' नाम है, तुम्हीं राम की पत्नी जानकी, तुम्हीं राजराजेश्वरी और तुम्हीं प्रसन्न होनेपर राज्यप्रदान करती हो और तुम्हीं कुपित होकर राज्य विनाश करती हो, तुमको नमस्कार है।

लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी।
ललना प्रीतिदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते॥

हे जननि ! तुम्ही लीला में प्रीति करती हो और लावण्य सम्पन्न हो, तुम्ही लोकोंपर अनुग्रह करती हो, स्त्रीजन तुम्हारे द्वारा परम प्रीति लाभ करती हैं, तुमको नमस्कार है।

विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वन्तु वन्दिता।
विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते॥

हे देवि ! तुम्हीं विद्या, तुम्हीं विद्याधरी, तुम्हीं धनदायक और तुम्हीं एकमात्र वंदनीय हो, तुम्हीं विन्ध्यवासिनी रूप से विन्ध्याचल में वास करती हो, तुमको नमस्कार है।

शुभकाञ्चनगौराङ्गी शङ्खकंकणधारिणी।
शुभदा शीलसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते॥

हे देवि ! तुम निर्मल काञ्चन की समान गौर वर्ण हो, तुम्हारे हाथ में शंख और कंकण विराजमान रहता है, तुम कल्याणदायिनी और संचरितसम्पन्न हो, तुमको नमस्कार है।

षट्चक्रभेदिनी त्वं हि षडैश्वर्यप्रदायिनी।
षोडशी वयसा त्वन्तु लक्ष्मि देविं नमोऽस्तु ते॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तुम्ही षड्चक्रभेदिनी हो और तुम्हीं छै प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करती हो, तुम्हीं सोलह वर्ष की अवस्थावाली नवयुवती हो, तुमको नमस्कार है।

सदानन्दमयी त्वं हि सर्वसम्पत्तिदायिनी।
संसारतारिणी देवि शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे देवि! तुम सर्वदा आनन्दमयी हो, तुम्हीं सर्वसम्पत्ति देने में समर्थ हो और तुम्हीं इस घोर संसार से रक्षा कर सकती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

सुकेशी सुखदा देवि सुन्दरी सुमनोरमा।
सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे देवि! तुम्हारे केशकलाप मनोहर हैं, तुम परमसुन्दरी और मनमोहिनी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी और सिद्धिप्रदायिनी हो, तुम्हारे अनुग्रह से ही सुख प्राप्त होता है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

सर्वसंकटहन्त्री त्व सत्यसत्त्वगुणान्विता।
सीतापतिप्रिया हेवि शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे देवि! तुम सम्पूर्ण संकट दूर करती हो, तुम सत्यपरायण और सत्त्वगुणशालिनी हो, तुमने ही सीतापति रामचन्द्र की महिषीरूप से अयोध्यापुरी को पवित्र किया है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

हेमांगिनी हास्यमुखी हरिचित्तंविमोहिनी।
हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे देवि! तुम तप्तकांचन की समान गौरवर्णा हो, तुमने हरि का मन मोहित किया है, हरि के चरणों में ही तुम्हारा मन अत्यन्त आसक्त रहता है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

क्षेमंकरी क्षमादात्री क्षौमवासोविधारिणी।
क्षीणमध्या च क्षेत्राङ्गी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते॥

हे लक्ष्मीदेवि! तुम कल्याण करनेवाली, मोक्षदात्री, क्षौम वस्त्र धारिणी हो, तुम्हारी कमर ने क्षीण होने से परम शोभा धारण की है, तुम्हारे अंग में संपूर्ण तीर्थ और क्षेत्र विद्यमान रहते हैं, तुमको नमस्कार है॥

श्री शंकर उवाच ।

अकारादि क्षकारान्तं लक्ष्मीदेव्याः स्तवं शुभम् ।
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥

श्री महादेवजी बोले हे पार्वति ! तुम्हारे पूंछने के अनुसार लक्ष्मी माहात्म्य और अकारादि क्षकारान्त वर्णमय लक्ष्मीस्तोत्र वर्णन किया, इस कल्याणकारक स्तोत्र का प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में यत्नसहित पाठ करना चाहिये ।

पूजनीया प्रयत्नेन कमला करुणामयी ।
वाञ्छाकल्पलता साक्षाद्भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी ॥

जो अभिलषित देने में कल्पलतिकास्वरूप हैं, जो भुक्ति और मुक्ति प्रदान करती हैं, उन्हीं करुणामयी कमला की यत्नसहित पूजा करै ।

इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु श्रृणुयात् श्रावयेदपि ।
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥

जो पुरुष यह लक्ष्मीस्तोत्र पढ़ते, अथवा सुनते हैं, वा दूसरे मनुष्य को सुनाते हैं, हे पार्वति ! उनके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं, इसमें सन्देह नहीं ।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः
तञ्च दृष्ट्वा भवेन्मूको वादी सत्यं न संशयः ।

हे गौरि ! जो पुरुष भक्तिसहित इस पवित्र स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनके दर्शनमात्र से ही वादी मूकता को प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं ।

श्रृणुयाच्छ्रावयेद्यस्तु पठेद्वा पाठयेदपि ।
राजानो वशमायान्ति तं दृष्ट्वा गिरिनन्दिनि ॥

हे गिरिनंदिनि ! जो इस स्तोत्र को सुनते हैं, दूसरे को सुनाते हैं, अध्ययन करते हैं, वा दूसरे को पढ़ाते हैं, उनके दर्शनमात्रसे ही राजा लोग वशीभूत होते हैं ।

तं दृष्ट्वा दुष्टसङ्घाश्च पलायन्ते दिशो दश ।
भूतप्रेतग्रहा यक्षा राक्षसाः पन्नगादयः ॥
विद्रवन्ति भयार्ता वै स्तोत्रस्यापि च कीर्त्तनात् ॥

जो पुरुष इस लक्ष्मीस्तोत्र का कीर्तन करते हैं, उनके दर्शनमात्र से ही दुष्टगण दशों दिशा में भाग जाते हैं, और क्या भूत, क्या प्रेत, क्या ग्रह, क्या यक्ष, क्या राक्षस, क्या सर्प, इत्यादि सभी डरकर चले जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं ।

सुराश्च ह्यसुराश्चैव गन्धर्वकिन्नरादयः ।
प्रणमन्ति सदा भक्त्या तं दृष्ट्वा पाठकं मुदा ॥

जो पुरुष इस स्तोत्र का पाठ करते हैं, क्या देवता, क्या दानव, क्या गन्धर्व, क्या किन्नर, सम्पूर्ण उनको दर्शनमात्र से ही आनन्द और भक्ति सहित प्रणाम करते हैं ।

धनार्थी लभते चार्थ पुत्रार्थी च सुतं लभेत् ।
राज्यार्थी लभते राज्यं स्तवराजस्य कीर्त्तनात् ॥

इस अनुत्तम स्तव का कीर्त्तन करने से धनार्थी धन, पुत्रार्थी पुत्र और राज्यार्थी राज्य को प्राप्त होता है ।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः ।
महापापोपपापञ्च तरन्ति स्तवकीर्त्तनात् ॥

क्या ब्रम्ह हत्या, क्या सुरापान, क्या चोरी, क्या गुरुस्त्रीगमन, क्या महापातक, क्या उपपातक, इस स्तव के कीर्त्तन करने पर इसके प्रभाव से सम्पूर्ण पापों मे छुटकारा होता है ।

गद्यपद्यमयी वाणी मुखात्तस्य प्रजायते ।
अष्टासिद्धिमवाप्नोति लक्ष्मीस्तोत्रस्य कीर्तनात् ॥

इस लक्ष्मी स्तोत्र के कीर्त्तन करने से अपने आपही मुख से गद्य पद्यमयी वाणी प्रदुर्भूत होती है, और कीर्त्तन करनेवाला आठ प्रकार की सिद्धि लाभ करता है ।

वन्ध्या चापि लभेत् पुत्रं गर्भिणी प्रसवेत्सुतम् ।
पठनात्स्मरणात् सत्यं वच्मि ते गिरिनन्दिनि ॥

हे पर्वतनन्दिनि ! तुमसे सत्य ही कहता हूँ, इस स्तोत्र के पढ़ने, वा स्मरण करने से, वंध्या (बांझ) स्त्री भी पुत्र प्राप्त करती है, और गर्भवती स्त्री को श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त होता है ।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु ।
भक्त्या संपूजयेद्यस्तु गन्धपुष्पाक्षतैस्तथा ॥
धारयेद्दक्षिणे बाहौ पुरुषः सिद्धिकांक्षया ।
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वसौख्यमयी भवेत् ॥

जो पुरुष लक्ष्मी की कामना करते हैं, वे भोजपत्रपर रोचना और कुंकुमद्वारा इस स्तव को लिखकर गन्धपुष्पादि से भक्ति पूर्वक अर्चना करके दाहिने बाहु में धारण करें । स्त्रियें भी वाम भुजा में धारण करने से सर्वसुख में सुखी होती हैं ।

विषं निर्विषतां याति अग्निर्याति च शीतताम् ।
शत्रवो मित्रतां यान्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥

इस स्तवराज के प्रसाद से विष में निर्विषता, अग्नि में शीतलता और शत्रुओं में मित्रता होती है ।

बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः ।
वैकुण्ठे च वसेन्नित्यं सत्यं वच्मि सुरेश्वरि ॥

हे सुरेश्वरि ! इसका माहात्म्य और अधिक क्या वर्णन करूं ? इसके प्रसाद से अन्त समय नित्य वैकुण्ठ धाम में वास होता है, इसमें सन्देह नहीं ।

लक्ष्मीकवच ।

लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः ।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वांगे श्रीस्वरूपिणी ॥

लक्ष्मी मेरे अग्र भाग की रक्षा करें, कमला मेरी पीठ की रक्षा करें, नारायणी मेरे मस्तक की, और श्रीस्वरूपिणी देवी मेरे सर्वांग की रक्षा करें ।

रामपत्नी प्रत्यंगे तु सदावतु रमेश्वरी ।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥
जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा ।
हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी ॥
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी ॥
जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी ॥

सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी।
भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद्विमोचयेत्॥

जो रामपत्नी और रमेश्वरी हैं, वह विशालनेत्र योगमाया लक्ष्मी मेरे सम्पूर्ण अंगो की रक्षा करें, वही कौमारी, वही चक्र धारिणी, वही जय देनेवाली, वही धनदाता, वही पाश अक्षमालिनी, वही कल्याणी, वही हरि की प्रिया, वही हरिरामा, वही जय करनेवाली, वहीं महोदरी, वही कृष्ण की परायणा, वही श्री कृष्णमनोमोहिनी, वही महारौद्री, वही सिद्धि देनेवाली, वही शुभ करनेवाली, वही सुख देनेवाली, वही मोक्ष देनेवाली, और वही चित्रकूटनिवासिनी, इत्यादि नामों से कही हैं। वही अनपायिनी लक्ष्मी देवी मेरा भय दूर करै, सर्वदा रक्षा करै और मेरा भवपाश छेदन करै।

कवचन्तु महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यम्वा मुच्यते सर्वसंकटात्॥

जो भक्तियुक्त होकर प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में वा एकसन्ध्या में, इस परम पवित्र लक्ष्मीकवच का पाठ करता हैं वह सपूर्ण संकट से छूट जाता है।

पठनं कवचस्यास्य पुत्रधनविवर्द्धनम्।
भीतिविनाशनञ्चैव त्रिषु लोकेषु कीर्त्तितम्॥

इस कवच के पाठ करने से पुत्र और धनादि की वृद्धि होती है, और भय दूर होता है, इसका माहात्म्य त्रिभुवन में कीर्त्तित है।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु।
धारणाद्गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति॥

भोजपत्रपर रोचना और कुंकुम द्वारा इसको लिखकर कण्ठ में धारण करने से सर्वकामना सिद्ध होती हैं।

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम्।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः॥

इस कवच के प्रसाद से अपुत्र को पुत्र लाभ होता है, धनार्थी को धन, और मोक्षार्थी को मोक्ष, प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं।

गर्भिणीं लभते पुत्रं बन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
धारयेद्यदि कण्ठे च अथवा वामबाहुके ॥

यदि स्त्रियें कण्ठ अथवा बाम बाहु में इस कवच को यथानियम धारण करें, तो गर्भवती उत्तम पुत्र को प्राप्त होती हैं और वन्ध्या (बांझ) स्त्री भी गर्भवती होती है ।

यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद्भवेत् ।
मृत्युव्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले ॥

जो कोई नित्य भक्तिसहित इस कवच का पाठ करतें हैं, वह विष्णु की समानता को प्राप्त होते हैं, पृथ्वी में मृत्यु, अथवा व्याधिमय उनको आक्रमण नहीं कर सकता ।

पठेद्वा पाठयेद्वापि श्रृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
सर्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ॥

जो पुरुष इस कवच को पढ़ते हैं, वा पढ़ाते हैं, अथवा स्वयं सुनते हैं, या दूसरे को सुनाते हैं, वह सम्पूर्ण पापों से छूट कर परमगति को प्राप्त होते हैं ।

विपदि संकटे घोरे तथा च गहने वने ।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।
पठनाद्धारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ॥

क्या विपद, क्या घोर संकट, क्या गहन वन, क्या राज द्वार, क्या नौका मार्ग, क्या रणमध्य, कोई, स्थान क्यों न हो, इस कवच के पाठ अथवा धारण करने से सर्वत्र जय प्राप्त हो सकती है ।

अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं श्रृणुयादपि ।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम् ॥

वांझ स्त्री अथवा जिसके पुत्र उत्पन्न नहीं होता हो, वह यदि तीन पक्ष पर्यन्त यह कवच सुने, तो दीर्घायु महायशस्वी सुपुत्र प्राप्त कर सकती है, इसमें सन्देह नहीं है ।

श्रृणुयाद्यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्रतः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद्विमुच्यते ॥

जो पुरुष विशुद्ध मन से दो महीने तक ब्राम्हण के मुख से यह कवच सुनता है, उसकी संपूर्ण कामना सिद्ध होती हैं, और वह सर्व प्रकार के भवबन्धन से छूट जाता है ।

मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं श्रृणुयाद्यदि ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः ॥

जिस स्त्री के पुत्र उत्पन्न होकर जीवित नहीं रहते हों, यदि वह तीन महीने पर्यन्त इस कवच को भक्तिसहित सुने, तो जीववत्सा होती है और रोगी पुरुष अध्ययन करै, तो एक महीने में ही रोग से छूट जाता है ।

लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताडपत्रके ।
स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥

जो पुरुष भोजपत्रपर या ताड़पत्रपर इस कवच को लिखकर घर में स्थापन्न करै, उसको अग्नि वा चोर इत्यादि का भय नहीं रहता ।

श्रृणुयाद्धारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्ना सर्व देवताः ॥

जो पुरुष प्रतिदिन यह कवच सुनता है, पढ़ता है, अथवा दूसरे को पढ़ाता है और जो कोई इसको धारण करता है, उसपर, देवतागण सदा सन्तुष्ट रहते हैं ।

बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी ।
आद्या शक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानु ग्रहकारिणी ।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥

अधिक और क्या कहूं ? जो पुरुष इस कवच का पाठ करते, अथवा धारण करते हैं, सर्व जीवेश्वरी भक्तोंपर अनुग्रह करनेवाली आद्या शक्ति लक्ष्मी देवी अचल होकर उनमें वास करती हैं, इसमें सन्देह नहीं ।

इति श्रीकमला स्तोत्र सम्पूर्णः ।